www.shabdawanisamachar.page
राष्ट्रीय हिन्दी समाचार पत्र
RNI NO. DELHI/2003/09049

दैनिक शब्दवाणी समाचार

नई सोच, नई उम्मीद, बेहतर भविष्य, बेहतर भारत

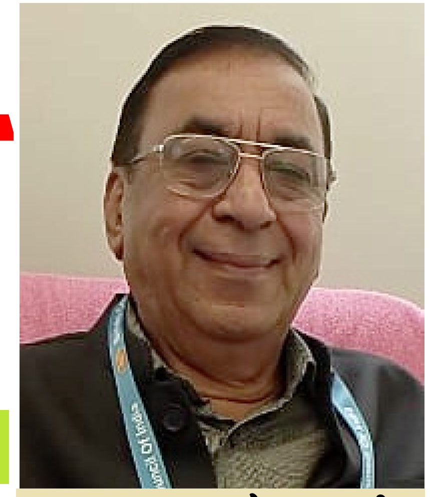

सलाहकार संपादक : अशोक लालवानी

वर्षः 24 अंकः 262 नई दिल्ली, शुक्रवार, 17 जुलाई, 2026 पृष्ठः संख्या 12 मूल्यः 10 रुपये

Dedicated to Sindhi Council of India

मूसलाधार बारिश के बीच आस्था के साथ निकली श्रीजगन्नाथ रथयात्रा

भुवनेश्वर (हि.स.)। अटूट श्रद्धा और भक्ति के अद्भुत दृश्य के बीच विश्व प्रसिद्ध पुरी रथ यात्रा 2026 का आयोजन भव्य रूप से हुआ। ओडिशा सहित देश-विदेश से आए लाखों श्रद्धालुओं ने भारी बारिश के बावजूद इस दिव्य उत्सव में भाग लिया। 15 जुलाई की शाम से हो रही लगातार मूसलाधार बारिश भी भक्तों के उत्साह को कम नहीं कर सकी।

रथ यात्रा से पूर्व और आयोजन के दौरान पुरी एवं तटीय ओडिशा में लगातार बारिश होती रही, जिससे कई स्थानों पर जलभराव की स्थिति उत्पन्न हो गई। इसके बावजूद श्रद्धालुओं की आस्था अडिग रही और वे बड़ी संख्या में बड़दांड (ग्रैंड रोड) पर एकत्रित हुए।

सुबह से ही श्रद्धालु भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र और देवी सुभद्रा के दर्शन के लिए उमड़ पड़े। हरिबोल और जय जगन्नाथ के गगनभेदी जयघोष ने बारिश की आवाज को भी दबा दिया।

इस पावन अवसर पर श्रद्धालुओं ने अपनी आस्था को सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से भी प्रकट किया। बारिश से भीगी सड़कों पर विभिन्न समूहों ने पारंपरिक और शास्त्रीय कला प्रस्तुत की। विशेष रूप से ओडिसी नृत्यांगनाओं ने जलभराव के बीच प्रस्तुति देकर भगवान का स्वागत किया, जो भक्ति और समर्पण का अनूठा उदाहरण बना।

जगन्नाथ मंदिर में रथ यात्रा के सभी अनुष्ठान सदियों पुरानी परंपराओं के अनुसार संपन्न हुए। सुबह की शुरूआत भोग मंडप में धूप अनुष्ठान से हुई, जिसके बाद देवताओं और रथों की तैयारी से जुड़े विभिन्न धार्मिक कार्य किए गए।

पहंडी बीजे अनुष्ठान के तहत भगवानों को गर्भगृह से बाहर लाकर पारंपरिक वाद्ययंत्रों घंटा, काहली और तेलिंगी बाजा की ध्वनि के बीच भव्य शोभायात्रा में रथों पर विराजमान कराया गया। भगवान जगन्नाथ का नंदीघोष, भगवान बलभद्र का तालध्वज और देवी सुभद्रा का दर्पदलन रथ तैयार किया गया। जगद्गुरु शंकराचार्य निश्चलानंद सरस्वती ने रथों पर विराजमान चतुधार्मूर्ति के दर्शन कर इस आयोजन की आध्यात्मिक गरिमा को और बढ़ाया। इसके बाद पुरी के गजपति महाराजा दिव्यसिंह देव ने छेरा पहंरा अनुष्ठान संपन्न किया। स्वच्छ श्वेत वस्त्र धारण कर और रजत जड़ित पालकी में सवार होकर पहुंचे गजपति महाराजा ने स्वर्ण झाड़ू से रथों की सफाई की। इस दौरान वैदिक मंत्रोच्चार, पुष्प अर्पण और सुगंधित जल का छिड़काव किया गया।

छेरा पहंरा अनुष्ठान भगवान के समक्ष सभी के समान होने का संदेश देता है। यह दशार्ता है कि राजा और आम व्यक्ति में कोई भेद नहीं है। यह अनुष्ठान गुंडिचा यात्रा और बहुदा यात्रा के दौरान किया जाता है, जो जगन्नाथ संस्कृति की समरसता और समानता को दशार्ता है। अनुष्ठानों के पूर्ण होने के बाद रथों का खींचना प्रारंभ हुआ। जय जगन्नाथ और हरिबोल के जयघोष के बीच सबसे पहले भगवान बलभद्र का तालध्वज रथ खींचा गया। इसके बाद देवी सुभद्रा का दर्पदलन रथ और अंत में भगवान जगन्नाथ का नंदीघोष रथ श्रद्धा और भक्ति के साथ खींचा गया। अधिक समय होने के कारण तीनों रथ गंतव्य मौसी माँ मंदिर तक पहुंच नहीं पायी। अब शुक्रवार सुबह रथों का खिंचा जाएगा। इस विशाल आयोजन के सफल संचालन के लिए व्यापक सुरक्षा व्यवस्था की गई थी। करीब 13,000 सुरक्षाकर्मियों को तैनात किया गया, जिनमें राज्य पुलिस, केंद्रीय बल, भारतीय नौसेना और तटरक्षक बल शामिल थे। भीड़ नियंत्रण, यातायात प्रबंधन और आपातकालीन सेवाओं पर विशेष ध्यान दिया गया।

एनसीआर में पुराने ट्रकों-बसों की होगी छुट्टी, 9,585 करोड़ की परिवर्तन योजना लागू

नई दिल्ली, 16 जुलाई (हि.स.)। केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में वायु प्रदूषण कम करने के उद्देश्य से पुराने और अधिक प्रदूषण फैलाने वाले ट्रकों एवं बसों को चरणबद्ध तरीके से हटाकर उनकी जगह भारत स्टेज-6 (बीएस-6) मानक अथवा विद्युत चालित वाहनों को बढ़ावा देने के लिए परिवर्तन (परिवहन वायु प्रदूषण एवं नेटवर्क उत्सर्जन में कमी हेतु वाहन परिसंपत्तियों के त्वरित नवीनीकरण और प्रोत्साहन कार्यक्रम) योजना के दिशा-निदेर्शों को मंजूरी दे दी है।

केंद्रीय आवास एवं शहरी विकास मंत्रालय ने गुरुवार को बताया कि 9,585 करोड़ रुपये की कुल लागत वाली इस योजना को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 03 जून को मंजूरी दी थी। इसमें केंद्र सरकार की ओर से 5,041 करोड़ रुपये की बजटीय सहायता प्रदान की जाएगी। दिशा-निदेर्शों के अनुमोदन के बाद योजना को लागू करने का मार्ग प्रशस्त हो गया है।

योजना का क्रियान्वयन सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय करेगा, जबकि इसके लिए वित्तीय सहायता राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र योजना बोर्ड (एनसीआरपीबी) के माध्यम से उपलब्ध कराई जाएगी। इससे दिल्ली-एनसीआर में वाहनों से होने वाले प्रदूषण में उल्लेखनीय कमी आएगी और क्षेत्र की वायु गुणवत्ता में सुधार होगा।

योजना के तहत लाभार्थियों को मोटर वाहन कर में रियायत, पंजीकरण शुल्क में छूट, वाहन ऋण पर पांच प्रतिशत ब्याज अनुदान, पात्र नए वाहनों पर मूल उपकरण निमार्ता (ओईएम) की ओर से न्यूनतम आठ प्रतिशत छूट, डीजल और सीएनजी आधारित प्रतिस्थापन वाहनों के लिए मासिक ईंधन वाउचर सहायता तथा विद्युत वाहनों के लिए एकमुश्त वित्तीय सहायता जैसी सुविधाएं दी जाएंगी। इसके अलावा जमा प्रमाणपत्र (सर्टिफिकेट ऑफ डिपॉजिट) के व्यापार को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और दिल्ली सरकार ने नए खरीदे जाने वाले पात्र वाहनों पर दस वर्षों के लिए मोटर वाहन कर में रियायत तथा पंजीकरण शुल्क में छूट संबंधी अधिसूचनाएं जारी कर दी हैं।

मंत्रालय ने बताया कि वाणिज्यिक वाहन बाजार में 95 प्रतिशत से अधिक हिस्सेदारी रखने वाली 11 वाहन निमार्ता कंपनियों ने योजना के तहत पात्र लाभार्थियों को विशेष छूट देने के लिए सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

सार संक्षेप

डीजल व एटीएफ के निर्यात पर बढ़ाया विंडफॉल टैक्स

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने डीजल और एविएशन टर्बाइन फ्यूल (एटीएफ) के निर्यात पर विंडफॉल टैक्स को बढ़ा दिया है। वहीं, पेट्रोल पर कटौती की है। इसकी वजह अमेरिका-ईरान युद्ध के कारण कच्चे तेल की कीमतों में तेजी आना था। नई दरें गुरुवार से लागू हो गई हैं। वित्त मंत्रालय की ओर से जारी नोटिफिकेशन में कहा गया कि डीजल पर निर्यात शुल्क बढ़कर 15.5 रुपए प्रति लीटर हो गया है, जो कि पहले 8.5 रुपए प्रति लीटर था। एटीएफ पर निर्यात शुल्क 7.5 रुपए प्रति लीटर से बढ़कर 14.5 रुपए प्रति लीटर हो गया।

बारामूला सांसद राशिद मानसून सत्र में हो सकेंगे शामिल

नई दिल्ली। दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट ने बारामूला के सांसद अब्दुल रशीद शेख उर्फ राशिद इंजीनियर को पुलिस हिरासत में रहते हुए 20 जुलाई से 13 अगस्त तक चलने वाले आगामी मानसून सत्र में शामिल होने की अनुमति दे दी है। पाटियाला हॉउस मे कोर्ट में यह सुनवाई इन-कैमरा हुई। अब्दुल रशीद शेख आतंकी फंडिंग मामले में न्यायिक हिरासत में हैं।

मणिपुर में भारी मात्रा में हथियार बरामद, नौ गिरफ्तार

इंफाल। मणिपुर में पुलिस और सुरक्षा बलों ने प्रदेश भर में कई अभियान चलाकर भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद करने के साथ ही आपराधिक, उग्रवाद से जुड़े और अन्य मामलों में नौ लोगों को गिरफ्तार किया है। वांगोई थाना क्षेत्र में हथियारों का एक बड़ा जखीरा बरामद किया है।

सुप्रीम कोर्ट ने 9वीं में त्रि-भाषा नीति लागू करने पर चिंता जताई

नई दिल्ली, 16 जुलाई (एजेंसियां)। उच्चतम न्यायालय ने गुरुवार को केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड पाठ्यक्रम के तहत नौवीं कक्षा के स्तर पर तीसरी भाषा को शामिल किए जाने पर चिंता व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि यह बोर्ड की परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्रों पर अतिरिक्त दबाव डालता है। न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना ने यह टिप्पणी तमिलनाडु सरकार की एक अपील पर सुनवाई के दौरान की। कोर्ट ने सुझाव दिया कि तीसरी भाषा की पढ़ाई कक्षा 6 से शुरू की जानी चाहिए।

- बोर्ड परीक्षा के एक साल पहले बच्चों में तनाव बढ़ेगा
- तीसरी भाषा को कक्षा 6 से शुरु करने का दिया सुझाव

यह अपील मद्रास उच्च न्यायालय के उस आदेश के खिलाफ थी, जिसमें राज्य को हर जिले में जवाहर नवोदय विद्यालय बनाने की सुविधा देने का निर्देश दिया गया था। गौरतलब है कि तमिलनाडु सरकार नवोदय विद्यालयों की स्थापना का विरोध कर रही है, और उसका तर्क है कि ये विद्यालय त्रि-भाषा नीति का पालन करते हैं। केंद्र सरकार की त्रिभाषा की नीति की वैधता हालांकि इस मामले में विचाराधीन नहीं थी।

अगले सप्ताह सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया है

उल्लेखनीय है कि केंद्रीय बोर्ड की इस त्रि-भाषा नीति को मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली एक न्यायपीठ के समक्ष अलग से चुनौती दी गई है। पीठ ने इस नीति के क्रियान्वयन पर रोक लगाने से इनकार कर दिया है और इस मामले को अगले सप्ताह सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया है।

रोहिंग्या-बांग्लादेशी घुसपैठ नेटवर्क पर बंगाल, दिल्ली, हरियाणा समेत कई राज्यों में ईडी का छापा

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने विदेशी फंडिंग और रोहिंग्या एवं बांग्लादेशी नागरिकों की घुसपैठ नेटवर्क से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में गुरुवार को दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पश्चिम बंगाल सहित कई राज्यों में छापेमारी की। इस दौरान पश्चिम बंगाल के कलिलकापुर स्थित हरौरा अल-जमीयतुल इस्लामिया दारुल उलूम से 40 लाख रुपये नकद और 180 ग्राम वजन के सोने के सिक्के बरामद किए गए। ईडी ने बताया कि परिसर के प्रभारी व्यक्ति से इस धन और सोने के बारे में कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला, जिसके बाद इसे धन शोधन निवारण अधिनियम-2002 की धारा 17 के तहत जब्त कर लिया गया। ईडी ने कहा कि छापेमारी के दौरान डिजिटल उपकरण, दस्तावेज और अन्य आपत्तिजनक सामग्री भी जब्त की गई है, जिनकी जांच की जा रही है। संबंधित व्यक्तियों के बयान दर्ज किए जा रहे हैं।

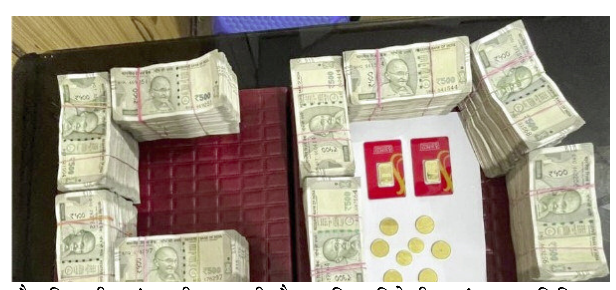

एजेंसी ने बताया कि यह कार्रवाई एक संगठित गिरोह पर की गई है, जो अंतरराष्ट्रीय सीमा के जरिए अवैध घुसपैठ कराने, फर्जी आधार, पैन कार्ड और पासपोर्ट बनवाने तथा विदेशी धन के सहारे घुसपैठियों को भारत में बसाने का काम करता था।

प्रारंभिक जांच में सामने आया था कि विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम (एफसीआरए) के तहत पंजीकृत कुछ सार्वजनिक धर्मार्थ ट्रस्ट इस नेटवर्क से जुड़े हुए थे। इन ट्रस्टों को ब्रिटेन स्थित संस्थाओं से धन प्राप्त होता था, जिसे बाद में छोटी-छोटी किश्तों में संदिग्ध व्यक्तियों को भेजा जाता था, ताकि उन्हें भारत में स्थायी रूप से बसने में मदद मिल सके। इस धन का उपयोग ई-रिक्शा खरीदने, रोजगार उपलब्ध कराने और नकद सहायता देने जैसे कार्यों में किया जाता था। ईडी के मुताबिक, पश्चिम बंगाल के सीमावर्ती जिलों में सक्रिय एक समूह अवैध घुसपैठ कराने में मदद करता था, जबकि दूसरा समूह इन घुसपैठियों के लिए फर्जी दस्तावेज तैयार करता था। दोनों समूहों के बीच समन्वय के जरिए अवैध प्रवासियों को देश के विभिन्न हिस्सों में भेजा जाता था। तलाशी अभियान के दौरान जिन प्रमुख स्थानों को कवर किया गया उनमें उत्तर 24 परगना स्थित कबीरबाग मिल्लत अकादमी, हरोआ अल-जमीयतुल इस्लामिया दारुल उलूम, तहिरिया वेलफेयर ट्रस्ट, दक्षिण दिल्ली के बाटला हाउस क्षेत्र में कुछ आवासीय परिसर, फरीदाबाद, देवबंद तथा पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिलों में स्थित कई व्यक्तियों और संस्थाओं के ठिकाने शामिल हैं।

भारत की पहली इंजीनियरिंग बायोलॉजी स्नातक डिग्री शुरू होगी, 2035 तक बायोइकोनॉमी महाशक्ति बनने का लक्ष्य

नई दिल्ली, 16 जुलाई (हि.स.)। केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. जितेंद्र सिंह ने भारत में पहली बार इंजीनियरिंग बायोलॉजी की स्नातक डिग्री शुरू करने की घोषणा की है। गुरुवार को नेशनल मीडिया सेंटर में आयोजित पत्रकार वार्ता में 2035 तक भारत को अग्रणी बायोइकोनॉमी शक्ति बनाने के रोडमैप के लॉन्च के दौरान ने डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि इंजीनियरिंग बायोलॉजी भविष्य में वही भूमिका निभाएगी जो डिजिटल क्रांति में कंप्यूटर साइंस ने निभाई थी। इस नए पाठ्यक्रम के जरिए ऐसे विशेषज्ञ तैयार किए जाएंगे जो इंजीनियरिंग, जीवविज्ञान, चिकित्सा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के संगम पर काम कर सकें। उन्होंने बताया कि कई आईआईटी मेडिकल संस्थानों के साथ मिलकर इस विषय में अंतरविषयक (इंटरडिसिप्लिनरी) कार्यक्रम शुरू करने के प्रस्ताव तैयार कर रहे हैं। मंत्री ने कहा कि सरकार का लक्ष्य भारत का स्वदेशी और आत्मनिर्भर जैव-प्रौद्योगिकी (बायोटेक) इकोसिस्टम तैयार करना है। उन्होंने बताया कि देश की बायोइकोनॉमी 2014 में लगभग 10 अरब डॉलर से बढ़कर आज करीब 95 अरब डॉलर तक पहुंच गई है और 2030 तक इसके 300 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। उन्होंने कहा कि भारत में 11,000 से अधिक बायोटेक स्टार्टअप कार्यरत हैं, जो इस क्षेत्र में तेजी से बढ़ती नवाचार क्षमता का प्रमाण हैं। डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा कि भविष्य में सिंथेटिक बायोलॉजी, एआई आधारित जैव अनुसंधान, बायो-मैन्युफैक्चरिंग, जीन थेरेपी और सीएआर-टी सेल थेरेपी जैसी तकनीकें स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा और उद्योग में बड़ा बदलाव लाएंगी। उन्होंने उद्योग, वैज्ञानिकों और स्टार्टअप्स के बीच मजबूत साझेदारी की आवश्यकता पर भी जोर दिया। कार्यक्रम में जैव प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव डॉ. राजेश एस. गोखले ने कहा कि भारत की बायोइकोनॉमी 15झ18 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ रही है। देश में लगभग 100 बायो-इन्क्यूबेटर और 10,000 से अधिक बायोटेक कंपनियां कार्यरत हैं। वहीं, नीति आयोग के सदस्य प्रो. गोबर्धन दास ने कहा कि सरकार का लक्ष्य 2035 तक भारत की बायोइकोनॉमी को लगभग 700 अरब डॉलर तक पहुंचाना है। इसके लिए 50,000 करोड़ रुपये के बायोइकोनॉमी ग्रोथ फंड का प्रस्ताव भी रखा गया है। सरकार का मानना है कि इन पहलों से भारत में उच्च कौशल वाले लाखों रोजगार सृजित होंगे और देश वैश्विक जैव-प्रौद्योगिकी एवं बायो-मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र में अग्रणी देशों में शामिल होगा।

गांधी मैदान में होगा कायस्थों का शक्ति प्रदर्शन : सीतेश

पटना। राजधानी के गांधी मैदान में कायस्थ समाज का शक्ति प्रदर्शन होगा। उक्त दावा सीतेश रमण ने संवाददाता सम्मेलन में किया। वे कायस्थ सशक्तिकरण अभियान के अंतर्गत जिलों का लगातार दौरा कर रहे हैं, कहा कि जल्दी ही तिथि की घोषणा की जाएगी। उन्होंने कहा कि बांकीपुर उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी नीरज सिन्हा के समर्थन में समाज एकजुट है।

एक प्रश्न के जवाब में सीतेश रमण ने बताया कि स्वामी विवेकानंद और लोकनायक जयप्रकाश नारायण जैसे सामाजिक नक्षत्रों के द्वारा हुई सामाजिक क्रांति को नजरअंदाज करते हुए कायस्थ समाज को संसद व विधानसभाओं से बाहर करने की जो सतत साजिश की जा रही है, उससे आक्रोशित कायस्थ समाज अपनी शक्ति का प्रकटीकरण करेगा ताकि राजनीतिक दलों के बीच यह संदेश जाए कि कायस्थों की उपेक्षा चुनावों मे उनकी हार का कारण भी बन सकता है। कायस्थ समाज को सामाजिक समन्वय के लिए आवश्यक बताते हुए श्री रमण ने कहा कि एक जाति का अलग से विकास जैसे संभव नहीं, वैसे ही किसी जाति को छोड़कर सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास का संकल्प पूरा करना भी सिर्फ नारा ही है।

टीएमसी की राज्यसभा सदस्य कोयल मल्लिक का इस्तीफा

नई दिल्ली। तृणमूल कांग्रेस की राज्यसभा सदस्य रुक्मिणी कोयल मल्लिक ने राज्यसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है। सूत्रों के अनुसार मल्लिक ने राज्यसभा के सभापति सीपी राधाकृष्णन को अपना इस्तीफा सौंपा। मल्लिक को टीएमसी ने विगत अप्रैल में ही राज्यसभा में नामित किया था। उनका इस्तीफा ऐसे समय में सामने आया है, जब एक दिन पहले तृणमूल कांग्रेस के विधायक और ममता बनर्जी के करीबी सहयोगी मदन मित्रा ने ऋतब्रत बनर्जी के नेतृत्व वाले तृणमूल कांग्रेस के बागी खेमे का दामन थाम लिया था। कोयल मल्लिक के इस्तीफे के बाद राज्यसभा में तृणमूल कांग्रेस के सदस्यों की संख्या घटकर 9 रह गई। उल्लेखनीय है कि इससे पहले सुखेंदु शेखर रॉय, सुष्मिता देव और प्रकाश चिक बराइक ने राज्यसभा की सदस्यता और तृणमूल कांग्रेस से इस्तीफा देने के बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का दामन थाम लिया था।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने की परिसीमन विधेयक पर सर्वदलीय बैठक बुलाने की मांग

नई दिल्ली (हि.स.)। कांग्रेस अध्यक्ष एवं राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने महिला आरक्षण एवं उससे जुड़े परिसीमन के मुद्दे पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर आगामी मानसून सत्र से पहले सर्वदलीय बैठक बुलाने की मांग की है। खरगे ने कहा कि सरकार यदि संविधान (131वां संशोधन) विधेयक, 2026 को संशोधित रूप में फिर से संसद में लाने जा रही है तो उस पर सभी राजनीतिक दलों से पहले व्यापक चर्चा की जानी चाहिए।

खरगे ने गुरुवार को प्रधानमंत्री को भेजे पत्र में कहा कि मार्च और अप्रैल के दौरान उन्होंने संसदीय कार्य मंत्री को कई बार पत्र लिखकर परिसीमन संबंधी प्रस्तावों पर चर्चा के लिए सर्वदलीय बैठक बुलाने का अनुरोध किया था, लेकिन उनकी मांग स्वीकार नहीं की गई। संविधान (131वां संशोधन) विधेयक, 2026 लोकसभा में 17 अप्रैल को आवश्यक दो-तिहाई बहुमत हासिल नहीं कर सका था और पारित नहीं हो पाया था।

उन्होंने पत्र में कहा कि मीडिया रिपोर्टों से जानकारी मिली है कि केंद्र सरकार आगामी मानसून सत्र में संशोधित 131वां संविधान संशोधन विधेयक दोबारा पेश करने की तैयारी कर रही है। ऐसे में सरकार को परिसीमन से जुड़े अपने संशोधित प्रस्तावों पर सभी दलों के साथ चर्चा करनी चाहिए और उन्हें अध्ययन के लिए पर्याप्त समय देना चाहिए।

खरगे ने प्रधानमंत्री से अपील की कि विधेयक संसद में पेश किए जाने से पहले सर्वदलीय बैठक बुलाई जाए, ताकि राजनीतिक दल प्रस्तावित बदलावों का विस्तार से अध्ययन कर अपनी राय रख सकें।

उल्लेखनीय है कि संसद का मानसून सत्र 20 जुलाई से शुरू होने वाला है। इससे पहले बुधवार को कांग्रेस संसदीय दल (सीपीपी) की रणनीतिक बैठक सोनिया गांधी की अध्यक्षता में हुई थी। बैठक में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे और पार्टी के अन्य सांसद मौजूद रहे। बैठक में मानसून सत्र के दौरान उठाए जाने वाले मुद्दों और विपक्ष की रणनीति पर चर्चा की गई थी।

संक्षिप्त समाचार

दिल्ली हाई कोर्ट बार एसोसिएशन की तीन दिवसीय हड़ताल समाप्त, 17 जुलाई से करेंगे न्यायिक कार्य

नई दिल्ली, 16 जुलाई (हि.स.)। दिल्ली हाई कोर्ट बार एसोसिएशन ने गुरुवार को जिला अदालतों के वित्तीय क्षेत्राधिकार बढ़ाने के उच्च न्यायालय प्रशासन के फैसले के खिलाफ पिछले तीन दिनों से चल रही हड़ताल खत्म कर दी है। हाई कोर्ट बार एसोसिएशन ने कल यानि 17 जुलाई से न्यायिक कार्य में हिस्सा लेने का फैसला लिया है। दिल्ली हाई कोर्ट बार एसोसिएशन ने हड़ताल वापस लेने का फैसला केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल और उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश डीके उपाध्याय के साथ हुई बैठक में मिले आश्वासनों के बाद लिया है। बार एसोसिएशन ने कहा है कि मुख्य न्यायाधीश ने उनसे अपना प्रतिवेदन सौंपने को कहा है। उच्च न्यायालय के वकील जिला अदालतों के वित्तीय क्षेत्राधिकार बढ़ाने के उच्च न्यायालय प्रशासन के फैसले के खिलाफ 14 जुलाई से न्यायिक कार्यों का बहिष्कार कर रहे थे। उच्च न्यायालय प्रशासन ने दिल्ली के जिला अदालतों का वित्तीय क्षेत्राधिकार दो करोड़ से बढ़ाकर दस करोड़ कर दिया है। उच्च न्यायालय प्रशासन के इसी फैसले का बार एसोसिएशन विरोध कर रहा है। हाई कोर्ट बार एसोसिएशन का कहना है कि इस फैसले से उच्च न्यायालय के वकीलों पर काफी असर पड़ेगा और उनके पास केसों में 70 फीसदी की कमी हो सकती है। इसके पहले दिल्ली की सभी जिला अदालतों के वकीलों ने इसी सवाल को लेकर 14 मई को न्यायिक कार्यों का बहिष्कार किया था। जिला अदालतों में न्यायिक कार्यों के बहिष्कार का आह्वान ऑल डिस्ट्रिक्ट कोर्ट्स बार एसोसिएशंस ऑफ दिल्ली की को-आर्डिनेशन कमेटी ने किया था। ऑल डिस्ट्रिक्ट कोर्ट्स बार एसोसिएशंस ऑफ दिल्ली की को-आर्डिनेशन कमेटी ने दिल्ली की जिला अदालतों का वित्तीय क्षेत्राधिकार दो करोड़ से बढ़ाकर बीस करोड़ करने की मांग की थी। इस मांग पर को-आर्डिनेशन कमेटी की उच्च न्यायालय प्रशासन से बात भी हुई थी, जिसके बाद उन्होंने 14 मई के बाद आगे न्यायिक कार्यों के बहिष्कार को खत्म कर दिया था। अब इस सवाल पर वकीलों के दोनों संगठन आमने-सामने हैं।

दिल्ली सरकार जल्द 45 नए आयुष्मान आरोग्य मंदिर जनता को समर्पित करेगी : पंकज कुमार सिंह

नई दिल्ली, 16 जुलाई (हि.स.)। दिल्ली सरकार आयुष्मान आरोग्य मंदिर पहल के सातवें चरण के तहत जल्द 45 नए आयुष्मान आरोग्य मंदिर जनता को समर्पित करेगी। इसके बाद कुल आरोग्य मंदिरों की संख्या बढ़कर 415 हो जाएगी। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने गुरुवार को एक विज्ञप्ति जारी करते हुए बताया कि नई स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में 45 आयुष्मान आरोग्य मंदिर शामिल हैं। उन्होंने कहा कि इन केंद्रों के माध्यम से नागरिकों को उनके अपने घरों के करीब जरूरी स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध होगी, जहां बीमारी से बचाव, स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और व्यापक प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा पर विशेष जोर दिया जाएगा। स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि हमारी सरकार ने अब तक 370 आयुष्मान आरोग्य मंदिरों सफलतापूर्वक शुरू कर जनता को समर्पित किया, जिनमें 244 अर्बन सब हेल्थ सेंटर और 126 अर्बन प्राइमरी हेल्थ सेंटर शामिल हैं। यह पहल जमीनी स्तर पर स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं को और ज्यादा मजबूत करने के लिए दिल्ली सरकार की निरंतर प्रतिबद्धता को दिखाता है। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि हमारा विजन हर नागरिक को घर के पास विश्वसनीय और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं देना सुनिश्चित करना है।

आईपीयू ने अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए शुरू की प्रवेश प्रक्रिया, 20 जुलाई तक करें आवेदन

नई दिल्ली, 16 जुलाई (हि.स.)। गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय (आईपीयू) ने शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए अंतरराष्ट्रीय छात्रों के प्रवेश की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस संबंध में विश्वविद्यालय ने अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए प्रवेश पुस्तिका (एडमिशन ब्रोशर) जारी की। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) महेश वर्मा ने गुरुवार को ब्रोशर का औपचारिक विमोचन किया। इस अवसर पर इंडियन एकेडमी ऑफ मैनेजमेंट के अध्यक्ष एवं ईएससीई पेरिस (फ्रांस) के प्रो. विजय पेरेईरा मुख्य रूप से उपस्थित रहे। इस दौरान अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक सहयोग को मजबूत बनाने और वैश्विक साझेदारियों के माध्यम से छात्रों के लिए अधिक अवसर उपलब्ध कराने पर भी चर्चा की गई। डॉ. महेश वर्मा ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय छात्रों को प्रवेश पूरी तरह अर्हता परीक्षा की मेरिट के आधार पर दिया जाएगा। प्रवेश प्रक्रिया में सबसे पहले आईसीसीआर फेलोशिप के तहत आवेदन करने वाले छात्रों को प्राथमिकता मिलेगी, इसके बाद अन्य अंतरराष्ट्रीय आवेदकों को प्रवेश दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि आईपीयू के विभिन्न स्कूलों और संबद्ध संस्थानों में संचालित चयनित पाठ्यक्रमों में अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए 25 प्रतिशत अतिरिक्त सीटें उपलब्ध कराई जाएंगी। महेश वर्मा ने इच्छुक अंतरराष्ट्रीय छात्रों से 20 जुलाई तक सभी आवश्यक दस्तावेजों के साथ विधिवत भरा हुआ आवेदन पत्र अंतरराष्ट्रीय मामलों के निदेशालय में जमा कराने की अपील की। कार्यक्रम में योत्ता फाउंडेशन के प्रो. योगेश कोचर तथा विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय मामलों के निदेशक प्रो. गगन दीप शर्मा भी मौजूद रहे।

आम आदमी पार्टी ने तीन एमसीडी पार्षदों को पार्टी से किया निलंबित

नई दिल्ली, 16 जुलाई (हि.स.)। आम आदमी पार्टी (आआपा) ने बड़ी कार्रवाई करते हुए अपने तीन पार्षदों को पार्टी से निलंबित कर दिया है। आम आदमी पार्टी (आआपा) के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने गुरुवार को आधिकारिक तौर पर गुरुवार को एक पत्र जारी कर उनके निलंबन की घोषणा की। तीन पार्षदों में निर्मला देवी (शर्मा), कृष्णा राघव और सुल्ताना आबाद शामिल है। उल्लेखनीय है कि दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) की 12 वार्ड समितियों में से भारतीय जनता पार्टी ने 10 में अध्यक्ष पद पर जीत दर्ज की और निगम की स्थायी समिति की छह सीट में से पांच सीट हासिल कीं। वहीं आम आदमी पार्टी (आआपा) ने शेष दो वार्ड समितियों के अध्यक्ष पद और स्थायी समिति की एक सीट पर जीत हासिल की।

हाई कोर्ट ने सरकार को सोनम वांगचुक की सेहत पर नजर रखने का दिया निर्देश

नई दिल्ली, 16 जुलाई (हि.स.)। दिल्ली उच्च न्यायालय ने दिल्ली के जंतर-मंतर पर 19 दिन से अनशन पर बैठे सोनम वांगचुक की सेहत पर नजर रखने के निर्देश केंद्र सरकार को दिए हैं। मुख्य न्यायाधीश डीके उपाध्याय की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा कि देश के हर इंसान की जिंदगी कीमती है, इसलिए उसे बचाने की पूरी कोशिश की जानी चाहिए। अदालत ने सरकार से यह भी कहा कि रोजाना सरकारी डॉक्टरों की ओर से सोनम वांगचुक के स्वास्थ्य की जांच की जाए। उच्च न्यायालय ने ये टिप्पणी 19 दिन से अनशन पर बैठे सोनम वांगचुक को लेकर दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए की। सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार की ओर से सॉलिसीटर जनरल तुषार मेहता ने कोर्ट को आश्वस्त किया कि रोजाना सोनम वांगचुक के स्वास्थ्य की विशेषज्ञों और डॉक्टरों द्वारा जांच की जा रही है। डॉक्टरों की राय के आधार पर उनके जीवन रक्षा के लिए भी जो करना जरूरी होगी, वो सरकार करेगी। याचिका वकील राकेश कुमार सैनी ने दायर की थी। 15 जुलाई को सुनवाई के दौरान सैनी ने कहा था कि एक मानवाधिकार कार्यकर्ता विरोध के अपने अधिकार का उपयोग करते हुए पूरे देश के सामने अपनी जान देने को तैयार है।

दिल्ली स्टार्ट-अप एवं इन्क्यूबेशन नीति को मंजूरी, 400 करोड़ का किया जाएगा निवेश

नई दिल्ली, 16 जुलाई (हि.स.)। दिल्ली सरकार ने नवाचार, अनुसंधान और उद्यमिता को नई दिशा देने के उद्देश्य से दिल्ली स्टार्ट-अप एवं इन्क्यूबेशन नीति को मंजूरी दी है। इस महत्वाकांक्षी नीति के तहत अगले पांच वर्षों में 400 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश किया जाएगा। सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना को दिल्ली कैबिनेट ने स्वीकृति प्रदान कर दी है।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने गुरुवार को एक बयान में कहा कि यह नीति केवल स्टार्ट-अप शुरू करने तक सीमित नहीं है, बल्कि दिल्ली के युवाओं को नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि नौकरी देने वाला बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इसके तहत दिल्ली के शैक्षणिक संस्थानों में मजबूत नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र (इकोसिस्टम) विकसित किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने बताया कि शुरूआत में यह नीति 11 राज्य विश्वविद्यालयों, 13 सरकारी वित्तपोषित कॉलेजों, पॉलीटेक्निक संस्थानों, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) और सरकारी स्कूलों में लागू की जाएगी। सरकार पात्र शैक्षणिक संस्थानों में इन्क्यूबेशन सेंटर स्थापित करने और उन्हें मजबूत बनाने के लिए एकमुश्त वित्तीय सहायता प्रदान करेगी। इसके अलावा इन इन्क्यूबेशन सेंटरों के संचालन, मेंटरिंग, नेटवर्किंग, नवाचार गतिविधियों और स्टार्ट-अप इकोसिस्टम के विकास के लिए हर वर्ष संचालन संबंधी वित्तीय सहायता भी उपलब्ध कराई जाएगी।

उन्होंने बताया कि इस नीति के तहत इन्क्यूबेशन सेंटरों से जुड़े स्टार्ट-अप्स को उनके विकास के विभिन्न चरणों में माइलस्टोन आधारित वित्तीय सहायता भी दी जाएगी। यह सहायता प्रोटोटाइप तैयार करने, प्रूफ ऑफ कॉन्सेप्ट विकसित करने, उत्पाद तैयार करने, बाजार में उसकी उपयोगिता परखने

और उसके व्यवसायीकरण तक के विभिन्न चरणों में उपलब्ध कराई जाएगी। इन इन्क्यूबेशन सेंटरों में युवाओं को आधुनिक बुनियादी सुविधाएं, विशेषज्ञों का मार्गदर्शन, व्यवसायिक सलाह, बौद्धिक संपदा (इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी) से संबंधित सहायता, प्रयोगशालाओं और परीक्षण सुविधाओं तक पहुंच के साथ-साथ निवेशकों और उद्योग जगत से जुड़ने के अवसर भी उपलब्ध कराए जाएंगे। इससे छात्रों और नवाचार करने वाले युवाओं को विचार से लेकर इन्क्यूबेशन और व्यवसायीकरण तक चरणबद्ध सहयोग मिलेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह नीति युवाओं को केवल व्यवसाय शुरू करने में ही मदद नहीं करेगी, बल्कि दिल्ली में नवाचार की संस्कृति को मजबूत करेगी, रोजगार के नए अवसर पैदा करेगी, शोध आधारित नवाचार को बढ़ावा देगी, उद्योग और शैक्षणिक संस्थानों के बीच सहयोग को मजबूत बनाएगी तथा दिल्ली की ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था को नई गति देगी। इस नीति की एक विशेष पहल वार्षिक दिल्ली स्टार्टअप युवा महोत्सव होगी, जिसे राजधानी में नवाचार के प्रमुख मंच के रूप में विकसित किया जाएगा। इस महोत्सव में नवाचार करने वाले युवा, शैक्षणिक संस्थान, स्टार्ट-अप्स, निवेशक, उद्योग जगत के प्रतिनिधि और नीति निमार्ता एक साथ आएंगे। यहां नए विचारों का प्रदर्शन होगा, नई साझेदारियां विकसित होंगी और युवा उद्यमियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा मिलेगी।

मुख्यमंत्री ने बताया कि स्टेट इन्क्यूबेशन पॉलिसी मॉनिटरिंग कमेटी (एसआईपीएमसी) नीति के क्रियान्वयन की निगरानी करेगी। इस समिति में सरकार, शिक्षण संस्थानों, उद्योग जगत और स्टार्ट-अप इकोसिस्टम के प्रतिनिधि शामिल होंगे। समिति पारदर्शी संचालन, प्रभावी क्रियान्वयन तथा प्रदर्शन आधारित वित्तीय सहायता सुनिश्चित करेगी।

उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार नवाचार को बढ़ावा देने, युवाओं की उद्यमशील क्षमता को विकसित करने और उनके लिए नए अवसर सृजित करने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। यह नीति एक मजबूत, आत्मनिर्भर और नवाचार आधारित दिल्ली के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित होगी तथा राजधानी को नवाचार और उद्यमिता के अग्रणी केंद्र के रूप में स्थापित करने में अहम भूमिका निभाएगी।

श्रीजगन्नाथ, भगवान बलभद्र एवं माता सुभद्रा की रथयात्रा के पावन पर्व पर अभाविप ने दी शुभकामनाएं

नई दिल्ली, 16 जुलाई (हि.स.)। विश्व के सर्वाधिक आनंदमय एवं जनभागीदारी वाले आध्यात्मिक उत्सवों में से एक भगवान श्रीजगन्नाथ, भगवान बलभद्र एवं माता सुभद्रा की रथयात्रा के शुभारंभ पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने सभी देशवासियों एवं श्रद्धालुओं को शुभकामनाएं दी। यह दिव्य पर्व भारतीय संस्कृति के समरसता, सेवा, श्रद्धा, लोकमंगल एवं सामाजिक एकात्मता के शाश्वत मूल्यों का जीवंत प्रतीक है। महाप्रभु श्रीजगन्नाथ की रथयात्रा समाज के प्रत्येक वर्ग को जोड़ते हुए सेवा, समर्पण एवं सामाजिक सहभागिता का अनुपम संदेश देती है तथा भारतीय सांस्कृतिक चेतना को सशक्त बनाने का माध्यम है।

संगठन ने बताया कि सेवा भावना को आत्मसात करते हुए अभाविप के 1,200 से अधिक विद्यार्थी कार्यकर्ता रथयात्रा के दौरान सात प्रकार के सेवा कार्यों में लगे हुए हैं। स्टूडेंट्स फॉर सेवा (एसएफएस) के माध्यम से विविध सेवा गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है, वहीं स्टूडेंट्स फॉर डेवलपमेंट (एसएफडी) के माध्यम से मुख्य मार्ग पर स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। मेडिविजन द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्था की गई है तथा फार्माविजन एवं जिज्ञासा के

माध्यम से आवश्यक औषधियों का वितरण किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त 321 छात्राओं द्वारा जिला अस्पताल के बाहर एम्बुलेंस कॉरिडोर बनाकर श्रद्धालुओं एवं मरीजों की निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित करने में सहयोग दिया जा रहा है। वहीं, विद्यार्थी कार्यकताओं ने महाप्रभु श्रीजगन्नाथ के रथ के दोनों ओर मानव श्रृंखला बनाकर रथयात्रा के सुचारु एवं सुरक्षित संचालन में भी योगदान दिया है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. वीरेन्द्र सिंह सोलंकी ने कहा कि महाप्रभु श्रीजगन्नाथ की रथयात्रा भारतीय संस्कृति में सेवा, समरसता और लोककल्याण की चिरंतन परंपरा का दिव्य उत्सव है। भगवान श्रीजगन्नाथ, भगवान बलभद्र एवं माता सुभद्रा का यह पावन पर्व हमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति के प्रति संवेदनशील होकर सेवा का भाव विकसित करने की प्रेरणा देता है।

उन्होंने कहा कि अभाविप के लिए सेवा संगठन के कार्य का अभिन्न अंग है, इसी भावना के साथ हमारे विद्यार्थी कार्यकर्ता रथयात्रा में श्रद्धालुओं की सहायता हेतु विभिन्न सेवा कार्यों में समर्पित भाव से जुटे हैं।

वीरेन्द्र सिंह सोलंकी ने सभी के लिए महाप्रभु से प्रार्थना की है कि यह पावन अवसर समस्त राष्ट्र के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और सामाजिक समरसता का संचार करे तथा भारत को विकसित, सक्षम और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राष्ट्र बनाने के हमारे सामूहिक संकल्प को और अधिक सुदृढ़ करे।

जंतर-मंतर पर प्रदर्शनकारियों की पुलिस कैमरे से निगरानी को लेकर हाई कोर्ट में याचिका

नई दिल्ली, 16 जुलाई (हि.स.)। जेएनयू छात्रसंघ की पूर्व अध्यक्ष आइशी घोष ने जंतर-मंतर पर कॉकरोच जनता पार्टी की ओर से जारी प्रदर्शन में जुटे प्रदर्शनकारियों का लगातार पुलिस कैमरे से निगरानी के खिलाफ दिल्ली उच्च न्यायालय में याचिका दायर की है। वकील सुभाष चंद्रन और अनिरुद्ध केपी के जरिये ये याचिका दायर की गई है।

याचिका में कहा गया है कि दिल्ली पुलिस जंतर-मंतर पर बैठे प्रदर्शनकारियों पर स्थायी सर्विलांस कैमरे से लगातार नजर रखी जा रही है। यहां तक कि महिलाओं और लड़कियों के रात में सोने के दौरान भी कैमरे से नजर रखी जा रही है। याचिका में कहा गया है कि दिल्ली पुलिस को प्रदर्शनकारियों पर कैमरे से लगातार नजर रखने का कोई कानूनी अधिकार नहीं है। याचिका में कहा गया है कि आइशी घोष 20 जून से लगातार प्रदर्शन में हिस्सा ले रही हैं। याचिका में कहा गया है कि कैमरे से प्रदर्शनकारियों के खाने और आराम करने के समय का भी वीडियो फिल्माया जा रहा है। दिल्ली पुलिस कुछ छात्र प्रदर्शनकारियों को यहां तक धमकी दे रहे हैं कि उनका फोटो और वीडियो उनके अभिभावकों और उन संस्थानों को भेज देंगे जहां से वो पढ़ाई कर रहे हैं। इसकी वजह से कई लोग प्रदर्शन में हिस्सा लेने से कतरा रहे हैं। याचिका में कहा गया है कि दिल्ली पुलिस ने महिला प्रदर्शनकारियों के वीडियो उस हालत में भी बनाए जब भारी बारिश के दौरान वे भींगी हुई थीं और जंतर-मंतर पर छिपने की कोई जगह नहीं थी। ऐसा करना शारीरिक निजता और गरिमा का घोर उल्लंघन है। याचिका में कहा गया है कि दिल्ली पुलिस से बार-बार ये पूछा गया कि लगातार नजर रखने का अधिकार किसने दिया या किस कानूनी प्रावधान से वे ऐसा कर रहे हैं, तो उसका कोई जवाब नहीं दिया गया। याचिका में निजता के अधिकार पर जस्टिस केएस पुट्टास्वामी के उच्चतम न्यायालय के फैसले का जिक्र किया गया है। याचिका में कहा गया है कि ऐसा कर दिल्ली पुलिस संविधान के अनुच्छेद 14, 19 और 21 का उल्लंघन कर रही है।

हौज खास में भगवान जगन्नाथ की 48वीं वार्षिक रथ यात्रा में शामिल हुए उपराज्यपाल संधू

नई दिल्ली, 16 जुलाई (हि.स.)। दिल्ली के उपराज्यपाल तरनजीत सिंह संधू गुरुवार को हौज खास स्थित जगन्नाथ मंदिर में भगवान जगन्नाथ की 48वीं वार्षिक रथ यात्रा में शामिल हुए।

इस मौक सांसद बासुंरी स्वराज, विधायक सतीश उपाध्याय, धर्म गुरु और हजारों श्रद्धालु उपस्थित रहे।

उपराज्यपाल ने भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा के आयोजकों को इस पवित्र परंपरा को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने के लिए बधाई दी। उन्होंने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि यह परंपरा भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का एक शाश्वत प्रतीक है, जो भक्ति, विनम्रता और निस्वार्थ सेवा जैसे स्थायी मूल्यों से पीढ़ियों को प्रेरित करती है।

उपराज्यपाल ने कहा कि वार्षिक रथ यात्रा, जिसमें भगवान जगन्नाथ हर भक्त को आशीर्वाद देने के लिए बाहर आते हैं, सनातन धर्म की समावेशी भावना को खूबसूरती से दशार्ती है। यह हमें याद दिलाती है कि ईश्वरीय कृपा सभी बाधाओं से परे है। उन्होंने कहा कि छेरा पहरा की सम्मानित परंपरा, जिसमें शासक भी विनम्रतापूर्वक भगवान के सामने मार्ग की सफाई करते हैं, सेवा, विनम्रता और ईश्वर के समक्ष समानता के सर्वोच्च आदर्शों को साकार करती है। उपराज्यपाल ने इस शुभ अवसर पर दिल्ली के लोगों के अच्छे स्वास्थ्य, शांति, समृद्धि और कल्याण के लिए प्रार्थना की।

सांसद बासुंरी स्वराज ने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट करते हुए कि महाप्रभु जगन्नाथ की दिव्य रथ यात्रा भारतीय सनातन संस्कृति, आस्था और अध्यात्म की जीवंत अभिव्यक्ति है।

आबकारी घोटाला: केजरीवाल-सिसोदिया को सीबीआई की याचिका पर जवाब दाखिल करने का अंतिम मौका

नई दिल्ली, 16 जुलाई (हि.स.)। दिल्ली उच्च न्यायालय ने दिल्ली आबकारी घोटाला मामले में 23 आरोपितों को ट्रायल कोर्ट से बरी करने के आदेश को चुनौती देने वाली केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) की याचिका पर जवाब दाखिल करने के लिए दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, मनीष सिसोदिया और दुर्गेश पाठक को अंतिम मौका दिया है। जस्टिस मनोज जैन की बेंच ने मामले पर अगली सुनवाई 17 और 18 अगस्त को करने का आदेश दिया।

दिल्ली उच्च न्यायालय में गुरुवार को वकीलों की हड़ताल की वजह से किसी भी आरोपित की ओर से कोई वकील पेश नहीं हुआ। सीबीआई की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता और एएसजी एसवी राजू पेश हुए। जस्टिस मनोज जैन के पहले ये मामला जस्टिस स्वर्णकांता शर्मा की बेंच के समक्ष लिस्टेड था।

केजरीवाल, सिसोदिया और दुर्गेश पाठक ने जस्टिस स्वर्णकांता शर्मा की बेंच का बहिष्कार किया था। केजरीवाल ने जस्टिस स्वर्णकांता शर्मा को इस मामले की सुनवाई से खुद को हटने की मांग करते हुए अर्जी दाखिल की थी। जस्टिस शर्मा ने इस मामले की सुनवाई से खुद को हटने की मांग खारिज कर दी थी।

बाद में छह आम आदमी पार्टी नेताओं के खिलाफ कोर्ट की अवमानना की कार्यवाही शुरू करते हुए इस मामले को सुनवाई के लिए दूसरी बेंच को रेफर कर दिया था। उसके बाद इस मामले को जस्टिस मनोज जैन की बेंच के समक्ष लिस्ट किया गया, जबकि अवमानना की कार्यवाही का मामला जस्टिस नवीन चावला की बेंच के समक्ष लिस्ट किया गया।

राऊज एवेन्यू कोर्ट ने 27 फरवरी को सभी आरोपितों को बरी करने का आदेश दिया था। राऊज एवेन्यू कोर्ट ने कहा था कि चार्जशीट में काफी विरोधाभास है।

कोर्ट ने कहा कि हजारों पेज की चार्जशीट में जो तथ्य पेश किए गए हैं वे गवाहों के बयानों से मेल नहीं खाते। कोर्ट ने कहा था कि इस मामले में मनीष सिसोदिया करीब 530 दिन जेल में रहे। अरविंद केजरीवाल दो बार के अंतराल में 156 दिन जेल में रहे। अरविंद केजरीवाल 13 सितंबर, 2024 को उच्चतम न्यायालय से सीबीआई के मामले में जमानत मिलने के बाद रिहा हुए।

भविष्यफल

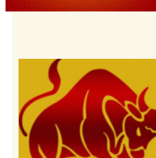

मेष- यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। कामकाज में आ रही बाधा को दूर कर लेंगे। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बन जाएगी। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम पर पैनी नजर रखिए। यात्रा आवश्यक होगी। शुभांक-5-7-9

वृष- लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने का प्रयास होंगे। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पर प्रपंच में ना पड़कर काम पर ध्यान दीजिए। इच्छित कार्य सफल होंगे। शुभांक-6-8-9

मिथुन- दुर्लभ स्वप्न साकार होंगे। आलस्य का त्याग करें। पुरुषार्थ का सहारा लें। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य लाभ में समय और धन व्यय होगा। शुभांक-7-8-9

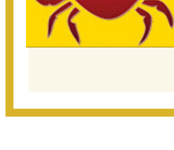

कर्क- विवाद समाप्त होंगे। शुभ संदेशों से मन खिला-खिला रहेगा। परेशानीयां स्वतः ही दूर होती प्रतीत होगी। अध्ययन में रुचि पैदा होगी। अभिभावकों के प्रति उत्तरदायित्व निभाने होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। स्त्री, संतान, मित्र के साथ मनोविनोद बढ़ेगे। शुभांक-4-6-9

सिंह- नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। शुभांक-4-6-8

कन्या- अपने अधीनस्थ लोगों से कम सहयोग मिलेगा। आवेश में आना आपके हित में नही होगा इसलिए व्यवहार व वाणी पर नियत्रंण रखें। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। बाहरी सहयोग की अपेक्षा रहेगी। विपरीत परिस्थितियों में भी हानि नहीं होगी। शुभांक-3-6-9

तुला- व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। आलस्य का त्याग करें। कार्यसिद्धि होने में देर नहीं लगेगी। आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा। शैक्षणिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। परिवार में किसी मांगलिक कार्य पर वार्ता होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा। शुभांक-5-7-8

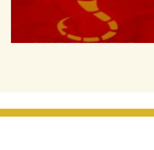

वृश्चिक- समय पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने का प्रयास होंगे। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। पुराने मित्र से मिलन होगा। स्वविवेक से कार्य करें। शुभांक-3-5-7

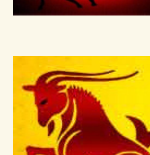

धनु- पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। शुभांक-3-6-7

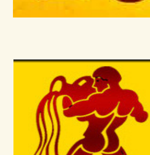

मकर- जीवनसाथी अथवा यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। बचते-बचते कलह विवाद का डर रहेगा। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंग। साथ ही आगे के लिए रास्ता भी बन जाएगा। इच्छित कार्य पूर्ण होंगे। शुभांक-3-5-7

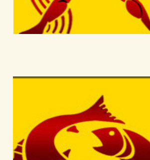

कुंभ- कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। नवीन उद्योगों के अवसर बढ़ेंगे व अभिलाषाएं पूर्ण होगी। कुछ भ्रामक धारणाओं का खंडन होगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। शुभांक-2-4-6

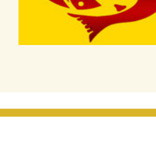

मीन- अपनी गतिविधियों पर पुनर्विचार करें। वैचारिक द्वन्द्व और असंतोष बना रहेगा। किसी सूचना से पूर्ण निर्णय सम्भव। सुख आरोग्य प्रभावित होगा। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। आवेग में आकर किये गए कार्यों का म्लान रहेगा। शुभांक-3-5-7

अमेरिका के नए नियम की रक्षा सचिव हेगसेथ ने की घोषणा

30 की उम्र पार कर चुके सैनिकों की होगी टेस्टोस्टेरोन स्क्रीनिंग

● नई दिल्ली / (एजेंसी)

यूएस रक्षा सचिव पीट हेगसेथ ने बुधवार को एक घोषणा की है। उन्होंने कहा कि 30 वर्ष और उससे अधिक आयु के सैन्य कर्मियों की टेस्टोस्टेरोन की कमी के लिए जांच की जाएगी। यह उनकी वार्षिक स्वास्थ्य जांच का हिस्सा होगा।

रक्षा सचिव ने क्या बताया: एक्स पर एक वीडियो पोस्ट कर हेगसेथ ने कहा कि वे सैनिकों के लिए स्क्रीनिंग होगा। ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि आपके पास अपनी पूरी क्षमता से काम करने के लिए टेस्टोस्टेरोन का सही स्तर हो। जिन सैनिकों में टेस्टोस्टेरोन का स्तर कम होगा, उन्हें स्वैच्छिक हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी की पेशकश की जाएगी।

30 वर्ष से कम आयु वालों के लिए परीक्षण वैकल्पिक होंगे। हेगसेथ ने यह साफ नहीं किया कि क्या यह स्क्रीनिंग महिलाओं पर भी लागू होगी या नहीं। जिनके टेस्टोस्टेरोन का स्तर भी उम्र बढ़ने के साथ घटता जाता है। हेगसेथ ने बुधवार के वीडियो में कहा कि हम अपने योद्धाओं को दुनिया की सबसे बेहतरीन चिकित्सा देखभाल देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह कार्यक्रम उस प्रतिबद्धता को पूरा करता है।

इसका मकसद क्या है: उन्होंने आगे कहा कि अपने दीर्घकालिक स्वास्थ्य का ख्याल रखने का मतलब यह सुनिश्चित कना है कि आप मजबूत, लचीले और सक्षम बने रहें। न केवल अपनी अगली तैनाती के लिए, बल्कि अपनी बाकी जीवन के लिए भी, ताकि वर्दी उतारने के बाद भी आप लंबे समय तक फल-फूल सकें।

टेस्टोस्टेरोन लेना है सख्त वर्जित

सेना में डॉक्टर के पर्चे के बिना कृत्रिम मांसपेशियों को बढ़ाने जैसे गैर-चिकित्सीय कारणों से टेस्टोस्टेरोन लेना सख्त वर्जित है। हेगसेथ ने वीडियो में कहा कि नया कार्यक्रम कृत्रिम संवर्धन के बारे में नहीं है। पेंटागन के प्रवक्ता शॉन पार्नेल ने बताया कि टेस्टोस्टेरोन की कमी के लिए अनिवार्य स्क्रीनिंग 30 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी सक्रिय ड्यूटी और रिजर्व कंपोनेंट कर्मियों के लिए तत्काल प्रभाव से लागू होगी। उन्होंने कहा कि यह प्रोटोकॉल विभाग को एक व्यापक आधारभूत स्तर स्थापित करने और लक्षित टेस्टोस्टेरोन थेरेपी देने में सक्षम बनाएगा, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि विभाग एक स्वस्थ, सक्षम और निर्णायक रूप से प्रभावशाली लड़ाकू बल को बनाए रखे।

गुजरात के कच्छ में 3 मिनट के भीतर दो बार हिली धरती

अहमदाबाद, आरएनएन। गुजरात के कच्छ जिले में गुरुवार दोपहर को कुछ ही देर के अंतराल में दो बार भूकंप के झटके महसूस किए गए। इस दौरान तीन मिनट के अंदर दो बार धरती हिली। रिक्टर स्केल पर जिसकी तीव्रता 3.6 मापी गई। इस दौरान पहला झटका दोपहर 2.20 बजे आया, जबकि दूसरा झटका 2.23 बजे महसूस हुआ।

प्राप्त जानकारी के अनुसार भूकंप का केंद्र कच्छ जिले में धोलावीरा से 32 किलोमीटर पश्चिम-उत्तर-पश्चिम में था। दोनों भूकंप के झटकों की वजह से किसी तरह के जान-माल के नुकसान की कोई सूचना नहीं मिली है, और ना ही किसी भवन को क्षति पहुंचने की खबर सामने आई है। स्थानीय प्रशासन और आपदा प्रबंधन विभाग स्थिति पर नजर बनाए हुए हैं। वहीं गुरुवार को ही मणिपुर के बिष्णुपुर में भी 3.6 की तीव्रता का भूकंप का झटका महसूस किया गया।

गुजरात का कच्छ भारत के सबसे अधिक भूकंप प्रभावित क्षेत्रों में शुमार किया जाता है, यह इलाका भूकंपीय जोन-5 में आता है, जिसे देश का सबसे संवेदनशील भूकंप क्षेत्र माना जाता है।

डोभाल ने उभरते खतरों से निपटने रणनीति तैयार की

हिंद महासागर क्षेत्र में दादागिरी करने वालों को भारत ने दिया कड़ा संदेश

● नई दिल्ली (एजेंसी)

बिम्सटेक राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों की पांचवीं बैठक बुधवार को नई दिल्ली में आयोजित हुई, जिसकी मेजबानी भारत के एनएसए अजीत डोभाल ने की। बैठक में बांग्लादेश, भूटान, म्यांमार, नेपाल, श्रीलंका और थाईलैंड के एनएसए एवं प्रतिनिधिमंडलों के प्रमुखों ने हिस्सा लिया।

विदेश मंत्रालय के अनुसार, बैठक में आतंकवाद, संगठित अपराध और उभरते सुरक्षा खतरों से निपटने के लिए व्यावहारिक उपायों पर व्यापक चर्चा की गई। सदस्य देशों ने माना कि बिम्सटेक ने क्षेत्रीय सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, परिवहन एवं व्यापार संपर्क, प्रौद्योगिकी और लोगों के बीच संपर्क बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बैठक में बिम्सटेक के

महासचिव ने सुरक्षा सहयोग के क्षेत्र में हुई प्रगति और विभिन्न पहलों का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया। सदस्य देशों ने साइबर सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा और ऊर्जा सुरक्षा को और मजबूत बनाने पर भी विचार-विमर्श किया।

विदेश मंत्रालय के मुताबिक, सदस्य देशों ने संपर्क बढ़ाने और आपदा प्रबंधन तंत्र को अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। इसके साथ ही नए और उभरते सुरक्षा खतरों से निपटने के लिए सामूहिक रणनीति तैयार करने पर भी सहमति जताई गई।

क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग प्रोत्साहित करना है उद्देश्य

इन दिशा-निर्देशों से क्षेत्र में राहत अभियानों को अधिक तेज, समन्वित और प्रभावी ढंग से संचालित करने में मदद मिलेगी. इसके अलावा, समुद्र में कानून प्रवर्तन एजेंसियों के बीच संपर्क के दौरान अपनाए जाने वाले मार्गदर्शक सिद्धांतों का भी समर्थन किया गया। इनका उद्देश्य समुद्री गतिविधियों में पूर्वानुमेयता बढ़ाना और क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग को प्रोत्साहित करना है। बैठक में अगले वर्ष बिम्सटेक की 30वीं वर्षगांठ से पहले क्षेत्रीय सुरक्षा, लचीलापन और संस्थागत क्षमता को और मजबूत करने के लिए सहयोग एवं ज्ञान-साझाकरण बढ़ाने की प्रतिबद्धता दोहराई गई।

पीएम मोदी ने कतर के अमीर से की बात

नई दिल्ली, आरएनएन। पीएम नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को कतर के अमीर शेख तमीम बिन हमद अल थानी से बात की और उनके पिता (फादर अमीर) शेख हमद बिन खलीफा अल थानी के निधन पर अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की।

पीएम ने कहा कि दिवंगत नेता की स्थायी विरासत दोनों देशों को रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने के लिए मार्गदर्शन देती रहेगी। भारत ने फादर अमीर शेख हमद बिन खलीफा अल थानी के निधन पर उनके सम्मान में भारत सरकार ने एक दिन का राष्ट्रीय शोक घोषित किया था और पूरे देश में राष्ट्रध्वज आधा झुका हुआ रखा गया। पीएम नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट के जरिए अपनी बातचीत साझा की। उन्होंने लिखा कि कतर के अमीर के साथ बातचीत कर फादर अमीर के निधन पर संवेदना व्यक्त की है।

फादर अमीर के निधन पर जताया दुख

भारत सरकार की ओर से संसदीय कार्य और अल्पसंख्यक कार्य मंत्री किरेन रिजिजू 14 जुलाई को दोहा पहुंचे और अमीर से मुलाकात कर शोक प्रकट किया। आपको बता दें कि फादर अमीर का 12 जुलाई को 74 वर्ष की आयु में निधन हो गया था।

जेलेंस्की ने सरकार में किया बड़ा फेरबदल

नए पीएम बने सेरही कोरेत्स्की रक्षा मंत्री को हटाने पर प्रदर्शन

● कीव / (हि.स.)

यूक्रेन की राजधानी कीव में गुरुवार को जनता ने विरोध प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन उस समय हुआ, जब यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने मिखाइलो फेडोरोव को रक्षा मंत्री के पद से हटाने की प्रक्रिया शुरू की।

इसी दौरान संसदीय बैठक भी हुई, जिसमें बड़े सरकारी फेरबदल के तहत नए पीएम की नियुक्ति को मंजूरी दी गई। सरकार में यह बड़ा फेरबदल राष्ट्रपति जेलेंस्की की सियासी ताकत की परीक्षा बन सकता है। ऐसा इसलिए क्योंकि रूस की ओर से बड़े पैमाने पर हमलों के खिलाफ यूक्रेन की लड़ाई को अब करीब

साढ़े चार साल पूरे हो चुके हैं। रक्षा मंत्री मिखाइलो फेडोरोव केवल 6 माह के कार्यकाल के बाद सरकार से बाहर हो सकते हैं। हाल के महीनों में रूसी सेना के मुकाबले यूक्रेन के सैन्य प्रदर्शन में जो अहम सुधार हुआ है, उसका कुछ श्रेय फेडोरोव की तकनीकी समझ को दिया जाता है।

जनवरी 2025 में रक्षा मंत्री बनने से पहले फेडोरोव (35) यूक्रेन की डिजिटल बदलाव की नीतियों के प्रमुख थे। उन्हें आधुनिक सोच वाला नेता माना जाता था। उन्होंने ड्रोन तकनीक को तेजी से विकसित करने और सेना में लागू करने का काम आगे बढ़ाया।

केंद्रीय मंत्री रेड्डी बोले, 15- 17 नवंबर तक भारत खनन सप्ताह 2026 आयोजित होगा

● नई दिल्ली / (एजेंसी)

केंद्रीय कोयला और खान मंत्री जी. किशन रेड्डी ने आज खनन और खनिज क्षेत्रों के लिए भारत के सबसे बड़े सम्मेलन और प्रदर्शनी पर आधारित भारत खनन सप्ताह 2026 की औपचारिक घोषणा की, जो 15 से 17 नवंबर तक नई दिल्ली के यशोभूमि कन्वेंशन सेंटर में आयोजित किया जाएगा।

केंद्रीय मंत्री जी. किशन रेड्डी ने केंद्रीय कोयला और खान राज्य मंत्री सतीश चंद्र दुबे के साथ मिलकर सम्मेलन का लोगो और विवरणिका जारी किया। कोयला मंत्रालय के सचिव विक्रम देव दत्त, खान मंत्रालय के सचिव पीयूष गोयल, कोयला मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव रूपिंदर बरार और कोयला तथा खान मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। इस शुरुआती कार्यक्रम में खनन व्यवस्था से जुड़े उद्योग जगत के दिग्गज और अन्य प्रमुख हितधारकों ने भी हिस्सा लिया।

तीन दिन तक चलने वाला यह सम्मेलन मज़बूत संसाधन, स्मार्ट खनन, टिकाऊ भविष्य की थीम पर आयोजित किया जाएगा, जो तकनीकी रूप से उन्नत, वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी और पर्यावरण के प्रति ज़िम्मेदार खनन क्षेत्र बनाने के भारत के दृष्टिकोण को दर्शाता है।

प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मंच का काम करेगा

इस मौके पर केंद्रीय कोयला और खान मंत्री जी. किशन रेड्डी ने भारत खनन सप्ताह 2026 को एक अहम पहल बताया, जो खनन क्षेत्र में भारत के नए आत्मविश्वास, दृष्टिकोण और वैश्विक आकांक्षाओं को दिखाता है। यह कार्यक्रम सरकारों, उद्योगों, निवेशकों, तकनीक से जुड़ी अग्रणी हस्तियों, शोधकर्ताओं, स्टार्टअप्स और एकेडमिया को एक साथ लाने के लिए एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मंच का काम करेगा, ताकि साझेदारी को मजबूत किया जा सके, नवाचार को बढ़ावा दिया जा सके और टिकाऊ तथा तकनीक-आधारित खनन के भविष्य को आकार दिया जा सके। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले दशक में किए गए बड़े सुधारों का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा कि पारदर्शी नीलामी, व्यावसायिक कोयला खनन, तेज़ी से खोज, ईज़ ऑफ़ डूइंग बिज़नेस और तकनीक-आधारित शासन ने भारत को दुनिया के सबसे आकर्षक माइनिंग खनन गंतव्यों में से एक बना दिया है।

कब-कहां रुकेगी भगवान शिव की पवित्र छड़ी

छड़ी-मुबारक अमरनाथ यात्रा की समय-सारणी हुई जारी

● श्रीनगर /(एजेंसी)

पवित्र छड़ी-मुबारक स्वामी अमरनाथ जी के संरक्षक, महंत दीपेंद्र गिरी ने साल 2026 की वार्षिक तीर्थयात्रा का कार्यक्रम आधिकारिक तौर पर घोषित कर दिया है। यह जानकारी सभी साधुओं, तीर्थयात्रियों और आम जनता के मार्गदर्शन के लिए जारी की गई है। इस साल की यात्रा को लेकर श्रद्धालुओं में भारी उत्साह है और प्रशासन ने भी अपनी तैयारियां शुरू कर दी हैं।

पारंपरिक रस्मों से होगी शुरुआत: वार्षिक तीर्थयात्रा की शुरुआत से जुड़ी पारंपरिक रस्में बहुत ही विधि-विधान के साथ निभाई जाएंगी. इसकी शुरुआत 29 जुलाई को आषाढ़-पूर्णिमा यानी व्यास-पूर्णिमा के दिन होगी. इस दिन पहलगाम में भूमि-पूजन, नवग्रह पूजन और ध्वजारोहण किया जाएगा। इसके बाद 12 अगस्त को छड़ी-मुबारक को ऐतिहासिक शंकराचार्य मंदिर ले जाया जाएगा। वहीं, 13 अगस्त को शारिका भवानी मंदिर में विशेष रस्में निभाई जाएंगी। 15 अगस्त को श्रीनगर के दशनामी स्थित श्री अमरेश्वर मंदिर में छड़ी-स्थापना समारोह आयोजित होगा। इसके बाद 17 अगस्त को नाग-पंचमी के मौके पर श्रीनगर के दशनामी अखाड़ा में पारंपरिक पवित्र छड़ी-पूजन किया जाएगा।

छड़ी-मुबारक का पूरा सफर

स्वामी अमरनाथ जी के पवित्र धाम तक पवित्र छड़ी को संरक्षक द्वारा तय कार्यक्रम के अनुसार ले जाया जाएगा। इसका सफर 22 अगस्त को श्रीनगर से शुरू होगा. इसके बाद 22 और 23 अगस्त को पहलगाम में रात्रि विश्राम होगा। 24 अगस्त को यह पवित्र छड़ी चंदनवाड़ी में रुकेगी. अगले दिन यानी 25 अगस्त को शेषनाग में रात्रि विश्राम का कार्यक्रम है। इसके बाद 26 और 27 अगस्त को पंचतरणी में रात का पड़ाव रहेगा. आखिरकार, 28 अगस्त को श्रावण-पूर्णिमा के शुभ दिन पवित्र तीर्थ स्थल पर अंतिम पूजा और दर्शन के लिए छड़ी-मुबारक का आगमन होगा।

न्यूजीलैंड में 5.9 तीव्रता का भूकंप, सुनामी का अलर्ट

वेलिंगटन, आरएनएन। न्यूजीलैंड के दक्षिणी द्वीप (साउथ आइलैंड) के पश्चिमी तट पर गुरुवार को 5.9 तीव्रता का भूकंप आया। इसके बाद अधिकारियों ने सुनामी का अलर्ट जारी करते हुए लोगों से तुरंत सुरक्षित और ऊंचे स्थानों पर जाने की अपील की है। भूकंप का केंद्र ते अनाउ शहर से करीब 42 किमी उत्तर-उत्तर पश्चिम में था। भूकंप भारतीय समयानुसार दोपहर के आसपास दर्ज किया गया। न्यूजीलैंड की राष्ट्रीय आपातकालीन प्रबंधन एजेंसी ने कहा है कि प्रभावित इलाकों में रहने वाले लोग बिना देरी किए सुनामी निकासी क्षेत्र से बाहर निकलें और नजदीकी ऊंचे स्थान या जितना संभव हो सके।

ग्रामोदय विश्वविद्यालय में जीवन कौशल प्रबंधन पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

चित्रकूट, 16 जुलाई (दिव्य भारत ब्यूरो)। महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के महिला छात्रावास में आज मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण समिति के तत्वावधान में छात्राओं के व्यक्तित्व विकास एवं आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से जीवन कौशल प्रबंधन विषय पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में आत्म-जागरूकता, प्रभावी संचार, निर्णय क्षमता, समस्या समाधान, समय एवं तनाव प्रबंधन, भावनात्मक संतुलन, आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच तथा बेहतर पारस्परिक संबंधों जैसे जीवन कौशल के महत्वपूर्ण आयामों पर विस्तार से चर्चा की गई। वक्ताओं ने कहा कि जीवन कौशल केवल शैक्षणिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं, बल्कि सफल व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक जीवन की आधारशिला है।

संवादात्मक गतिविधियों एवं प्रश्नोत्तर सत्र के माध्यम से छात्राओं की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की गई तथा उन्हें दैनिक जीवन की चुनौतियों का आत्मविश्वास एवं विवेकपूर्ण ढंग से सामना करने के लिए प्रेरित किया गया।

आंध्र प्रदेश में कोरोना से चार लोगों की मौत

विजयवाड़ा, आरएनएन। आंध्र प्रदेश में 26 जून से 16 जुलाई के बीच कोविड के 12 मामले सामने आए हैं, जिनमें से चार लोगों की मौत हुई है।

राज्य के स्वास्थ्य सचिव वीरपांडियन ने गुरुवार को बताया कि 26 जून से 16 जुलाई के बीच कोरोनावायरस से चार लोगों की मौत हुई है। इनमें से तीन मामले कडप्पा जिले से और एक मामला काकीनाडा जिले से था। ये चारों लोग पहले से ही गंभीर बीमारियों से ग्रसित थे और कोविड से संक्रमित थे।

रामबन में अमरनाथ यात्रियों की बस में आग लगी

● श्रीनगर / (हि.स.)

जम्मू-कश्मीर के रामबन जिले में बृहस्पतिवार को जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर अमरनाथ यात्रियों को ले जा रही एक बस में आग लग गई। घटना के बाद त्वरित बचाव अभियान चलाकर बस में सवार सभी 47 लोगों को सुरक्षित निकाल लिया गया।

अधिकारियों ने बताया कि राजस्थान के श्रद्धालुओं को ले जा रही यह स्लीपर बस अमरनाथ गुफा मंदिर में दर्शन के बाद श्रीनगर से जम्मू की ओर जा रही थी, तभी राजमार्ग पर करोल के पास इसमें आग लग गई। बस का एक टायर कथित तौर पर फटने के बाद यात्रियों ने

बस में सवार सभी 47 लोगों को सुरक्षित निकाल लिया

धुआं उठता देखा। इसके बाद वाहन के आग की लपटों में घिरने से पहले यात्री बस से उतर गए। पुलिस, सीआरपीएफ, सेना के जवानों, एसडीआरएफ, अग्निशमन एवं आपातकालीन सेवाओं और क्यूआरटी के स्वयंसेवकों ने मौके पर पहुंचकर बचाव और अग्निशमन अभियान शुरू किया। रामबन के उपायुक्त मोहम्मद अलियास खान ने बताया कि चालक और परिचालक समेत 47 सवार सुरक्षित बच गए।

उपायुक्त ने कहा कि तीर्थयात्रियों को सुरक्षित निकाल लिया है और उन्हें जम्मू की आगे की यात्रा के लिए दूसरी बस में भेजा गया। आग की वजह से बस पूरी तरह से नष्ट हो गई। आग लगने के सटीक कारण का अभी पता नहीं चल पाया है, हालांकि प्रारंभिक जानकारी से संकेत मिलता है कि टायर फटने के बाद आग लगी।

हादसा : रोहिंग्या शरणार्थियों को ले जा रही दो नावें डूबीं

● नई दिल्ली / (एजेंसी)

म्यांमार के तट के पास बंगाल की खाड़ी में रोहिंग्या शरणार्थियों को ले जा रही दो नावें बंगाल की खाड़ी में पलट गईं, जिसके बाद 500 लोगों की मौत की आशंका है। इंटरनेशनल ऑर्गनाइजेशन फॉ माइग्रेशन और यूएन हाई कमिश्नर फॉर रिफ्यूजीज के बयान के मुताबिक, शुरुआती जानकारी से पता चलता है कि जून के आखिर में म्यांमार के पश्चिमी राज्य रखाइन से दो नावें निकली थीं।

500 लोगों की मौत की आशंका

इन नावों में ज्यादातर रोहिंग्या यात्री सवार थे और कुछ ऐसे लोग भी शामिल थे जो बांग्लादेश में मौजूद रिफ्यूजी कैंपों से आए थे। एजेंसियों ने एक संयुक्त बयान में कहा कि घटनाओं और मृतकों की संख्या की अभी आधिकारिक तौर पर पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन यूएनएचसीआर और आईओएम संभावित रूप से बड़े जान-माल के नुकसान को लेकर बेहद चिंतित हैं। माना जा रहा है कि एक नाव, जिसमें करीब 250 लोग सवार थे, रवाना होने के कुछ ही देर बाद संपर्क से बाहर हो गई।

दूसरी नाव, जिसमें करीब 280 लोग सवार थे. माना जा रहा है कि यह नाव 8 जुलाई को म्यांमार के अयेयारवाडी तट के पास डूब गई। म्यांमार के गृह मंत्रालय के प्रवक्ता, कार्यवाहक पुलिस ब्रिगेडियर जनरल सो लिन आंग ने इस पर कोई प्रतिक्रिया देने से इनकार कर दिया। म्यांमार के राष्ट्रपति और अयेयारवाडी क्षेत्र की सरकार के प्रवक्ताओं ने भी कोई बयान नहीं दिया है।

नए युग में प्रवेश — यह एक स्वचालित इंजन है, जो चलायमान रहते हाइड्रोजन का उपयोग करके अपनी बिजली उत्पन्न करता है

भारत की पहली हाइड्रोजन ट्रेन: हरित रेल गतिशीलता को बढ़ावा

● नई दिल्ली / (हि.स.)

भारतीय रेल स्वच्छ और टिकाऊ परिवहन के एक नए युग में प्रवेश कर रही है। हाइड्रोजन ईंधन सेल प्रौद्योगिकी विश्व स्तर पर जीवाश्म ईंधन-आधारित कर्षण प्रणालियों के एक आशाजनक विकल्प के रूप में उभरी है। हाइड्रोजन से चलने वाली देश की पहली स्वदेशी ट्रेन इस अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी को अपनाने की दिशा में एक अहम कदम है।

यह एक स्वचालित इंजन है जो चलायमान रहते हाइड्रोजन का उपयोग करके अपनी बिजली उत्पन्न करता है। 17 जुलाई 2026 को पीएम नरेंद्र मोदी द्वारा उद्घाटन के साथ, हाइड्रोजन ईंधन सेल से चलने वाली ट्रेन का परिचालन शुरू हो जाएगा। यह उत्तर रेलवे के जींद-सोनीपत खंड पर चलेगी। यह ट्रेन समर्पित हाइड्रोजन भंडारण, ईंधन भरने और परिचालन बुनियादी ढांचे के साथ उन्नत प्रणोदन प्रौद्योगिकी से युक्त है। यह भारत में स्वच्छ रेल परिवहन की व्यवहार्यता को प्रदर्शित करेगा। एक प्रायौगिक पहल के रूप में विकसित यह ट्रेन नवाचार के लिए भारतीय रेल की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह ऊर्जा दक्षता और पर्यावरण की दृष्टि से जिम्मेदार परिवहन को भी बढ़ावा देता है।

इस ट्रेन के उद्घाटन के साथ, भारत हाइड्रोजन से चलने वाले रेल परिवहन की खोज करने वाले देशों के एक चुनिंदा समूह में शामिल हो जाएगा। इनमें जर्मनी, जापान, चीन और अमेरिका शामिल हैं। चूंकि यह प्रौद्योगिकी अपने प्रारंभिक चरण में है, इसलिए यह परियोजना मूल्यवान परिचालन अनुभव प्रदान करेगी। यह रेलवे क्षेत्र में हाइड्रोजन से चलने वाली गतिशीलता के भविष्य के अनुप्रयोगों का समर्थन करेगा।

पूर्णत स्वदेशी है हाइड्रोजन ट्रेन

हाइड्रोजन ट्रेन परियोजना को अनुसंधान, डिजाइन और मानक संगठन (आरडीएसओ) के तैयार डिजाइन अनुमोदन और तकनीकी विशिष्टताओं के अनुसार विकसित किया गया है। पूरी तरह से भारत में डिजाइन और विकसित यह ट्रेन आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण को प्रदर्शित करती है।

ट्रेन की मुख्य विशेषताएं

(एजेंसी)

- 10-कार वाली हाइड्रोजन ईंधन सेल-आधारित ट्रेन।
- 1200 किवॉ हाइड्रोजन ईंधन सेल प्रणोदन प्रणाली से संचालित।
- 110 किलोमीटर प्रति घंटे की डिजाइन गति के साथ 75 किलोमीटर प्रति घंटे की अधिकतम गति से संचालित करने के लिए स्वीकृत।
- लगभग 2,600 यात्री क्षमता।
- प्रोटोटाइप निर्माण के माध्यम से डिजाइन चरण से विकसित।
- यह मध्यवर्ती स्टेशनों की सेवा करते हुए जींद जंक्शन, गोहाना जंक्शन और सोनीपत को जोड़ेगी।
- प्रस्तावित हॉल्ट में जींद सिटी, पांडु पिंडारा जंक्शन, ललित खेड़ा हॉल्ट, भांभेवा, ईसापुर खीरी हॉल्ट, ब्यूटेन हॉल्ट, खंडराई हॉल्ट, रबरा हॉल्ट, लठ हॉल्ट, मोहना, बड़वासनी हॉल्ट और सोनीपत न्यू शामिल हैं।

संपादकीय

सुनें तार्किक विरोध

भारतीय लोकतंत्र की खूबसूरती रही है कि यहां हर अलग राय व असहमति को सम्मान मिला है। निश्चय ही यह दृष्टि लोकतंत्र को मजबूत ही करती है। जब हम कहते हैं कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है तो प्रतिरोध की आवाज को सुनने के लिये नीति-नियंताओं को बड़ा दिल भी दिखाना चाहिए। एक बार फिर इस भावना की परीक्षा तब हो रही है, जब हमारे देश में लाखों बच्चों का भविष्य तय करने वाली प्रतियोगिता परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं को लेकर सवाल उठे हैं। परीक्षा प्रणाली की शुचिता बनाये रखने के लिये शिक्षाविद् और इनोवेटर सोनम वांगचुक की भूख हड़ताल एक अहम मोड़ पर पहुंच गई है। उनकी बिगड़ती सेहत को लेकर देश में चिंता है। उनका वजन काफी कम हुआ है, रक्त शर्करा कम हुई है और कमजोरी आने की बात कही जा रही है। निश्चित रूप से राजनीतिक प्रतिबद्धताओं से हटकर उनकी खराब होती सेहत हमारी चिंता का विषय होना चाहिए। निश्चय ही वांगचुक किसी राजनीतिक दल से संबंध नहीं रखते और न ही वे यह आंदोलन किसी निजी लाभ के लिये कर रहे हैं। वे भले ही छात्रों के भविष्य के मुद्दे को लेकर अस्तित्व में आई- कॉकरोच जनता पार्टी के समर्थन में खड़े हुए हों, लेकिन उनकी चिंता के केंद्र में उन लाखों छात्रों का भविष्य है, जो प्रतियोगिता परीक्षाओं के तौर-तरीकों को लेकर अविश्वास जता रहे हैं। उनके आंदोलन के मूल में उन लाखों अभिभावकों की फिक्र है, जिनका भरोसा बार-बार पेपर लीक और परीक्षा प्रक्रियाओं में अनियमितताओं को लेकर डगमगा रहा है। कहना मुश्किल है कि लगाया जा रहा हर आरोप सही ही हो, लेकिन एक बात से तो इनकार नहीं किया जा सकता कि देश की कई महत्वपूर्ण प्रवेश परीक्षाओं में लोगों का विश्वास कम हुआ है। ऐसे में देश के नीति-नियंताओं को पारदर्शी सुधार लाकर और बेहतर जवाबदेही के माध्यम से दरके हुए विश्वास को जल्द बहाल करने की जरूरत है। निर्विवाद रूप से ये लोकतंत्र का तकाजा भी है कि सत्ताधीशों को किसी लोकतांत्रिक व्यवस्था में उन नागरिकों की बात को भी सुनना चाहिए, जो नीतियों की विसंगतियों को लेकर सवाल उठा रहे हों। यह जानते हुए कि उनकी राजनीतिक दल विशेष से कोई प्रतिबद्धता नहीं है। निस्संदेह, देश में कोई भी सरकार जनता के अभिभावक के रूप में होती है। वैसे भी किसी शांतिपूर्ण विरोध की लंबे समय तक अनदेखी से आंदोलनकारियों और आम लोगों में सरकार के प्रति अविश्वास बढ़ता है। निस्संदेह, यदि आंदोलनकारियों से बातचीत की पहल होती है तो इसको उसकी कमजोरी नहीं कहा जाएगा। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भूख हड़ताल के नैतिक और चिकित्सीय पहलू भी होते हैं। सरकार की जिम्मेदारी बनती है कि वह आंदोलन कर रहे व्यक्ति की अभिव्यक्ति की आजादी का सम्मान करते हुए उसके जीवन की रक्षा करे। वहीं दूसरी ओर किसी भी चिकित्सीय हस्तक्षेप के दौरान कानून और चिकित्सा-संबंधी नैतिक नियमों का पालन किया जाना भी जरूरी है। इस बात में दो राय नहीं है कि मौजूदा गतिरोध से किसी का भी भला नहीं हो सकता। सही मायने में बातचीत की शुरूआत करने के लिये सरकार को हर मांग को पूरा करने की जरूरत भी नहीं है। वहीं दूसरी ओर आंदोलनकारियों को भी बातचीत को सार्थक बनाने के लिये प्रयासरत रहने की जरूरत है। ऐसे में समस्या के समाधान के लिये एक भरोसेमंद समिति और चिंताओं से जुड़े मुद्दों पर विचार करने के लिये एक तय समय-सीमा वाला रोडमैप, भरोसे की कमी को दूर करने में मददगार साबित हो सकता है। सही मायने में इस आंदोलन के मानवीय पक्ष पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। यानी सरकार समझने की कोशिश करे कि इस आंदोलन के जन्म लेने के पीछे क्या भावनाएं काम कर रही थीं।

जगन्नाथ रथयात्रा : उतार-चढ़ाव, विध्वंस और पुनर्निर्माण के बीच अमर है आस्था की परंपरा

रमेश शर्मा

पुरी की विश्वविख्यात भगवान जगन्नाथ रथयात्रा भारत की सांस्कृतिक एकता, सामाजिक समरसता और सनातन परंपरा की जीवंत अभिव्यक्ति है। इस वर्ष रथयात्रा शुरू हो गई है जोकि 24 जुलाई तक आयोजित होगी। 25 जुलाई को नीलाद्री बीजे के साथ भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मुख्य मंदिर में वापसी होगी तथा 27 जुलाई से पुनः दर्शन आरंभ होंगे। हर वर्ष लाखों श्रद्धालु इस महापर्व में सहभागी बनते हैं और यह सिद्ध करते हैं कि भारत की आध्यात्मिक चेतना समय, सत्ता और परिस्थितियों से कहीं अधिक शक्तिशाली है।

पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर चार धामों में से एक है तथा आदि शंकराचार्य द्वारा

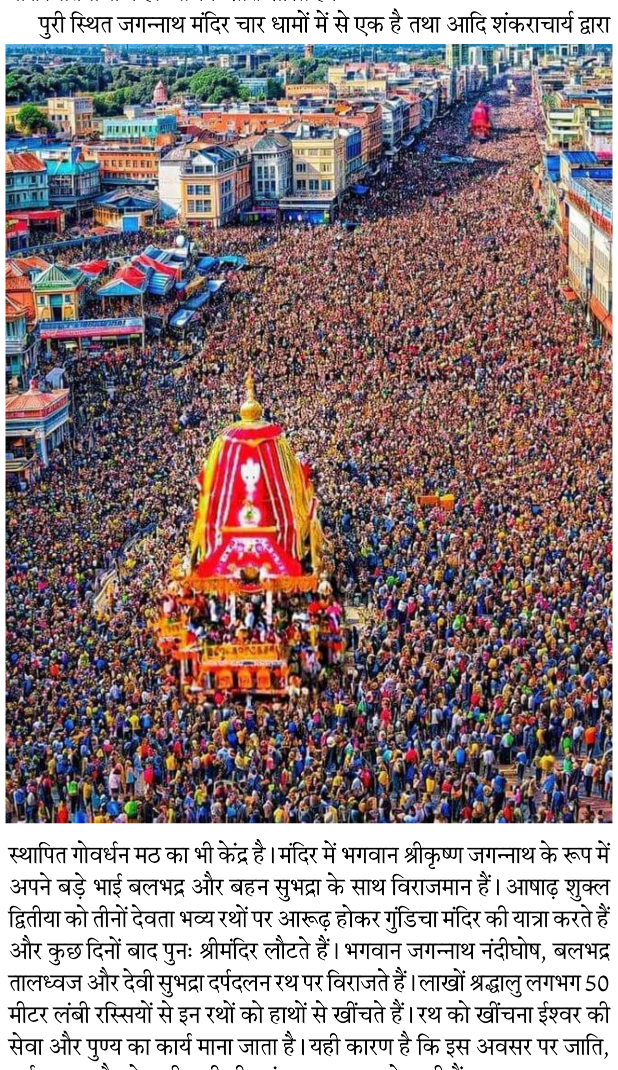

स्थापित गोवर्धन मठ का भी केंद्र है। मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण जगन्नाथ के रूप में अपने बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ विराजमान हैं। आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को तीनों देवता भव्य रथों पर आरूढ़ होकर गुंडिचा मंदिर की यात्रा करते हैं और कुछ दिनों बाद पुनः श्रीमंदिर लौटते हैं। भगवान जगन्नाथ नंदीघोष, बलभद्र तालध्वज और देवी सुभद्रा दर्पदलन रथ पर विराजते हैं। लाखों श्रद्धालु लगभग 50 मीटर लंबी रस्सियों से इन रथों को हाथों से खींचते हैं। रथ को खींचना ईश्वर की सेवा और पुण्य का कार्य माना जाता है। यही कारण है कि इस अवसर पर जाति, वर्ग, भाषा और क्षेत्र की सभी सीमाएं स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

पर्यावरण और लोककला का अद्भुत संदेश

रथयात्रा की तैयारी अक्षय तृतीया से प्रारंभ होती है। प्रत्येक वर्ष नए रथ बनाए जाते हैं और उनका निर्माण पूरी तरह पारंपरिक शिल्पकला से होता है। आधुनिक मशीनों के स्थान पर स्थानीय कारीगर अपनी पीढ़ियों से चली आ रही कला का उपयोग करते हैं। रथों के निर्माण में मुख्यतः काष्ठ का प्रयोग होता है और प्रकृति के संतुलन का विशेष ध्यान रखा जाता है। यह परंपरा भारतीय संस्कृति के उस विचार को पुष्ट करती है कि धार्मिक आस्था और पर्यावरण संरक्षण एक-दूसरे के पूरक हैं। साथ ही यह स्थानीय शिल्पकारों और लोककला को जीवित रखने का भी प्रभावी माध्यम है।

सामाजिक समरसता का अनुपम उदाहरण

रथयात्रा का सबसे प्रेरक दृश्य वह होता है जब पुरी के गजपति महाराज स्वयं स्वर्ण झाड़ू से रथों के मार्ग की सफाई करते हैं। इस परंपरा को छेरा पहरा कहा जाता है। राजा के साथ राजपुरोहित तथा सबर जनजाति के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहते हैं। राजा द्वारा झाड़ू लगाना यह संदेश देता है कि ईश्वर के समक्ष कोई बड़ा या छोटा नहीं है। मंदिर की सेवा-व्यवस्था में भी विभिन्न समाजों और परंपराओं के लोगों की सहभागिता रहती है। यही कारण है कि जगन्नाथ धाम भारतीय सामाजिक समरसता और समावेशी संस्कृति का अद्वितीय प्रतीक माना जाता है।

पौराणिक कथा में छिपा सांस्कृतिक संदेश

मान्यता है कि यह क्षेत्र प्राचीनकाल में सबर जनजाति का था। उनके प्रमुख विश्ववसु भगवान नीलमाधव के उपासक थे। राजा इंद्रद्युम्न को स्वप्न में भगवान ने मंदिर निर्माण का आदेश दिया।

भारतीयों की मौत पर सन्नाटा क्यों? ईरान के लिए मुखर रहने वालों से देश पूछ रहा है

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

भारत और ईरान के संबंध सदियों पुराने रहे हैं। सांस्कृतिक विरासत, ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार, चाबहार बंदरगाह और सामरिक सहयोग जैसे अनेक क्षेत्रों में दोनों देशों ने एक-दूसरे का साथ दिया है। हालांकि यह भी सामने आया है कि इस्लाम के नाम पर ईरान ने हमेशा पाकिस्तान का साथ निभाया है, लेकिन अपने व्यापारिक हितों को देखते हुए वह आर्थिक मामलों में भारत के साथ खड़ा दिखा है।

यही कारण भी रहा जो भारत ने हमेशा यह साबित किया कि वह अपने मित्र देशों का संकट की घड़ी में भी साथ देता है। आज जब ह्यहॉर्मुज जलडमरूमध्यह्न में भारतीय नाविकों की मौत और कई भारतीयों के घायल होने की घटना सामने आई है, तब यह प्रश्न पूरे देश के सामने खड़ा है कि क्या भारत के इस मित्रता पूर्ण व्यवहार एवं सम्मान का मान ईरान ने भी रखा है?

विदेश मंत्रालय ने स्वयं स्वीकार किया है कि पश्चिम एशिया में समुद्री जहाजों पर हाल में हुए हमलों में सबसे अधिक भारतीय नागरिक प्रभावित हुए हैं। मंत्रालय ने यह भी स्पष्ट किया कि इस सप्ताह हॉर्मुज जलडमरूमध्य से गुजर रहे दो व्यापारी जहाज, एमटी अल बहियाह और एमटी मोम्बासा हमले का शिकार बने। इन दोनों जहाजों पर कुल 46 चालक दल के सदस्य थे, जिनमें 30 भारतीय नाविक शामिल थे।

एमटी अल बहियाह पर सवार 12 भारतीयों में से एक भारतीय नागरिक की मृत्यु हो गई, जबकि एक अन्य घायल हुआ। एमटी मोम्बासा पर सवार 18 भारतीयों में से 9 भारतीय घायल हुए, जिनमें दो की स्थिति गंभीर बनी हुई है, वह जीवित भी बचेंगे, इसमें संदेह है। हालांकि भारत सरकार ने तत्काल नई दिल्ली स्थित ईरानी दूतावास के मिशन उप प्रमुख को विदेश मंत्रालय तलब कर कड़ा विरोध दर्ज कराया और इन हमलों की तीखी निंदा की।

यदि भारत जैसा संतुलित कूटनीतिक देश किसी मित्र राष्ट्र के राजनयिक को तलब करता है, तो यह अत्यंत गंभीर संदेश होता है। पर क्या इससे भारत की वह जनता समझेगी, जो कल तक ईरान के समर्थन में सड़कों पर उतर रही थी, चंदा इकट्ठा कर मदद के नाम पर ईरान भेज रही थी?

हकीकत में तो आज यह सभी के लिए याद करना आवश्यक है कि भारत ने ईरान के लिए क्या किया। जब ईरान अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों, युद्ध और आर्थिक संकट से जूझ रहा था, तब भारत ने सिर्फ उसके पक्ष में जहां संभव रहा, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बयान जारी किए, साथ ही मानवीय सहायता का बड़ा अभियान भी चलाया।

जीवनरक्षक दवाइयाँ, चिकित्सा उपकरण और आवश्यक मेडिकल सामग्री, वैध और कानूनी माध्यमों से ईरानी रेड क्रिसेंट सोसाइटी तक पहुँचाई गईं। जिसके परिणाम में ईरान सरकार और उसके राजदूत ने सार्वजनिक रूप से भारत सरकार तथा भारतीय जनता के इस सहयोग के लिए आभार भी व्यक्त किया। यानी भारत ने सहानुभूति का प्रदर्शन करने के स्थान पर संकट की घड़ी में ईरान की वास्तविक मदद की।

ईरान के पक्ष में जब भारत में रह रहे शिया मुसलमान धन इकट्ठा कर रहे थे, तब कश्मीर घाटी से लेकर मेरठ, लखनऊ, अमरोहा, हैदराबाद, मुंबई, कारगिल और अन्य क्षेत्रों से नकद राशि के साथ-साथ सोने के आभूषण, चांदी के बर्तन और अन्य मूल्यवान वस्तुएँ ईरान को आर्थिक सहायता के रूप में उपलब्ध कराई गईं। यानी जो भी ईरान के पक्ष में संभव हो सकता था, वह सभी कुछ भारत सरकार ने अपने स्तर पर किया। जहां तक कि भारत के तमाम गैर मुसलमानों ने भी शियाओं के आह्वान पर यथासंभव मदद अपनी ओर से मुहैया कराई।

अमेरिकी प्रतिबंधों और वैश्विक दबाव के बावजूद भारत ने चाबहार बंदरगाह परियोजना को कभी नहीं छोड़ा। यह परियोजना ईरान की अर्थव्यवस्था और उसके अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। जब अनेक अंतरराष्ट्रीय कंपनियाँ ईरान से दूरी बना रही थीं, तब भारत ने निवेश जारी रखा। यह कदम भरोसे और रणनीतिक साझेदारी के आधार पर उठाया गया, किंतु आज सवाल जवाबदेही का है।

वस्तुतः जब भारतीय नागरिकों की जान जाती है, तब भारत को यह पूछने का पूरा अधिकार है कि ऐसी घटनाएँ क्यों हुईं? यदि अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जा सकती, यदि नागरिक जहाजों पर हमले होते हैं और उनमें सबसे अधिक भारतीय प्रभावित होते हैं, तो सिर्फ दुख व्यक्त कर देना पर्याप्त नहीं हो सकता। ऐसे में भारत के प्रत्येक नागरिक को यह जानने का अधिकार है कि ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए ईरान क्या ठोस कदम उठा रहा है।

भारतीय नाविक किसी युद्ध का हिस्सा नहीं

यह भी ध्यान देने योग्य है कि भारत विश्व के सबसे बड़े समुद्री मानव संसाधन प्रदाताओं में शामिल है। हजारों भारतीय व्यापारी जहाजों पर कार्य करते हैं। वे किसी सैन्य अभियान का हिस्सा नहीं होते। वे वैश्विक व्यापार की रीढ़ हैं। ऐसे निर्दोष नागरिकों का किसी भी संघर्ष में शिकार बनना अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानून और मानवीय सिद्धांतों, दोनों के विपरीत है। यदि सबसे अधिक भारतीय नाविक ही प्रभावित हो रहे हैं, तो यह भारत के लिए स्वभाविक तौर पर राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रश्न बन गया है।

अब स्वभाविक है कि इस पूरे घटनाक्रम ने देश के भीतर भी एक गंभीर बहस छेड़ दी है। जैसा कि बताया गया, जब ईरान संकट में था, तब भारत में अनेक स्थानों पर उसके समर्थन में प्रदर्शन हुए। सोशल मीडिया पर अभियान चलाए गए। मानवाधिकारों और अंतरराष्ट्रीय कानून की दुहाई दी गई। करोड़ों रुपये का चंदा जुटाया गया। लोगों ने अपने आभूषण तक दान कर दिए, किंतु आज जब एक भारतीय नागरिक की मृत्यु हुई, अनेक भारतीय घायल हुए और भारत सरकार को स्वयं ईरानी राजनयिक को तलब कर विरोध दर्ज कराना पड़ा, तब वही मुखर आवाजें शांत हैं!

क्या भारतीय नागरिक का जीवन किसी अन्य देश के नागरिक से कम मूल्यवान है? क्या मानवाधिकारों की आवाज तब उठेगी, जब पीड़ित कोई दूसरा होगा? क्या संवेदना भी वैचारिक पसंद और नापसंद देखकर व्यक्त की जाएगी? वस्तुतः ये प्रश्न उन सभी लोगों के लिए हैं जो अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर नैतिकता और मानवाधिकार की बात करते हैं। उन्हें भी आज यह समझना चाहिए कि यदि सिद्धांत सार्वभौमिक हैं, तो भारतीय नागरिक के लिए भी वही संवेदना दिखाई देनी चाहिए।

भारत की विदेश नीति को स्पष्ट संदेश देना होगा

यहां केंद्र की मोदी सरकार से भी ईरान के प्रति कड़ा रुख अपनाने का आग्रह है। बेशक; भारत की विदेश नीति संतुलित है। भारत अमेरिका से भी संबंध रखता है, रूस से भी, इजराइल से भी, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वह किसी देश को ये छूट दे कि वह उसके नागरिकों की हत्या करेगा या उसके यहां हिंसा एवं हत्या होंगी। अब यह अपेक्षा स्वाभाविक है कि ईरान भी उसी स्पष्टता से भारतीय नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करे, इन घटनाओं की निष्पक्ष जांच कराए, जिम्मेदारी तय करे और भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए ठोस एवं विश्वसनीय कदम उठाए। इसके साथ ही भारत में रह रहे सभी शिया मुसलमानों एवं उन सभी से जो कल तक ईरान के साथ खड़े दिखे, उन सभी से अपील है कि वह भारतीयों पर ईरान के समुद्री क्षेत्र में हो रही हिंसात्मक कार्रवाइयों का मुखर विरोध करें।

केंद्र सरकार भी ध्यान रखे, किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति का अंतिम उद्देश्य उसके नागरिकों की सुरक्षा और सम्मान होता है। यदि भारतीय नागरिकों का रक्त बहता है, तो भारत का कठोर प्रश्न पूछना उसका अधिकार से अधिक उसका कर्तव्य भी है। मित्रता सम्मान पर टिकी होती है और सम्मान की पहली शर्त आज भारत-ईरान संबंधों के बीच यही है कि हर देशवासी, भारतवासी का जीवन सर्वोपरि है।

क्या प्रधानमंत्री मोदी की यात्राओं ने विदेश नीति को नई धार दी?

डॉ. अनिल कुमार निगम

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हालिया इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड की यात्राएं केवल औपचारिक राजनयिक कार्यक्रम नहीं बल्कि भारत की बदलती विदेश नीति की दिशा और प्राथमिकताओं का स्पष्ट संकेत भी है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र आज वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और सामरिक प्रतिस्पर्धा का केंद्र बन चुका है। ऐसे समय में भारत का इस क्षेत्र के तीन महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक देशों के साथ अपने संबंधों को नया आयाम देना स्वाभाविक रूप से अंतरराष्ट्रीय महत्व का विषय है।

इन यात्राओं के दौरान रक्षा सहयोग, समुद्री सुरक्षा, व्यापार, निवेश, महत्वपूर्ण खनिज, शिक्षा, डिजिटल प्रौद्योगिकी तथा आपूर्ति श्रृंखला जैसे अनेक क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर सहमति बनी। इससे यह संदेश गया कि भारत अब केवल दक्षिण एशिया तक सीमित शक्ति नहीं बल्कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक जिम्मेदार और प्रभावशाली भागीदार के रूप में अपनी भूमिका को विस्तार देना चाहता है। लेकिन इन यात्राओं के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण प्रश्न भी उठता है। क्या केवल दूरवर्ती देशों के साथ संबंध मजबूत करने से भारत की विदेश नीति सफल मानी जाएगी, जबकि उसके पड़ोस में चीन, पाकिस्तान, नेपाल और बांग्लादेश जैसी जटिल चुनौतियां अभी भी मौजूद हैं? यही प्रश्न भारत की वर्तमान विदेश नीति के वास्तविक मूल्यांकन का आधार बनता है।

भारत की विदेश नीति आज रणनीतिक स्वायत्तता के सिद्धांत पर आधारित है। शीतयुद्ध के दौर की गुटनिरपेक्षता अब एक नए स्वरूप में विकसित हो चुकी है। भारत, अमेरिका के साथ रक्षा और तकनीकी सहयोग बढ़ाता है, रूस से रक्षा संबंध बनाए रखता है, फ्रांस और जापान के साथ सामरिक साझेदारी करता है तथा वैश्विक दक्षिण के देशों की आवाज भी बनता है। यही संतुलन उसकी सबसे बड़ी कूटनीतिक शक्ति है।

इंडोनेशिया की यात्रा इस दृष्टि से विशेष महत्व रखती है क्योंकि यह देश मलक्का जलडमरूमध्य के निकट स्थित है। विश्व के बड़े हिस्से का समुद्री व्यापार इसी मार्ग से होकर गुजरता है। भारत के लिए ऊर्जा सुरक्षा और समुद्री व्यापार की दृष्टि से इंडोनेशिया अत्यंत महत्वपूर्ण साझेदार है। समुद्री सुरक्षा और ब्लू इकोनॉमी पर बढ़ता सहयोग भारत की सागर नीति को मजबूती देता है। ऑस्ट्रेलिया के साथ संबंध पिछले कुछ वर्षों में अभूतपूर्व रूप से मजबूत हुए हैं। दोनों देश क्वाड के सदस्य हैं और मुक्त तथा नियम-आधारित हिंद-प्रशांत व्यवस्था के समर्थक हैं। महत्वपूर्ण खनिजों की उपलब्धता, रक्षा सहयोग, साइबर सुरक्षा और स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में ऑस्ट्रेलिया भारत के लिए दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदार बनकर उभरा है। यह सहयोग केवल सुरक्षा तक सीमित नहीं है बल्कि भारत की औद्योगिक और तकनीकी आत्मनिर्भरता से भी जुड़ा हुआ है।

न्यूजीलैंड की यात्रा प्रतीकात्मक से कहीं अधिक महत्वपूर्ण रही। लंबे समय बाद दोनों देशों के बीच उच्चस्तरीय राजनीतिक संवाद ने शिक्षा, कृषि, डेयरी, पर्यटन और डिजिटल अर्थव्यवस्था में सहयोग की नई संभावनाएं खोली हैं। वहां का भारतीय मूल का समुदाय भी दोनों देशों के संबंधों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

निःस्संदेह, इन तीनों यात्राओं ने भारत की वैश्विक कूटनीतिक उपस्थिति को मजबूत किया है। अंतरराष्ट्रीय मंच पर यह संदेश गया कि भारत हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता, नियम-आधारित व्यवस्था और बहुपक्षीय सहयोग का समर्थक है। लेकिन भारत की सबसे बड़ी चुनौती उसका अपना पड़ोस है। पाकिस्तान के साथ सीमा पार आतंकवाद, चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा पर तनाव, नेपाल के साथ समय-समय पर उत्पन्न होने वाले राजनीतिक मतभेद तथा बांग्लादेश के साथ सीमा प्रबंधन, अवैध घुसपैठ और जल बंटवारे जैसे मुद्दे आज भी भारत की विदेश नीति की वास्तविक परीक्षा लेते हैं।

किसी भी उभरती वैश्विक शक्ति के लिए आवश्यक है कि वह विश्व के प्रमुख देशों के साथ संबंध मजबूत करे। किंतु यह भी उतना ही सत्य है कि यदि पड़ोस अस्थिर रहेगा तो वैश्विक प्रभाव भी सीमित हो सकता है। विदेश नीति का पहला दायित्व अपने सामरिक परिवेश को सुरक्षित और स्थिर बनाना होता है। यहीं पर भारत की विदेश नीति के सामने सबसे बड़ी चुनौती दिखाई देती है। भारत ने पड़ोसी प्रथम की नीति अवश्य अपनाई है लेकिन इसका प्रभाव सभी पड़ोसी देशों में समान रूप से दिखाई नहीं देता। चीन की बढ़ती आर्थिक और सामरिक सक्रियता दक्षिण एशिया में भारत के लिए प्रतिस्पर्धा की स्थिति उत्पन्न करती है। नेपाल, श्रीलंका और बांग्लादेश जैसे देशों में भी चीन का निवेश लगातार बढ़ा है। इसलिए केवल वैश्विक साझेदारियां पर्याप्त नहीं होंगी बल्कि पड़ोसी देशों के साथ विश्वास और सहयोग को भी उतनी ही प्राथमिकता देनी होगी।

हालाँकि यह कहना भी उचित नहीं होगा कि दूरवर्ती देशों के साथ भारत की सक्रियता पड़ोस की उपेक्षा का संकेत है। वास्तव में आधुनिक विदेश नीति बहुआयामी होती है। एक ओर पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को मजबूत करना आवश्यक है, वहीं वैश्विक शक्तियों और रणनीतिक साझेदारों के साथ सहयोग भी उतना ही महत्वपूर्ण है। भारत आज इसी संतुलन को साधने का प्रयास कर रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी की इन यात्राओं का सबसे बड़ा संदेश यह है कि भारत अब केवल प्रतिक्रियात्मक विदेश नीति नहीं अपना रहा बल्कि सक्रिय कूटनीति के माध्यम से अपने हितों को वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ा रहा है। रक्षा सहयोग, आर्थिक साझेदारी, डिजिटल प्रौद्योगिकी, समुद्री सुरक्षा और आपूर्ति श्रृंखला जैसे क्षेत्रों में नई पहल भविष्य में भारत की रणनीतिक क्षमता को और मजबूत कर सकती है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड यात्राएं भारत की विदेश नीति को नई ऊर्जा देने वाली महत्वपूर्ण पहल हैं। इन्होंने भारत की कूटनीतिक पहुंच, रणनीतिक विश्वसनीयता और वैश्विक साझेदारी को मजबूत किया है। किंतु भारत की विदेश नीति की वास्तविक सफलता तभी मानी जाएगी, जब वह दूर के मित्रों के साथ बढ़ते संबंधों के साथ-साथ अपने पड़ोस को भी शांत, स्थिर और सहयोगपूर्ण बनाने में समान रूप से सफल होगी।

ग्राम सभा पर बढ़ता संकट: आजीविका की जद्दोजहद में सिमटती लोकतांत्रिक जनभागीदारी

बलकार सिंह पूनियां

भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत उसकी विकेंद्रीकृत शासन व्यवस्था है, जिसकी आधारशिला ग्राम सभा है। संविधान के 73वें संशोधन ने ग्राम सभा को केवल एक वैधानिक संस्था नहीं, बल्कि ग्रामीण स्वशासन की सर्वोच्च इकाई के रूप में स्थापित किया, जहाँ प्रत्येक मतदाता स्थानीय विकास, पंचायत के बजट, सरकारी योजनाओं, सामाजिक अंकेक्षण और जनहित के निर्णयों में प्रत्यक्ष भागीदारी कर सकता है। महात्मा गांधी का ग्राम स्वराज भी इसी विचार पर आधारित था कि विकास का वास्तविक केंद्र गांव और उसकी जनता हो। लेकिन यदि गांव का नागरिक ही ग्राम सभा से दूरी बनाने लगे, तो यह केवल पंचायत व्यवस्था का नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की बुनियाद का संकट है।

इसी क्रम में पंचायती राज मंत्रालय के निर्देशन में राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान (एनआईआरडीपीआर), हैदराबाद द्वारा कराए गए ग्राम सभाओं में कम भागीदारी पर राष्ट्रीय अध्ययन ने ग्रामीण लोकतंत्र की वर्तमान स्थिति और उससे जुड़ी चुनौतियों को स्पष्ट रूप से सामने रखा है। 26 राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों की लगभग 400 ग्राम पंचायतों तथा 7,800 से अधिक उत्तरदाताओं पर आधारित यह अध्ययन बताता है कि ग्राम सभाओं में घटती भागीदारी किसी एक कारण का परिणाम नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक और मनोवैज्ञानिक कारणों का सम्मिलित प्रभाव है। रिपोर्ट का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि समस्या केवल लोगों के ग्राम सभा में न आने की नहीं, बल्कि ग्राम सभा के प्रति घटते विश्वास की है।

अध्ययन के अनुसार 55.50 प्रतिशत ग्रामीणों ने रोजगार, मजदूरी और आजीविका के दबाव को बैठकों में भाग न लेने का सबसे बड़ा कारण बताया। 30.26 प्रतिशत लोग खेती-किसानी के कार्यों के कारण बैठकों में नहीं पहुँच सके, जबकि 16.22 प्रतिशत लोगों ने स्वीकार किया कि उन्हें बैठकों की सूचना समय पर नहीं मिलती। यह स्पष्ट संकेत है कि ग्राम सभा की बैठकें अभी भी ग्रामीण जीवन की वास्तविक परिस्थितियों, कृषि चक्र और स्थानीय कार्य संस्कृति के अनुरूप आयोजित नहीं हो पा रही हैं। जब किसान खेत में, मजदूर रोजगार पर और युवा शिक्षा या रोजगार के लिए गांव से बाहर हों, तब केवल बैठक बुला देने से जनभागीदारी सुनिश्चित नहीं हो सकती।

रिपोर्ट का सबसे चिंताजनक पहलू युवाओं और प्रवासी परिवारों की घटती भागीदारी है। अध्ययन में 17.61 प्रतिशत प्रवासी परिवार, 16.73 प्रतिशत युवा, 15.80 प्रतिशत बुजुर्ग तथा 13.40 प्रतिशत महिलाएँ अपेक्षाकृत कम प्रतिनिधित्व वाले वर्गों में शामिल पाए गए। यह केवल आंकड़ों का विषय नहीं, बल्कि लोकतंत्र के भविष्य का प्रश्न है। आज का शिक्षित युवा तभी किसी संस्था से जुड़ना चाहता है जब उसे लगे कि उसकी बात सुनी जाएगी और उसका सुझाव वास्तविक निर्णयों में स्थान पाएगा। यदि पंचायतें नई पीढ़ी का विश्वास नहीं जीत पाएँगी, तो भविष्य का स्थानीय नेतृत्व भी कमजोर होगा। रिपोर्ट में ग्राम सभा सहभागिता थकान की अवधारणा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसका तात्पर्य यह है कि ग्राम सभा से लोगों की दूरी केवल समयाभाव का परिणाम नहीं, बल्कि लगातार उपेक्षा और निराशा का भी दुष्परिणाम है। जब वर्षों तक बैठकों में उठाए गए मुद्दों पर ठोस कार्रवाई नहीं होती, निर्णय कागजों तक सीमित रह जाते हैं और वही चर्चाएँ बार-बार दोहराई जाती हैं, तब नागरिकों का उत्साह क्षीण होने लगता है और ग्राम सभा के प्रति उनका विश्वास भी डगमगाने लगता है।। अध्ययन में 45.46 प्रतिशत लोगों ने पारदर्शिता की कमी, 42 प्रतिशत ने चर्चाओं की अप्रासंगिकता, 33.4 प्रतिशत ने बार-बार दोहराई जाने वाली चर्चाओं तथा 32.7 प्रतिशत ने विश्वास के संकट को भागीदारी घटने का प्रमुख कारण बताया। इसी प्रकार 86.78 प्रतिशत लोगों ने माना कि ग्राम सभा में शिकायतें दर्ज होती हैं, लेकिन केवल 63.29 प्रतिशत मामलों में ही उन पर कार्रवाई होती है। यही अंतर लोगों को यह महसूस कराता है कि उनकी उपस्थिति से वास्तविक परिवर्तन नहीं होता।

यदि देश के किसी भी राज्य की ग्राम सभाओं का व्यावहारिक अवलोकन किया जाए तो यह अध्ययन जमीनी वास्तविकता से मेल खाता दिखाई देता है। अनेक स्थानों पर ग्राम सभाएँ केवल औपचारिक बैठक बनकर रह गई हैं। सूचना समय पर नहीं पहुँचती, एजेंडा पहले से सार्वजनिक नहीं होता, निर्णयों का अनुपालन कमजोर रहता है और कई बार कोरम पूरा करना भी चुनौती बन जाता है। युवा रोजगार या पढ़ाई के कारण बाहर रहते हैं, किसान खेतों में व्यस्त होते हैं और दैनिक मजदूर अपनी मजदूरी छोड़कर बैठक में आने से बचते हैं। महिलाओं की उपस्थिति बढ़ी है, लेकिन निर्णय प्रक्रिया में उनकी प्रभावी भूमिका अभी भी सीमित है। ऐसी परिस्थितियाँ धीरे-धीरे लोकतांत्रिक भागीदारी को औपचारिकता में बदल देती हैं।

हालाँकि यह अध्ययन केवल समस्याओं की पहचान नहीं करता, बल्कि समाधान का स्पष्ट मार्ग भी सुझाता है। 48.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जागरूकता और व्यापक प्रचार-प्रसार को भागीदारी बढ़ाने का सबसे प्रभावी उपाय माना, जबकि 22.2 प्रतिशत लोगों ने घर-घर जनसंपर्क अभियान का सुझाव दिया। अध्ययन में कई राज्यों की अभिनव पहलें भी उल्लेखनीय हैं। केरल ने ग्राम सभा को स्थानीय विकास योजना का केंद्र बनाया, पंजाब ने विवाह निमंत्रण-पत्र की तर्ज पर ग्राम सभा के आमंत्रण भेजे, बिहार ने स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई, असम ने घर-घर सूचना पहुँचाने की प्रणाली विकसित की और झारखंड ने ग्राम सभा को लोकतंत्र के सक्रिय केंद्र के रूप में मजबूत करने की दिशा में प्रभावी प्रयास किए। ये उदाहरण बताते हैं कि इच्छाशक्ति, नवाचार और पारदर्शिता के माध्यम से ग्राम सभा को पुनः जनविश्वास का मंच बनाया जा सकता है।

अब आवश्यकता केवल ग्राम सभाओं की संख्या बढ़ाने की नहीं, बल्कि उनकी गुणवत्ता, पारदर्शिता, प्रभावशीलता और जनविश्वसनीयता को सुदृढ़ बनाने की है। ग्राम सभा की बैठकों का समय स्थानीय परिस्थितियों, कृषि चक्र और ग्रामीणों की सुविधा को ध्यान में रखकर निर्धारित किया जाए। बैठक की कार्यसूची पहले से ही सार्वजनिक कर दी जाए तथा प्रत्येक बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई कार्रवाई का कार्यवाही प्रतिवेदन अनिवार्य रूप से प्रस्तुत किया जाए। शिकायतों के त्वरित एवं समयबद्ध निस्तारण की प्रभावी व्यवस्था विकसित की जाए। साथ ही, संदेश सेवा, मोबाइल संदेश, ई-ग्राम स्वराज व्यवस्था, डिजिटल सूचना पट्ट तथा अन्य डिजिटल संचार माध्यमों का व्यापक उपयोग कर प्रत्येक नागरिक तक समय पर सूचना पहुँचाई जाए। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि युवाओं, महिलाओं, किसान संगठनों, स्वयं सहायता समूहों, शैक्षणिक संस्थानों तथा सामुदायिक संगठनों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए, ताकि ग्राम सभा की निर्णय प्रक्रिया अधिक समावेशी, सहभागी, पारदर्शी, उत्तरदायी और जनोन्मुखी बन सके

विकसित भारत-2047 का लक्ष्य केवल आर्थिक विकास से प्राप्त नहीं होगा; इसके लिए लोकतांत्रिक संस्थाओं में जनता का विश्वास भी उतना ही आवश्यक है। ग्राम सभा केवल पंचायत की बैठक नहीं, बल्कि जनभागीदारी, पारदर्शिता, सामाजिक उत्तरदायित्व और लोकतांत्रिक विश्वास का सबसे सशक्त मंच है। यदि इस मंच पर जनता की उपस्थिति कम होती रही, तो लोकतंत्र की नींव भी कमजोर होगी। इसलिए आज सबसे बड़ी आवश्यकता ग्राम सभा की खाली कुर्सियाँ भरने की नहीं, बल्कि लोगों के मन में विश्वास भरने की है। यही सशक्त ग्राम सभा, सशक्त पंचायत और अंततः सशक्त भारत की सबसे मजबूत नींव सिद्ध होगी। (लेखक इग्नू के ग्रामीण विकास में सहायक प्रोफेसर हैं)

भारत में धर्म और राजनीति को अलग क्यों नहीं देखा गया?

दीपक कुमार द्विवेदी

आज के बौद्धिक विमर्शों में एक विचार बार-बार सुनाई देता है, वह है, राज्य का कोई धर्म नहीं होना चाहिए। धर्म व्यक्ति का निजी विषय है और राजनीति को उससे अलग रखा जाना चाहिए। यह अवधारणा आधुनिक लोकतांत्रिक विमर्श का महत्वपूर्ण हिस्सा है, किंतु क्या यह भारतीय सभ्यता की मूल चेतना से मेल खाती है? यही प्रश्न आज गंभीर चर्चा की मांग करता है। दरअसल, भारतीय और पश्चिमी राजनीतिक दर्शन की आधारभूमि अलग-अलग रही है। भारत में जिस धर्म की चर्चा होती है, वह पश्चिम के रिलीजन का पर्याय नहीं है। इसी मूलभूत अंतर की अनदेखी ने लंबे समय से वैचारिक भ्रम उत्पन्न किया है।

भारतीय दर्शन में धर्म का अर्थ किसी विशेष मत, संप्रदाय या पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं है। महर्षि वेदव्यास ने कहा है, धारणाद् धर्ममित्याहुः, अर्थात जो समाज और सृष्टि को धारण करे, वही धर्म है। सत्य, न्याय, कर्तव्य, मयार्दा, करुणा और लोककल्याण, ये सभी धर्म के अंग हैं। इसी कारण भारतीय परंपरा में स्वधर्म, राजधर्म, राष्ट्रधर्म और सनातन धर्म जैसी अवधारणाएँ विकसित हुईं। यहाँ धर्म व्यक्ति के निजी जीवन से आगे बढ़कर समाज और राज्य की नैतिक दिशा निर्धारित करता है। सेक्युलरिज्म की उत्पत्ति और भारतीय संदर्भः यूरोप में सेक्युलरिज्म का जन्म चर्च और राजसत्ता के बीच सदियों तक चले संघर्ष की पृष्ठभूमि में हुआ। धार्मिक संस्थाओं के राजनीतिक हस्तक्षेप से उत्पन्न टकराव ने राज्य और चर्च को अलग करने की आवश्यकता पैदा की। भारत का अनुभव इससे बिल्कुल भिन्न रहा। यहाँ राजा स्वयं धर्म के अधीन माना गया। महाभारत से लेकर अर्थशास्त्र और रामायण तक भारतीय ग्रंथों में राजा की शक्ति का स्रोत धर्म और न्याय को माना गया है, न कि उसकी व्यक्तिगत इच्छा को, इसलिए भारतीय चिंतन में राजनीति का उद्देश्य सत्ता नहीं, बल्कि धर्मसम्मत शासन और लोकमंगल रहा है।

राजधर्म : भारतीय शासन-दर्शन की आत्माः भारतीय इतिहास में आदर्श शासक वही माना गया जिसने राजधर्म का पालन किया। भगवान श्रीराम को मयार्दा पुरुषोत्तम इसलिए कहा गया क्योंकि उन्होंने व्यक्तिगत सुख से ऊपर राजधर्म को रखा। महाभारत में भीष्म, विदुर और श्रीकृष्ण बार-बार शासक को धमार्धारित शासन का उपदेश देते हैं। कौटिल्य का अर्थशास्त्र भी स्पष्ट करता है कि राज्य का अस्तित्व केवल शक्ति प्रदर्शन के लिए नहीं, बल्कि प्रजा की सुरक्षा, न्याय और समृद्धि के लिए है। यही कारण है कि भारतीय राजनीति में धर्म का अर्थ किसी धार्मिक वर्चस्व से अधिक नैतिक उत्तरदायित्व रहा है। ऋतम्‍ और पुरुषार्थ : संतुलित जीवन का दर्शनः वैदिक साहित्य में समस्त सृष्टि एक शाश्वत व्यवस्था के अधीन मानी गई है, जिसे ऋतम्‍ कहा गया है। इसी व्यवस्था के अनुरूप मानव जीवन के चार पुरुषार्थ- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष निर्धारित किए गए। इनमें धर्म को प्रथम स्थान इसलिए दिया गया क्योंकि वही अर्थ और काम को मर्यादित करता है। यदि समाज से धर्म का नैतिक नियंत्रण समाप्त हो जाए, तो आर्थिक विकास भी स्वार्थ का माध्यम बन सकता है और व्यक्तिगत स्वतंत्रता अराजकता में बदल सकती है। भारतीय दर्शन इसी संतुलन पर बल देता है।

विज्ञान और अध्यात्म : विरोध नहीं, समन्वयः भारतीय परंपरा आधुनिक विज्ञान का विरोध नहीं करती, बल्कि ज्ञान के व्यापक स्वरूप को स्वीकार करती है। आधुनिक विज्ञान मुख्यतः भौतिक जगत की व्याख्या करता है, जबकि भारतीय दर्शन चेतना, प्रकृति और ब्रह्मांड के आध्यात्मिक आयामों पर भी विचार करता है। उपनिषदों और भगवद्गीता का संदेश है कि भौतिक प्रगति आवश्यक है, किंतु उसके साथ आत्मबोध और नैतिकता का संतुलन भी उतना ही आवश्यक है। यही कारण है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में विज्ञान और अध्यात्म को परस्पर पूरक माना गया है।

भारतीय आख्यानों को उनके संदर्भ में समझने की आवश्यकताः भारतीय महाकाव्यों और पुराणों की अनेक कथाओं को केवल आधुनिक वैज्ञानिक कसौटी पर परखने से उनके सांस्कृतिक और दार्शनिक अर्थ छूट जाते हैं। परंपरागत आचार्यों ने इन प्रसंगों को प्रतीकात्मक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संदर्भों में समझाया है। भारतीय ज्ञान परंपरा का आग्रह है कि किसी भी ग्रंथ का मूल्यांकन उसकी अपनी दार्शनिक पृष्ठभूमि में किया जाए, न कि केवल आधुनिक पश्चिमी दृष्टिकोण से।

फोर्टिस नोएडा ने लैपरोस्कोपिक डुअल-लोब लिविंग डोनर लिवर किया ट्रांसप्लांट

फोर्टिस हॉस्पीटल नोएडा ने एक शानदार उपलब्धि अपने नाम दर्ज कराते हुए दुनिया में पहली बार लैपरोस्कोपिक डुअल-लोब लिविंग डोनर लिवर ट्रांसप्लांट को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है। इस जटिल प्रक्रिया को किर्गिस्तान के 51-वर्षीय मरीज पर किया गया जो हेपेटाइटिस बी इंफेक्शन से प्रभावित होने के बाद एंड-स्टेज लिवर रोग से ग्रस्त हो चुके थे। डॉ विवेक विज, चेयरमैन, लिवर ट्रांसप्लांट एंड हेपाटोबिलियरी साइंसेज, फोर्टिस हॉस्पीटल नोएडा के नेतृत्व में, अस्पताल की मल्टीडिसीप्लीनरी ट्रांसप्लांट टीम द्वारा की गई इस सर्जरी के परिणाम सकारात्मक रहे। सर्जरी के बाद, मरीज को स्थिर हालत में अस्पताल से छुट्टी दी गई, जबकि उनकी दोनों बेटियों ने भी, जिनकी उम्र 20 और 21 वर्ष थी, ठीक प्रकार से स्वास्थ्यलाभ कर लिया है और अब उनकी हालत ठीक है। दुनिया में यह अपनी किस्म का पहला मामला है, जिसमें दोनों डोनर्स की लिवर डोनेशन सर्जरी को मिनीमॅली इन्वेसिव लैपरोस्कोपिक तकनीकों की सहायता से किया गया, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें कम दर्द हुआ, छोटे आकार के चीरे लगाने से सर्जरी के बाद कम तकलीफ से गुजरना पड़ा और रिकवरी भी तेजी से हुई। प्रत्येक डोनर सर्जरी करीब पांच घंटे चली जबकि रेसिपिएंट ट्रांसप्लांट सर्जरी को लगभग आठ घंटे में पूरा किया गया। मरीज के शरीर से निकाले गए लिवर की बाद में जांच से क्रोनिक हेपेटाइटिस की पुष्टि हुई जो हेपेटाइटिस बी और हेपेटाइटिस डी इंफेक्शन की वजह से हुआ था। साथ ही, लिवर को नुकसान भी काफी अधिक पहुंचा था। मरीज को डीकम्पन्सेटेड क्रोनिक लिवर रोग (लिवर फेलियर की गंभीर स्टेज जिसमें मरीज जॉन्डिस से पीड़ित होता है) की शिकायत के साथ फोर्टिस हॉस्पीटल नोएडा में भर्ती किया गया था। वह जॉन्डिस, रेकरेन्ट एसाइटिस (पेट में अत्यधिक मात्रा में तरल पदार्थ के असामान्य रूप से एकत्र होना), गैस्ट्रोइंस्टेस्टाइनल ब्लीडिंग तथा ऑल्टर्ड कॉन्शसनेस (चेतना में बदलाव) से भी पीड़ित थे।

मरीज की विस्तृत मेडिकल जांच से लिवर फेलियर, पोर्टल हाइपरटेंशन, गंभीर किस्म के थ्रोम्बोसाइटोपीनिया (ऐसी मेडिकल कंडीशन जिसमें खून में प्लेटलेट्स की संख्या असामान्य रूप से कम हो जाती है) तथा खून का थक्का जमने में परेशानी जैसी समस्याओं की भी पुष्टि हुई। मरीज की मेटाबोलिक जरूरतों को देखते हुए सिंगल डोनर ग्राफ्ट अपर्याप्त था, तब ट्रांसप्लांट टीम ने मरीज की दोनों बेटियों द्वारा दिए गए लिवर ग्राफ्ट की मदद से डुअल-लोब लिविंग डोनर लिवर ट्रांसप्लांट करने का फैसला किया।

इस मामले की जानकारी देते हुए डॉ विवेक विज, चेयरमैन, लिवर ट्रांसप्लांट एंड हेपाटोबिलियरी साइंसेज, फोर्टिस हॉस्पीटल नोएडा ने कहा डुअल लोब लिविंग डोनर लिवर ट्रांसप्लांटेशन वास्तव में, ट्रांसप्लांट सर्जरी के क्षेत्र में तकनीकी दृष्टि से सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण मानी जाती है और दुनिया में कुछ गिने-चुने केंद्रों पर ही इसे किया जाता है। दोनों डोनर्स के मामले में इसे पूरी तरह से लैपरोस्कोपिक तरीके से करना लिविंग डोनर लिवर ट्रांसप्लांटेशन की भी प्रमुख उपलब्धि है। इस मिनीमॅली इन्वेसिव तकनीक से मरीज को कम दर्द होता है, रक्तस्राव भी कम होता है और अस्पताल में रुकने तथा रिकवरी के समय में भी कमी आती है, और साथ ही, डोनर सुरक्षा के सर्वोच्च मानकों का भी पालन सुनिश्चित किया जाता है। इस उपलब्धि ने उन मरीजों के लिए भी उम्मीद दिखायी है जिन्हें बड़े लिवर ग्राफ्ट वॉल्यूम की आवश्यकता है और साथ ही, यह लिविंग डोनर्स की सुरक्षा तथा रिकवरी में भी सुधार करती है। यह डोनर की सुरक्षा के साथ समझौता किए बगैर सर्जरी के ट्रॉमा को भी कम करती है, और इस तरह से हम उक्त मामले में डोनर्स की सुरक्षा का पूरा ध्यान रखने के साथ-साथ ऐसे मरीज के लिए जीवनरक्षक प्रत्यारोपण को सफलतापूर्वक अंजाम दे सके जो अन्यथा लिवर रोग के गंभीर होने के साथ-साथ अपरिवर्तनीय लिवर फेलियर के शिकार बन सकते थे। मोहित सिंह, जोनल डायरेक्टर, फोर्टिस हॉस्पीटल नोएडा ने कहा ट्रांसप्लांट संबंधी इस उपलब्धि ने क्लीनिकल उत्कृष्टता और नवाचार की दिशा में हमारे अथक प्रयासों को प्रदर्शित किया है।

इसने न केवल लिविंग डोनर लिवर ट्रांसप्लांटेशन की सीमाओं में विस्तार किया है बल्कि फोर्टिस हॉस्पीटल नोएडा की बेहद जटिल किस्म के लिवर ट्रांसप्लांटेशन की भरोसेमंद वैश्विक मंजिल के तौर पर भी साख बढ़ायी है।

Frigate GreenTech Energy Pvt Ltd
Frigate
SolarTech
A SOLAR POWER SOLUTION
Onsite services with trust ..
SOLAR POWER SOLUTIONS
Efficient & reliable solar solutions for a sustainable future.
ON-SITE SERVICES
Professional installation, testing, commissioning & maintenance at your site.
TRUST & RELIABILITY
Building long-term relationships through honesty, quality & support.
CLEAN ENERGY
Reduce carbon footprint and save on energy costs.
TRUST
QUALITY
PERFORMANCE
COMMITMENT
POWERING A
BRIGHTER TOMORROW
SAVE ENERGY COST
INCREASE PROPERTY VALUE
ECO FRIENDLY SOLUTION
RELIABLE SUSTAINABLE ENERGY
OUR SOLAR POWER & ENERGY SOLUTIONS
ROOFTOP SOLAR SYSTEM
Grid-tied Rooftop Solutions for Homes, Businesses & Industries.
SOLAR PLANT INSTALLATION
On-grid, Off-grid & Hybrid Solar Power Plant Solutions.
SOLAR INVERTERS
High Performance Inverters for Maximum Energy Efficiency.
SOLAR BATTERIES & ENERGY STORAGE
Reliable Energy Storage Solutions for Uninterrupted Power Supply.
SOLAR STRUCTURE & MOUNTING
Durable & Corrosion Resistant Structures for Long Life.
OPERATION & MAINTENANCE
Comprehensive AMC & Support for Optimal Performance.
Frigate SolarTech
EXPERT ENGINEERS
QUALITY ASSURANCE
TIMELY EXECUTION
AFTER SALES SUPPORT
CUSTOMER SATISFACTION
HIGH ROI & LONG TERM SAVINGS
FOR INQUIRY PLEASE CONTACT
+ 91- 9871700893
frigategreentech@gmail.com
C-65, 4th floor DDA Shed, Okhla Industrial Area Phase 1,
New Delhi 110020, India
CLEAN ENERGY FOR A BETTER PLANET
SMART SOLAR STRONGER FUTURE
GO SOLAR GO GREEN
SUSTAINABLE TODAY BETTER TOMORROW

नए अध्ययन में चौंकाने वाला खुलासा

फिश ऑॅयल कैप्सूल अल्जाइमर में फायदेमंद

पुरी, 16 जुलाई (एजेंसियां)। बहुत से लोग दिमाग को तेज रखने और याददाश्त बेहतर करने के लिए फिश ऑयल कैप्सूल लेते हैं। इसकी वजह है इसमें मौजूद ओमेगा-3 फैटी एसिड, खासकर डीएचए जिसे दिमाग की सेहत के लिए जरूरी माना जाता है। कई लोगों को उम्मीद होती है कि ये सप्लीमेंट भविष्य में अल्जाइमर जैसी बीमारी के खतरे को कम कर सकते हैं। हालांकि एक नई स्टडी ने इसको लेकर चौंकाने वाला खुलासा हुआ।

अमेरिका की केक मेडिसिन ऑफ यूएससी की रिसर्च में पाया गया कि फिश ऑयल सप्लीमेंट लेने से अल्जाइमर बीमारी से बचाव में कोई खास फायदा नहीं मिला। हालांकि, स्टडी में यह जरूर सामने आया कि फिश ऑयल में मौजूद डीएचए दिमाग तक पहुंचा, लेकिन इससे याददाश्त या सोचने-समझने की क्षमता में कोई बड़ा सुधार नहीं दिखा। यह रिसर्च ईबायोमेडिसिन जर्नल में प्रकाशित हुई है। इस रिसर्च में 55 से 80 साल की उम्र के 365 लोगों को शामिल किया गया। ये सभी लोग बहुत कम मछली खाते थे और उनमें अल्जाइमर का खतरा ज्यादा माना जा रहा था। इनमें से करीब आधे लोगों में एपीओई4 जीन भी था, जो अल्जाइमर बीमारी के बढ़ते जोखिम से जुड़ा माना जाता है। शोधकर्ताओं ने प्रतिभागियों को दो समूहों में बांटा। एक समूह को दो साल तक ज्यादा मात्रा वाला डीएचए सप्लीमेंट दिया गया, जबकि दूसरे समूह को प्लेसिबो यानी

- अध्ययन में 55 से 80 साल की उम्र के 365 लोग शामिल
- दिमाग की सेहत पर कई चीजों का असर

ऐसी गोली दी गई जिसमें कोई सक्रिय तत्व नहीं था। इस दौरान लोगों की याददाश्त, सोचने की क्षमता और दिमाग में होने वाले बदलावों की जांच की गई।

स्टडी में एक महत्वपूर्ण बात सामने आई कि फिश ऑयल से मिला डीएचए वास्तव में दिमाग तक पहुंच रहा था। छह महीने बाद प्रतिभागियों के दिमाग के आसपास मौजूद तरल पदार्थ में डीएचए का स्तर औसतन 17 प्रतिशत तक बढ़ गया। लेकिन इसके बावजूद सोचने-समझने की क्षमता या याददाश्त में कोई खास अंतर नहीं देखा गया।

दिमाग के उस हिस्से हिप्पोकैंपस, जो याददाश्त के लिए बेहद जरूरी होता है, उसकी जांच में भी फिश ऑयल लेने वाले और न लेने वाले लोगों के बीच कोई बड़ा अंतर नहीं मिला। यानी शरीर में पोषक तत्व पहुंचने के बाद भी उसका असर वैसा नहीं दिखा, जिसकी उम्मीद की जा रही थी।

वैज्ञानिकों का कहना है कि सिर्फ एक पोषक तत्व बढ़ाने से अल्जाइमर जैसी जटिल बीमारी को रोका नहीं जा सकता। दिमाग की सेहत पर कई चीजों का असर पड़ता है, जैसे उम्र, जेनेटिक्स, खानपान, शारीरिक गतिविधि और जीवनशैली।

शोधकर्ताओं का मानना है कि ओमेगा-3 फैटी एसिड अगर प्राकृतिक तरीके से संतुलित डाइट के जरिए मिले, तो उसका फायदा ज्यादा हो सकता है। जैसे मेडिटेरेनियन डाइट, जिसमें मछली, फल, सब्जियां, साबुत अनाज और स्वस्थ वसा शामिल होते हैं। सिर्फ कैप्सूल खाने से वही फायदा मिलना जरूरी नहीं है।

रियलिटी शो में दिखता है कलाकार का असली चेहरा : ईशा सिंह

झमुंबई, 16 जुलाई (एजेंसियां)। टीवी अभिनेत्री ईशा सिंह 'बिग बॉस 18' में नजर आने के बाद काफी सुर्खियों में रही हैं। अब उन्होंने रियलिटी शो और एक्टिंग की दुनिया के बीच के फर्क को लेकर अपनी राय साझा की है। उनका मानना है कि रियलिटी शो कलाकार के असली स्वभाव को समझने का मौका देते हैं। जब कोई कलाकार रियलिटी शो में आता है तो दर्शक उसे उसके निभाए किरदारों से अलग एक इंसान के रूप में जान पाते हैं। ईशा सिंह ने कहा कि मुझे नहीं पता कि इससे किसी कलाकार की लोकप्रियता कितनी बढ़ती है, लेकिन दर्शकों को अपने पसंदीदा सितारों की निजी जिंदगी के बारे में जानने में हमेशा दिलचस्पी रहती है। लोग बिहाइंड द सीन्स जैसी चीजें इसलिए देखना पसंद करते हैं, क्योंकि वे कलाकार को और करीब से जानना चाहते हैं। जब कोई कलाकार किसी रियलिटी शो में आता है तो दर्शकों को उसके असली स्वभाव, व्यवहार और पसंद-नापसंद को समझने का मौका मिलता है। अभिनेत्री ने उदाहरण देते हुए कहा कि दर्शक मेरे निभाए किरदारों जैसे जुही और सैयम को जानते हैं, लेकिन असल जिंदगी में ईशा कैसी हैं, उनका व्यवहार कैसा है और वह किस तरह की इंसान हैं, यह जानने का मौका रियलिटी शो से ही मिलता है। रियलिटी शो में कोई किरदार नहीं होता और न ही कोई अभिनय का पर्दा होता है, बल्कि वहां कलाकार खुद के रूप में सामने आता है।

आईआईटी ने विकसित की कृत्रिम चंद्र मिट्टी

चंद्रमा पर निर्माण तकनीक के शोध को मिली गति

वाराणसी, 16 जुलाई (एजेंसियां)। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी-बीएचयू) के वैज्ञानिकों ने भारत के भावी चंद्र अभियानों और दीर्घकालिक मानव अंतरिक्ष मिशनों की दिशा में महत्वपूर्ण सफलता हासिल करते हुए चंद्रमा की सतह जैसी कृत्रिम चंद्र मिट्टी (लूनर सॉइल सिमुलेंट) विकसित की है। वैज्ञानिक अब इस कृत्रिम मिट्टी से धातुओं के निष्कर्षण तथा चंद्रमा पर निर्माण सामग्री तैयार करने की तकनीक पर भी शोध कर रहे हैं।

संस्थान के अनुसार यह उपलब्धि चंद्रयान-3 मिशन की सफलता के बाद चंद्र प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की क्षमताओं को नई मजबूती देगी और भविष्य में चंद्रमा पर स्थायी मानव उपस्थिति स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण साबित हो सकती है।

इस बहुविषयक अनुसंधान परियोजना का नेतृत्व आईआईटी (बीएचयू) के धातुकर्म अभियांत्रिकी विभाग के प्रोफेसर कमलेश कुमार सिंह कर रहे हैं। शोध दल में यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. पवन शर्मा, रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. उदिता घोष, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के वैज्ञानिक डॉ. अंकुश कुमार तथा शोधार्थी रचिता सिंह एवं अभिषेक सिंह शामिल हैं।

आईआईटी (बीएचयू) के निदेशक प्रोफेसर अमित पात्रा ने कहा कि यह अनुसंधान भारत को आत्मनिर्भर और टिकाऊ अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की दिशा में आगे बढ़ाने वाला महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि भविष्य में चंद्रमा पर आधारभूत संरचना विकसित करने और दीर्घकालिक मानव उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय संसाधनों का उपयोग आवश्यक होगा और संस्थान इस दिशा में अत्याधुनिक अनुसंधान के लिए प्रतिबद्ध है। परियोजना प्रमुख प्रोफेसर कमलेश कुमार सिंह ने बताया कि चंद्रयान-3 की सफलता के बाद चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र को लेकर वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय की रुचि बढ़ी है। इस क्षेत्र में जल-बर्फ तथा अन्य उपयोगी संसाधनों की संभावना भविष्य के चंद्र अभियानों के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही है। उन्होंने बताया कि यह शोध इन-सीटू रिसोर्स यूटिलाइजेशन (आईएसआरयू) की अवधारणा पर आधारित है, जिसके तहत चंद्रमा पर उपलब्ध संसाधनों का वहीं उपयोग कर निर्माण एवं विनिर्माण कार्य किए जाएंगे। इससे पृथ्वी से भारी निर्माण सामग्री ले जाने की आवश्यकता कम होगी और अंतरिक्ष अभियानों की लागत में कमी आएगी। शोधकर्ताओं के अनुसार चंद्रमा की सतह रेगोलिथ नामक महीन परत से ढकी होती है, जिसमें प्लाजियोक्लेज, ओलिविन, पाइरोक्सीन, इल्मेनाइट, क्रोमाइट, क्वार्ट्ज तथा सिलिका युक्त अनेक महत्वपूर्ण खनिज और धात्विक यौगिक पाए जाते हैं। इन्हीं वैज्ञानिक गुणों के आधार पर विशेष प्रकार की मिट्टी, चट्टानों और रासायनिक तत्वों का उपयोग कर कृत्रिम चंद्र मिट्टी तैयार की गई है।

इसके बाद बॉल मिलिंग तकनीक की सहायता से इस सामग्री को अत्यंत महीन एवं समरूप कणों में परिवर्तित किया गया। वर्तमान में वैज्ञानिक इससे तैयार स्लरी आधारित स्याही के प्रवाह संबंधी गुणों का अध्ययन कर रहे हैं, ताकि भविष्य में त्रि-आयामी (3डी) प्रिंटिंग तकनीक से चंद्रमा पर ईंट, टाइल, लैंडिंग पैड और अन्य आधारभूत निर्माण सामग्री तैयार की जा सके।

पति के साथ रहने की जिद में 50 फीट ऊंचे टावर पर चढ़ी विवाहिता

मिर्जापुर, 16 जुलाई (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर जिले के कछवा थाना क्षेत्र में अपने ससुराल में रहने की मांग को लेकर एक विवाहिता करीब 50 फीट ऊंचे मोबाइल टावर पर चढ़ गई। लगभग चार घंटे की मशक्कत के बाद पुलिस और स्थानीय लोगों ने उसे सुरक्षित नीचे उतारा। पुलिस दोनों पक्षों को थाने बुलाकर मामले के समाधान का प्रयास कर रही है। कछवा थाना प्रभारी निरीक्षक अमरजीत चौहान ने बताया कि विद्यापुर गांव निवासी त्रिवेणी प्रसाद के बड़े पुत्र अजीत का वाराणसी के रोहनिया थाना क्षेत्र के मुंडा गांव की रहने वाली अंजली से प्रेम संबंध था। दोनों ने करीब दो वर्ष पहले मंदिर में विवाह किया था और किराये के मकान में रह रहे थे। उन्होंने बताया कि लगभग दस महीने पहले अजीत रोजगार के सिलसिले में दुबई चला गया। शुरुआत में दोनों के बीच नियमित बातचीत होती रही, लेकिन करीब एक माह पहले अंजली का आरोप है कि अजीत ने दूसरी शादी कर लेने की बात कही और उसके बाद उससे संपर्क करना बंद कर दिया। थाना प्रभारी के अनुसार अंजली बुधवार रात अपने ससुराल पहुंची और वहीं रहने की जिद करने लगी, लेकिन ससुराल पक्ष ने उसे अपने साथ रखने से इनकार कर दिया। उन्होंने बताया कि गुरुवार सुबह अंजली गांव में स्थित करीब 50 फीट ऊंचे मोबाइल टावर पर चढ़ गई और आत्महत्या की चेतावनी देने लगी।

ड्रोन से टीबी जांच होगी तेज

आईसीएमआर अध्ययन में निदान का समय 15 से घटकर पांच दिन

नई दिल्ली, 16 जुलाई (एजेंसियां)। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के एक अध्ययन में यह तथ्य सामने आया है कि ड्रोन की मदद से तपेदिक (टीबी) के थूक के नमूनों का परिवहन करने से सुदूर और दुर्गम क्षेत्रों में टीबी की जांच तेज हो सकती है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने बताया कि आईसीएमआर के एक अध्ययन के अनुसार, ड्रोन आधारित व्यवस्था से टीबी निदान का औसत समय 15 दिन से घटकर मात्र 5 दिन रह गया जबकि मरीजों के जेब से होने वाले खर्च में भी भारी कमी दर्ज की गई।

मंत्रालय ने कहा कि आईसीएमआर की प्रमुख आई-ड्रोन पहल के तहत तेलंगाना के यादद्री-भुवनगिरी जिले में राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी) के अंतर्गत यह अध्ययन किया गया। अध्ययन में 840 प्रतिभागियों को शामिल किया गया और पारंपरिक व्यवस्था की तुलना ड्रोन आधारित नमूना परिवहन प्रणाली से की गयी। इस मॉडल में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों और उप-केंद्रों से थूक के नमूने ड्रोन के जरिए निर्धारित टीबी प्रयोगशालाओं तक पहुंचाए गये।

अध्ययन के अनुसार, ड्रोन प्रणाली लागू होने के बाद मरीजों का औसत व्यक्तिगत खर्च करीब 9,451 रुपए से घटकर केवल 91 रुपये रह गया। कई मरीजों को जांच के लिए यात्रा ही नहीं करनी पड़ी, जिससे उनका खर्च शून्य रहा। यह व्यवस्था 11 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, 60 उप-केंद्रों और चार टीबी इकाइयों को जोड़ने वाले हब-एंड-स्पोक

नेटवर्क के माध्यम से संचालित की गई, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को अपने गांव के पास ही नमूने जमा करने की सुविधा मिली। स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव एवं आईसीएमआर के महानिदेशक डॉ. राजीव बहल ने कहा कि समय पर और किफायती निदान भारत के टीबी उन्मूलन अभियान का महत्वपूर्ण आधार है। उनके अनुसार, यह अध्ययन दर्शाता है कि आधुनिक तकनीक भौगोलिक बाधाओं को दूर कर सकती है और दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले मरीजों पर आर्थिक बोझ कम कर सकती है। उन्होंने कहा कि आई-ड्रोन पहल से प्राप्त अनुभव भविष्य में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं को और प्रभावी बनाने में सहायक होंगे। अध्ययन में शामिल स्वास्थ्यकर्मियों ने भी माना कि ड्रोन आधारित परिवहन से नमूनों की ढुलाई में देरी कम हुई, कार्यकुशलता बढ़ी और स्थानीय समुदायों ने इसे सकारात्मक रूप से स्वीकार किया।

आई.टी.एस. डेंटल कॉलेज के छात्राओं को मिले स्वर्ण व रजत पदक

ग्रेटर नोएडा,16 जुलाई (देशबन्धु)। अटल बिहारी वाजपेयी चिकित्सा विश्वविद्यालय (एबीवीएमयू) में आयोजित द्वितीय दीक्षांत समारोह में विभिन्न मेडिकल, पैरामेडिकल एवं संबद्ध स्वास्थ्य पाठ्यक्रमों के सफल विद्यार्थियों को डिग्रियां प्रदान की गईं तथा उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले मेधावी विद्यार्थियों को स्वर्ण एवं रजत पदकों से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, राज्य मंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह, विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अमित देवगन सहित अनेक विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में आई.टी.एस. डेंटल कॉलेज, हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर, ग्रेटर नोएडा के लिए गौरव एवं सम्मान का विशेष क्षण रहा, जब संस्थान की मेधावी एम.डी.एस. छात्राओं ने अपनी उत्कृष्ट शैक्षणिक उपलब्धियों के आधार पर विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित स्वर्ण एवं रजत पदक प्राप्त कर संस्थान का नाम गौरवान्वित किया।

विश्वविद्यालय द्वारा घोषित पदक सूची के अनुसार एम.डी.एस. (ऑर्थोडॉन्टिक्स एवं डेंटोफेशियल ऑर्थोपेडिक्स) विषय में डॉ. आस्था वर्मा एवं डॉ. लालनुनपुई पाउटू को स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। वहीं एम.डी.एस. (प्रोस्थोडॉन्टिक्स एंड क्राउन एंड ब्रिज) विषय में डॉ. नम्रता अग्रवाल को रजत पदक से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संस्थान के प्रधानाचार्य डॉ. ओमकार के. शेट्टी ने सभी पदक विजेता छात्राओं को हार्दिक बधाई एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

पूर्व सैनिकों के सम्मान में स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

ग्रेटर नोएडा,16 जुलाई (देशबन्धु)। पूर्व सैनिकों एवं वीर सेनानियों के सम्मान में जेवर स्थित कैलाश अस्पताल में विशेष सम्मान एवं स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें 50 से अधिक ईसीएचएस सदस्यों एवं उनके परिवारों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शुभारंभ अस्पताल प्रबंधन द्वारा पूर्व सैनिकों के स्वागत एवं सम्मान के साथ हुआ। यहां वीर सेनानियों को स्मृति-चिन्ह भेंट कर उनके अद्वितीय योगदान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गई। इस अवसर पर कैलाश अस्पताल के मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डॉ. ए.के. सिंह ने कहा, पूर्व सैनिक हमारे राष्ट्र के गौरव

हैं। उनके सम्मान और बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता हमारी प्राथमिकता है। भविष्य में भी ऐसे जन-जागरूकता एवं स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए जाते रहेंगे। इसके पश्चात आयोजित स्वास्थ्य जागरूकता सत्र में अस्पताल के वरिष्ठ विशेषज्ञ चिकित्सकों ने बढ़ती आयु में होने वाली सामान्य एवं गंभीर बीमारियों, समय पर जांच, उपचार एवं बचाव के उपायों की विस्तृत जानकारी दी। साथ ही ईसीएचएस लाभार्थियों के लिए उपलब्ध कैशलेस उपचार, पैनल सुविधाओं एवं आधुनिक चिकित्सा सेवाओं की जानकारी भी साझा की। कार्यक्रम के दौरान आयोजित संवाद सत्र में पूर्व सैनिकों एवं उनके परिजनों ने स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न प्रश्न पूछे, जिनका विशेषज्ञ चिकित्सकों ने विस्तारपूर्वक समाधान किया।

आपदा प्रबंधन सप्ताह के तहत बच्चों को किया गया प्रशिक्षित

ग्रेटर नोएडा,16 जुलाई (देशबन्धु)। क्वीन्स कार्मेल स्कूल में विद्यार्थियों को आपातकालीन परिस्थितियों के प्रति जागरूक एवं सक्षम बनाने के उद्देश्य से आपदा प्रबंधन सप्ताह का सफल आयोजन किया गया। पूरे सप्ताह प्रतिदिन विविध गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को आपदा के समय सुरक्षित रहने, त्वरित निर्णय लेने तथा जिम्मेदारीपूर्वक कार्य करने का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ विशेषज्ञों द्वारा आयोजित जागरूकता कार्यशाला से हुआ, जिसमें विद्यार्थियों ने विभिन्न प्राकृतिक एवं मानवजनित आपदाओं से बचाव के उपायों की जानकारी

प्राप्त की। इसके पश्चात विद्यार्थियों ने आवश्यक सामग्रियों से डिजास्टर किट तैयार की तथा विद्यालय परिसर में आयोजित मॉकड्रिल के माध्यम से सुरक्षित निकासी एवं आपातकालीन प्रतिक्रिया का अभ्यास किया। सप्ताह भर आयोजित इन गतिविधियों ने विद्यार्थियों में सुरक्षा के प्रति जागरूकता, आत्मविश्वास, अनुशासन एवं टीम भावना का विकास किया। विद्यालय का यह प्रयास विद्यार्थियों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए सजग, जिम्मेदार एवं आत्मनिर्भर नागरिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ।

बेटियों ने पिता को दान किए लिवर के हिस्से

नई दिल्ली, 16 जुलाई (देशबन्धु)। फोर्टिस अस्पताल ने दुनिया में पहली बार लैपरोस्कोपिक डुअल-लोब लिविंग डोनर लिवर प्रत्यारोपण को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है जिसमें मरीज की दोनों बेटियों ने अपने पिता को एंड-स्टेज लिवर रोग से बचाने के लिए अपने अपने लिवर के हिस्से दान किये हैं। इस जटिल प्रक्रिया को किर्गिस्तान के 51-वर्षीय मरीज पर आजमाया गया जो हेपेटाइटिस बी संक्रमण से प्रभावित होने के बाद लिवर की बीमारी के अंतिम चरण में पहुंच चुके थे। उनकी दोनों बेटियों की उम्र 20 और 21 वर्ष थी और सर्जरी के बाद अब पिता और दोनों बेटियां ठीक हैं।

दुनिया में यह अपनी किस्म का पहला मामला है, जिसमें दोनों डोनर्स की लिवर डोनेशन सर्जरी को मिनीमॅली इन्वेसिव लैपरोस्कोपिक तकनीकों की सहायता से अंजाम दिया गया जिसमें प्रत्येक डोनर सर्जरी करीब पांच घंटे चली जबकि रेसिपिएंट ट्रांसप्लांट सर्जरी को लगभग आठ घंटे में पूरा किया गया। मरीज के शरीर से निकाले गए लिवर की बाद में जांच से क्रोनिक हेपेटाइटिस की पुष्टि हुई जो हेपेटाइटिस बी और हेपेटाइटिस डी इंफेक्शन की वजह से हुआ था। इसमें लिवर को काफी अधिक नुकसान पहुंचा था। मरीज को लिवर फेलियर की गंभीर स्टेज (जिसमें मरीज पीलिया से पीड़ित होता है) की शिकायत के साथ अस्पताल में भर्ती किया गया था। वह एसाइटिस (पेट में अत्यधिक मात्रा में तरल पदार्थ के असामान्य रूप से एकत्र होना), गैस्ट्रोइंस्टेस्टाइनल ब्लीडिंग तथा मनौवैज्ञानिक समस्याओं से भी पीड़ित थे। मरीज की विस्तृत मेडिकल जांच से लिवर फेलियर, पोर्टल हाइपरटेंशन, गंभीर किस्म के थ्रोम्बोसाइटोपीनिया (ऐसी मेडिकल कंडीशन जिसमें खून में प्लेटलेट्स की संख्या असामान्य रूप से कम हो जाती है) तथा खून का थक्का जमने में परेशानी जैसी समस्याओं की भी पुष्टि हुई। मरीज की मेटाबोलिक जरूरतों को देखते हुए किसी अकेले डोनर के लिवर से इलाज पूरा होना संभव नहीं था, तब प्रत्यारोपण टीम ने मरीज की दोनों बेटियों के लिवर ग्राफ्ट की मदद से डुअल-लोब लिविंग डोनर लिवर प्रत्यारोपण करने का फैसला किया। फोर्टिस अस्पताल, नोएडा के डॉ विवेक विज, (चेयरमैन, लिवर ट्रांसप्लांट एंड हेपाटोबिलियरी साइंसेज़) ने कहा कि डुअल लोब लिविंग डोनर प्रत्यारोपण सर्जरी दुनिया में कुछ गिने-चुने केंद्रों पर ही की जाती है। दोनों डोनर्स के मामले में इसे पूरी तरह से लैपरोस्कोपिक तरीके से करना लिविंग डोनर लिवर ट्रांसप्लांटेशन की भी प्रमुख उपलब्धि है। इस उपलब्धि ने उन मरीजों के लिए भी उम्मीद दिखायी है जिन्हें बड़े लिवर ग्राफ्ट वॉल्यूम की आवश्यकता है। मोहित सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, फोर्टिस अस्पताल ने कहा कि प्रत्यारोपण संबंधी इस उपलब्धि ने क्लीनिकल उत्कृष्टता और नवाचार की दिशा में हमारे अथक प्रयासों को प्रदर्शित किया है।

सिर्फ झगड़े वाली खबरों से कश्मीर को न आंकें

घाटी की असली पहचान वहां के लोगों, संस्कृति और शानदार नजारों में बसी है : पर्यटक

जम्मू, 16 जुलाई (देशबन्धु)। अर्जेंटीना के एक पर्यटक जोड़े ने कहा कि कश्मीर 'सिर्फ खबरों में दिखाई देने वाली चीजों से कहीं अधिक' है। उन्होंने कहा कि घाटी की असली कहानी इसके शानदार नजारों, मिलनसार लोगों और समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं में है, जिन्हें खुद अनुभव करना चाहिए। इस जोड़े ने दुनिया से अपील की कि वे कश्मीर को सिर्फ झगड़े-फसाद से जुड़ी खबरों के आधार पर न आंकें। उन्होंने कहा कि वे वापस आना चाहते हैं क्योंकि घाटी में अभी भी बहुत कुछ देखना बाकी है, खासकर तब जब और ट्रेकिंग रूट और दूर-दराज की जगहें फिर से खुल जाएंगी।

पत्रकारों से बातचीत में, ब्यूनस आयर्स (अर्जेंटीना) के रहने वाले फ्लोरेन्सिया बर्नल (37, कोबोल डेवलपर) और मैक्सिमिलियानो गट्टारी (41, रेस्टोरेंट

■ अर्जेंटीना के पर्यटकों ने बताई असलियत

मालिक) ने बताया कि पहाड़ों और अनोखी सांस्कृतिक विरासत की वजह से कश्मीर लंबे समय से उनकी ट्रैवल बकेट लिस्ट (घूमने की जगहों की सूची) में शामिल था।

जोड़े ने बताया कि वे अंतरराष्ट्रीय मीडिया कवरेज की वजह से कुछ चिंताओं के साथ यहां आए थे, लेकिन यहां से बिल्कुल अलग नजरिए के साथ लौटे। उन्होंने कहा कि यहां आने से पहले हमने ज्यादातर राजनीतिक हालात और सुरक्षा चिंताओं के बारे में सुना था। लेकिन यहां हमें शानदार नजारे, सच में अच्छे लोग और ऐसी संस्कृति देखने को मिली जिसे खबरों से हटकर जानने की जरूरत है। श्रीनगर, गुलमर्ग, पहलगाम, अरु घाटी, वुलर झील और जम्मू की यात्रा करने के बाद, पर्यटकों ने बताया कि शांत माहौल और शानदार नजारों की वजह से अरु घाटी उनकी पसंदीदा जगह रही।

जोड़े ने कश्मीरी मेहमाननवाजी को दुनिया में कहीं भी अनुभव की गई सबसे अच्छी मेहमाननवाजी में से एक बताया। उन्होंने कहा कि कई स्थानीय परिवारों ने उन्हें चाय और बातचीत के लिए अपने घरों में बुलाया। वे कहते थे कि हम जो यादें साथ ले जा रहे हैं, वे सिर्फ खूबसूरत जगहों की नहीं, बल्कि उन लोगों की हैं जिनसे हम मिले। उनके अपनापन और दरियादिली ने इस यात्रा को यादगार बना दिया। उनका कहना था कि अपनी यात्रा के दौरान उन्हें सुरक्षित महसूस हुआ और हर कदम पर स्थानीय लोगों से मदद मिली। हालांकि, उन्होंने इस बात पर निराशा जताई कि कई ट्रेकिंग रूट और दूर-दराज के पर्यटन स्थल अभी भी पहुंच से बाहर थे। वे कहते थे कि हम कश्मीर में और भी जगहें घूमना चाहते थे, खासकर गुरेज वैली और हाइकिंग वाली दूसरी जगहें, लेकिन पाबंदियों की वजह से उनमें से कई बंद थीं। हमें उम्मीद है कि जब वे दोबारा खुलेंगी तो हम फिर आएंगे, क्योंकि कश्मीर में अभी भी बहुत कुछ देखना बाकी है। घूमने आए लोगों ने कश्मीरी खाने, खासकर पारंपरिक वाजवान की भी तारीफ की और इसे अपनी यात्रा की सबसे खास चीजों में से एक बताया। कश्मीर के बारे में तीन शब्दों में बताते हुए उन्होंने कहा- मेहमाननवाज, असली और कभी न भूलने वाला।

सर्वाधिक घटने वाले शेयर

इंटरनल	2.82 प्रतिशत
बीईएल	1.00 प्रतिशत
बजाज फिनसर्व	0.96 प्रतिशत
एचडीएफसी बैंक	0.86 प्रतिशत
एक्सिस बैंक	0.61 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम) स्टैंडर्ड	1,42,950
बिटूर	88,730
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	39,795
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	2,20,800
वायदा	70,857
चांदी सिक्का लिवाली	900
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	97.58	94.50
पौंड स्टर्लिंग	132.22	127.60
यूरो	112.21	108.05
चीन युआन	15.13	13.41

अनाज

देसी गेहूं एमपी	2400-3000
गेहूं दड़ा	2862.70
आटा	2800-2900
मैदा	2900-2950
चोकर	2000-2100

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

शुगर

चीनी एस	4293.58
चीनी एम	4500-4600
मिल डिलीवरी	3620-3720
गुड़	4986.64

दाल-दलहन

चना	5700-5800
दाल चना	7798.23
मसूर काली	8109.74
उड़द दाल	10982.42
मूंग दाल	10178.50
अरहर दाल	11305.20

भारत-नेपाल डिजिटल पेमेंट कॉरिडोर बड़ा अवसर : एडीबी

काठमांडू, 16 जुलाई (एजेंसियां)। एशियन डेवलपमेंट बैंक (एडीबी) ने भारत-नेपाल डिजिटल पेमेंट कॉरिडोर को एक बड़े अवसर के रूप में पहचाना है और कहा कि इससे दोनों देशों के बीच व्यापार, पर्यटन और रेमिटेंस के प्रवाह में बड़ा सुधार हो सकता है। एडीबी ने अपनी रिपोर्ट 'नेपाल में डिजिटल पेमेंट को बढ़ावा: बेहतर व्यापार सुविधा के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर अपग्रेड और पॉलिसी डेवलपमेंट' में कहा कि व्यापार और रेमिटेंस के जरिए नेपाल और भारत के बीच हर साल अरबों डॉलर का लेन-देन होता है, फिर भी डिजिटल पेमेंट सिस्टम में तेजी से हो रही तरक्की के बावजूद अधिकतर लेन-देन पारंपरिक बैंकिंग चैनलों पर ही निर्भर हैं।

रिपोर्ट में नेपाली फिनटेक एक्सपर्ट संजीव सुब्बा के हवाले से कहा गया है कि भारत और नेपाल के बीच आर्थिक संबंधों से डिजिटल पेमेंट का एक ऐसा मौका बनता है जिसका अभी तक अधिक इस्तेमाल नहीं हुआ है। साथ ही, यह भी कहा गया है कि इंटरऑपरेबल पेमेंट इंफ्रास्ट्रक्चर से दोनों

■ व्यापार, पर्यटन व रेमिटेंस को बढ़ाने में निभा सकता है अहम भूमिका

देशों में कारोबारियों और ग्राहकों के लिए कामकाज में ज्यादा कुशलता आ सकती है।

रिपोर्ट में नेपाल के डिजिटल पेमेंट इकोसिस्टम को मजबूत करने और व्यापार सुगमता में इसकी भूमिका बढ़ाने के लिए क्रॉस-बॉर्डर पेमेंट इंफ्रास्ट्रक्चर, नियामकीय समन्वय, भुगतान प्रणालियों की इंटरऑपरेबिलिटी और बाजार एकीकरण को सुदृढ़ करने की सिफारिश की गई है।

बिजली साझेदारी मजबूत करेंगे भारत-नेपाल

काठमांडू। नेपाल और भारत ने दो सीमा पार बिजली ट्रांसमिशन परियोजनाओं के जरिए दोनों देशों के बीच बिजली के आदान-प्रदान की मात्रा बढ़ाने पर सहमति जताई है। नेपाल के पश्चिमी शहर पोखरा में हुई नेपाल-इंडिया जॉइंट स्टीयरिंग कमेटी (जेएससी) की 13वीं बैठक में यह फैसला लिया गया। यह ऊर्जा सचिव स्तर की द्विपक्षीय बैठक थी। दोनों देशों ने सहमति बनाई कि नेपाल अब दो 400 केवी की सीमा पार ट्रांसमिशन लाइनों के माध्यम से भारत को अधिकतम 1,650 मेगावाट तक बिजली बेच सकेगा और भारत से 1,400 मेगावाट तक बिजली आयात कर सकेगा। बिजली के आदान-प्रदान के लिए जिन दो ट्रांसमिशन लाइनों का इस्तेमाल किया जाएगा, वे हैं धालकेबार-मुजफ्फरपुर 400 केवी ट्रांसमिशन लाइन और धालकेबार-सीतामढ़ी 400 केवी ट्रांसमिशन लाइन। (नेपाल के ऊर्जा, जल संसाधन और सिंचाई मंत्रालय के अनुसार, इनमें से धालकेबार-मुजफ्फरपुर ट्रांसमिशन लाइन वर्ष 2016 से चालू है, जबकि धालकेबार-सीतामढ़ी ट्रांसमिशन लाइन परियोजना लगभग पूरी होने वाली है।

■ 1,650 मेगावाट निर्यात का रास्ता साफ

रिपोर्ट में घरेलू अवसंरचना और संस्थागत क्षमता को मजबूत करने के उपायों के साथ-साथ समन्वित शासन व्यवस्था और विभिन्न हितधारकों की भागीदारी पर जोर देने वाले कार्यान्वयन ढांचे के माध्यम से डिजिटल भुगतान प्रणाली के व्यापक विकास का भी जिक्र किया गया है। वर्ष 2024 में नेपाल राष्ट्र बैंक और भारतीय रिजर्व बैंक ने नेपाल के नेशनल पेमेंट्स इंटरफेस को भारत के यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस से जोड़ने की प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए नियामकीय संदर्भ शर्तों पर हस्ताक्षर किए थे।

सरकार उड़ान योजना के तहत वित्तीय सहायता को 5 साल तक बढ़ाएगी : नायडू

नई दिल्ली, 16 जुलाई (एजेंसियां)। केंद्रीय नागर विमानन मंत्री राम मोहन नायडू ने गुरुवार को कहा कि केंद्र सरकार ने क्षेत्रीय हवाई संपर्क योजना उड़ान के तहत संचालित होने वाली एयरलाइंस को दी जाने वाली वित्तीय सहायता की अवधि 3 साल से बढ़ाकर 5 साल करने का फैसला किया है। यह बदलाव चरणबद्ध तरीके से लागू किया जाएगा, जिससे क्षेत्रीय मार्गों (रीजनल रूट्स) को आर्थिक रूप से अधिक व्यवहार्य बनाया जा सके। उड़ान योजना पर आयोजित एक कार्यशाला के दौरान पत्रकारों से बातचीत में केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सरकार ने इस योजना को अगले 10 वर्षों के लिए बढ़ा दिया है। इसके साथ ही एयरपोर्ट्स को वायबिलिटी गैप फंडिंग (वीजीएफ) देने के पात्रता मानदंडों में भी बदलाव किया गया है, ताकि अधिक हवाई अड्डों और रूट्स को इसका लाभ मिल

■ चरणबद्ध तरीके से लागू किया जाएगा यह बदलाव

सके। राम मोहन नायडू ने बताया कि पहले किसी एयरपोर्ट को 'अनसर्व्ड' या 'अंडरसर्व्ड' तब माना जाता था, जब वहां सप्ताह में 7 से कम उड़ानें संचालित होती थीं। अब इस सीमा को बढ़ाकर 14 उड़ानें प्रति सप्ताह कर दिया गया है। इससे अधिक संख्या में एयरपोर्ट और क्षेत्रीय रूट्स वीजीएफ सहायता के दायरे में आ सकेंगे।

उन्होंने कहा कि सरकार देश में तेजी से हवाई अड्डों का विकास कर रही है। उनके अनुसार, हर महीने एक नया एयरपोर्ट या नया टर्मिनल तैयार किया जा रहा है।

सोने-चांदी करीब आधा प्रतिशत फिसले

मुंबई, 16 जुलाई (एजेंसियां)। सोने और चांदी की कीमतों में गुरुवार को गिरावट देखने को मिली है। इसकी वजह मध्य पूर्व में जारी तनाव और डॉलर इंडेक्स में मजबूती को माना जा रहा है।

मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने 5 अगस्त 2026 का कॉन्ट्रैक्ट पिछली क्लोजिंग 1,41,850 रुपए प्रति 10 ग्राम के मुकाबले 819 रुपए की गिरावट के साथ 1,41,031 रुपए प्रति 10 ग्राम पर खुला।

सुबह 9:47 पर यह 649 रुपए या 0.46 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 1,41,201 रुपए प्रति 10 ग्राम पर था।

अब तक के कारोबार में सोने ने 1,41,000 रुपए प्रति 10 ग्राम का न्यूनतम स्तर और 1,41,433 रुपए प्रति 10 ग्राम का उच्चतम स्तर बनाया। यह

दिखाता है कि सोना एक सीमित दायरे में कारोबार कर रहा है। चांदी में भी गिरावट तेजी जा रही है। चांदी का 4 सितंबर, 2026 का कॉन्ट्रैक्ट पिछली क्लोजिंग 2,20,620 रुपए प्रति किलो के मुकाबले 828 रुपए की कमजोरी के साथ 2,19,792 रुपए प्रति किलो पर था। खबर लिखे जाने तक यह 1,237 रुपए या 0.56 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 2,19,383 रुपए प्रति किलो पर था।

तेजी खोकर सपाट बंद हुआ बाजार

मुंबई, 16 जुलाई (एजेंसियां)। शुरुआती तेजी के बाद घरेलू शेयर बाजारों में गुरुवार को बिकवाली देखी गई, हालांकि आईटी और ऑटो सेक्टरों में लिवाली से प्रमुख सूचकांक लगभग सपाट बंद हुए।

बीएसई का 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स सुबह 203 अंक की मजबूती के साथ 77,388 अंक पर खुला और दोपहर तक बढ़त में बना रहा। दोपहर बाद बिकवाली का दबाव बढ़ने से सूचकांक अंत में महज 1.44 अंक ऊपर 77,186.87 अंक पर बंद हुआ। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी-50 सूचकांक भी दोपहर तक हरे निशान में रहने के बाद बिकवाली के दबाव में 5.75 प्रतिशत यानी 0.02 फीसदी टूटकर 24,072.75

अंक पर आ गया। वृहत बाजार में बिकवाली देखी गयी। निफ्टी मिडकैप-50 सूचकांक 0.29 प्रतिशत और स्मॉलकैप-100 सूचकांक 0.10 प्रतिशत नीचे बंद हुआ। टिकाऊ उपभोक्ता उत्पाद, रसायन, आईटी, ऑटो, मीडिया और एफएमसीजी सेक्टर हरे निशान में रहे। वहीं, वित्तीय, बैंकिंग, रियल्टी और धातु सेक्टरों में गिरावट रही।

एनएसई में जिन 3,431 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ उनमें से 1,774 के शेयर टूट गये जबकि 1,542 में तेजी रही। अन्य 115 कंपनियों के शेयर अंततः अपरिवर्तित रहे।

सेंसेक्स की कंपनियों में इंडिगो का शेयर सबसे अधिक 1.84 प्रतिशत चढ़ा। एचसीएल टेक्नोलॉजीज में 1.73 फीसदी, बजाज फाइनेंस में 1.57, मारुति सुजुकी में 1.56, महिंद्रा एंड महिंद्रा में 1.20 और टाइटन तथा आईटीसी दोनों में 1.05 प्रतिशत की तेजी रही। टेक महिंद्रा, टीसीएस और इंफोसिस के शेयर भी ऊपर बंद हुए।

सार संक्षेप

चेन्नई में प्रॉपर्टी टैक्स जमा करने की अंतिम तारीख बढ़ी

चेन्नई। ग्रेटर चेन्नई कॉर्पोरेशन (जीसीसी) ने शहर के संपत्ति मालिकों को राहत देते हुए विशेष प्रॉपर्टी टैक्स वसूली अभियान की अवधि 31 जुलाई तक बढ़ा दी है। यह फैसला इसलिए लिया गया, क्योंकि मौजूदा आकलन अवधि के दौरान शहर के लगभग आधे संपत्ति मालिकों ने अभी तक अपना प्रॉपर्टी टैक्स जमा नहीं कराया है। कॉर्पोरेशन के अधिकारियों के अनुसार, चेन्नई में कुल 14.23 लाख संपत्तियों का आकलन किया गया है। इनमें से अब तक केवल 6.98 लाख संपत्ति मालिकों ने ही अपना प्रॉपर्टी टैक्स जमा किया है, जबकि 7.25 लाख संपत्ति मालिकों ने अभी तक टैक्स का भुगतान नहीं किया है। इसी वजह से नगर निगम ने अगले दो सप्ताह तक टैक्स वसूली अभियान को और तेज करने का फैसला किया है। विशेष टैक्स संग्रह शिविर 3 जुलाई से शुरू हुए थे और पहले इन्हें 17 जुलाई तक चलाया जाना था।

टोन टैग ने एमएसएमई के लिए बैंकों हेतु वॉयस-फर्स्ट बिजनेस असिस्टेंट 'eKosha' लॉन्च किया

नई दिल्ली। भारत के डीप-टेक प्लेटफॉर्म टोन टैग ने आज eKosha नामक वॉयस-फर्स्ट बिजनेस असिस्टेंट लॉन्च करने की घोषणा की। यह समाधान बैंकों को बिना किसी नए बुनियादी ढांचे में निवेश किए, सीधे व्यापारियों की दुकान पर ही विभिन्न मर्चेंट बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराने में सक्षम बनाता है। भारत के 8 करोड़ से अधिक सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को ध्यान में रखकर विकसित किए गए eKosha में भुगतान, बैंकिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को एक ही डिवाइस में जोड़ा गया है। यह टोन टैग की स्वदेशी एनालॉग एज एआई और कॉन्टेक्स्चुअल इंटेलिजेंस तकनीक पर आधारित है। यह भुगतान स्वीकार करने वाली मशीनों को बैंकिंग सेवा केंद्र में बदल देता है, जिससे बैंक व्यापारियों के दैनिक कारोबार के दौरान उनसे सीधे जुड़ सकते हैं।

सैमसंग ने 'वर्ल्ड यूथ स्किल्स डे' मनाया

गुरुग्राम। 'वर्ल्ड यूथ स्किल्स डे' पर, सैमसंग इंडिया ने 2025 में ट्रेनिंग पाने वाले 9,400 युवाओं में से चुने गए 30 'डीओएसटी सेल्स टॉपर्स' की उपलब्धियों का जश्न मनाया। इन टॉपर्स को सैमसंग डीओएसटी के तहत सम्मानित किया गया; यह कंपनी का मुख्य इंटरफ्रेकिलिंग प्रोग्राम है जो युवाओं को ऑर्गेनाइज्ड रिटेल में करियर के लिए तैयार करता है। शिक्षा और रोजगार के बीच की दूरी को कम करने के लिए शुरू किया गया सैमसंग डीओएसटी, युवाओं को खास सेल्स ट्रेनिंग प्रोग्राम के जरिए रिटेल सेक्टर में फ्रंटलाइन करियर के लिए तैयार करता है। भाग लेने वालों को सरकार से मान्यता प्राप्त सर्टिफिकेट, असली रिटेल माहौल में काम करने का व्यावहारिक अनुभव और कार्यस्थल का प्रैक्टिकल अनुभव मिलता है, जिससे उनकी नौकरी पाने की क्षमता और करियर के लिए तैयारी बेहतर होती है। अपनी शुरुआत से लेकर अब तक, सैमसंग डीओएसटी सेल ने पूरे भारत में हजारों युवाओं को इंडस्ट्री के हिसाब से जरूरी स्किल्स से लैस किया है।

कृषि क्षेत्र को ऋण बीते 11 वर्षों में 4 गुना बढ़ा

नई दिल्ली, 16 जुलाई (एजेंसियां)। भारत में कृषि क्षेत्र को दिए जाने वाले ऋण में बीते एक दशक में तेज बढ़ोतरी हुई है और यह वित्त वर्ष 2025-26 में बढ़कर 32.50 लाख करोड़ रुपए पर पहुंच गया है, जो कि वित्त वर्ष 2014-15 के 8 लाख करोड़ रुपए से चार गुना से अधिक है। यह जानकारी सरकार द्वारा गुरुवार को जारी फैक्टशीट में दी गई। फैक्टशीट के मुताबिक, ग्रामीण ऋण इकोसिस्टम वित्त वर्ष 2014-15 से वित्त वर्ष 2023-24 के बीच करीब 13 प्रतिशत सालाना की दर से बढ़ा है।

कृषि में जमीनी स्तर पर ऋण को बढ़ावा देने के लिए नेशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट (नाबार्ड) बैंकों को कृषि और उससे जुड़े क्षेत्रों में शॉर्ट-टर्म और लॉन्ग-टर्म लोन देने के लिए, उनके संसाधनों को बढ़ाने के मकसद से रीफाइनेंस सपोर्ट देता है।

फैक्टशीट में बताया गया कि औपचारिक ग्रामीण वित्त की बढ़ती पहुंच की झलक नाबार्ड के ग्रामीण आर्थिक स्थिति एवं भावना सर्वेक्षण (मई 2026) में भी देखने को मिलता है। सर्वेक्षण के अनुसार, लगभग 77.2 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों ने अपने उपभोग स्तर में वृद्धि की जानकारी दी, जो बढ़ती क्रय शक्ति और लगातार बनी हुई मांग को दर्शाता है।

औपचारिक ऋण तक पहुंच में भी उल्लेखनीय विस्तार हुआ है। लगभग 51 प्रतिशत परिवार केवल औपचारिक स्रोतों से ऋण प्राप्त कर रहे हैं, जबकि 27 प्रतिशत से अधिक परिवार संस्थागत और गैर-संस्थागत दोनों माध्यमों से ऋण ले रहे हैं। वर्ष 2014 में ग्रामीण क्षेत्रों में 41,464 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक शाखाएं थीं। जुलाई 2025 तक इनकी संख्या 35 प्रतिशत से अधिक बढ़कर 56,193 हो गई, जिससे ग्रामीण ऋण वितरण को महत्वपूर्ण मजबूती मिली। इसके अलावा, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक भी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में संचालित हैं, जिनका 700 जिलों में 22,000 से अधिक शाखाओं का नेटवर्क है। सहकारी बैंकों और प्राथमिक कृषि ऋण समितियों ने भी दूरदराज के

■ औपचारिक ऋण तक पहुंच में हुआ उल्लेखनीय विस्तार

■ लगभग 77.2 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों के उपभोग स्तर में हुई वृद्धि

क्षेत्रों में गरीबों के बीच बैंकिंग की आदतों को बढ़ावा देकर संस्थागत ऋण के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आरबीआई और नाबार्ड के अनुसार, सहकारी बैंकिंग नेटवर्क में 1,458 शहरी सहकारी बैंक, 34 राज्य सहकारी बैंक और 352 जिला केंद्रीय सहकारी बैंक शामिल हैं। इसके अतिरिक्त सरकार का विशेष ध्यान गरीबों के लिए संचालित गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों पर भी है, जैसे दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन। यह योजना ग्रामीण गरीब परिवारों को स्वयं सहायता समूहों में संगठित करती है और उनकी आय बढ़ाने तथा जीवन स्तर में सुधार लाने में सहायता करती है। यह कार्यक्रम पूरे देश में लागू किया जा रहा है। 10 जुलाई 2026 तक 19.83 लाख से अधिक स्वयं सहायता समूह सक्रिय थे और योजना की शुरुआत से अब तक इनके माध्यम से 13.28 लाख करोड़ रुपए के ऋण का वितरण किया जा चुका है।

रथ यात्रा से अहमदाबाद के ऑटोमोबाइल बाजार को मिली रफ्तार

अहमदाबाद, 16 जुलाई (एजेंसियां)। अहमदाबाद में रथ यात्रा के दौरान ऑटोमोबाइल खुदरा बाजार में जबरदस्त बढ़ोतरी देखने को मिली। यह मौजूदा वित्त वर्ष का पहला बड़ा त्योहारों का मौसम है, जिसने सभी तरह के वाहनों की बिक्री को तेजी से बढ़ावा दिया है। वाहन विक्रेताओं के अनुसार, ग्राहकों की पूछताछ में अच्छी बढ़ोतरी हुई है और वाहनों के पंजीकरण की संख्या भी पहले की तुलना में अधिक रही है। ऑटोमोबाइल खुदरा क्षेत्र में लगातार बढ़ोतरी का रुझान बना हुआ है और रथ यात्रा ने इसमें अहम भूमिका निभाई है। ग्राहकों का बढ़ता भरोसा, कम ब्याज दर पर आसानी से वाहन ऋण मिलना और यात्री वाहनों तथा दोपहिया वाहनों के क्षेत्र में बिजली से चलने वाले वाहनों को तेजी से अपनाया जाना इस बढ़ोतरी की प्रमुख वजहें हैं। बिजली से चलने वाले वाहनों की मांग लगातार बढ़ रही है, जो यह दिखाती है कि लोग पर्यावरण के अनुकूल परिवहन को अधिक पसंद कर रहे हैं। वहीं, पारंपरिक ईंधन से चलने वाले वाहनों की बिक्री भी अच्छी

■ वाहनों की बिक्री व ग्राहकों का भरोसा बढ़ा

बनी हुई है, जिससे बाजार में ग्राहकों के मजबूत भरोसे का पता चलता है।

हालांकि इस वर्ष सामान्य से कम बारिश होने का अनुमान है, फिर भी ग्रामीण इलाकों में वाहनों की मांग पर इसका कोई खास असर नहीं पड़ा है। स्थिर आर्थिक गतिविधियों और ग्राहकों के भरोसे की वजह से ग्रामीण बाजार भी खुदरा बिक्री में अच्छा योगदान दे रहे हैं। यात्री वाहनों के क्षेत्र में लोगों की पहली पसंद अब भी बड़ी उपयोगी गाड़ियां बनी हुई हैं। इसके साथ ही अपने आप गियर बदलने वाली गाड़ियों की मांग भी लगातार बढ़ रही है।

भारत बनेगा वैश्विक सेमीकंडक्टर हब : उद्योग

■ सेमीकॉन 2.0 व एमपीएमएस से 3.6 लाख से अधिक रोजगार सृजित होने की उम्मीद

नई दिल्ली, 16 जुलाई (एजेंसियां)। केंद्र सरकार की ओर से हाल ही में मंजूर की गई सेमीकॉन 2.0 और मोबाइल फोन मैन्युफैक्चरिंग स्कीम (एमपीएमएस) को लेकर उद्योग जगत ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है। इंडस्ट्री संगठनों का मानना है कि ये दोनों योजनाएं भारत को केवल मोबाइल असेंबली केंद्र से आगे बढ़ाकर संपूर्ण सेमीकंडक्टर वैल्यू चेन विकसित करने में मदद करेंगी और 3.6 लाख से अधिक नए रोजगार सृजित कर सकती हैं।

उद्योग निकायों के अनुसार, सेमीकॉन 2.0 के तहत 40 से 50 अरब डॉलर तक का नया निवेश आकर्षित होने की संभावना है, जिससे 2 से 3 लाख उच्च कौशल (हाई-स्किल्ड)

रोजगार पैदा हो सकते हैं। वहीं, मोबाइल फोन मैन्युफैक्चरिंग स्कीम (एमपीएमएस) के जरिए देश में मोबाइल निर्माण को और गति मिलेगी, जिससे 60,000 अतिरिक्त प्रत्यक्ष नौकरियां बनने का अनुमान है। इस योजना से मोबाइल उत्पादन का कुल मूल्य बढ़कर लगभग 39 लाख करोड़ रुपए और निर्यात बढ़कर करीब 15 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच सकता है। सरकार ने सेमीकॉन 2.0 के लिए 1.27 लाख करोड़ रुपए और एमपीएमएस के लिए 62,500 करोड़ रुपए की मंजूरी दी है।

पीएम मोदी 75 पुनर्विकसित अमृत भारत रेलवे स्टेशनों का करेंगे लोकार्पण

जैसलमेर, 16 जुलाई (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शुक्रवार यानी 17 जुलाई को देशभर के 75 पुनर्विकसित अमृत भारत रेलवे स्टेशनों का वर्चुअल लोकार्पण करेंगे। इसी क्रम में उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल के जैसलमेर, बाड़मेर और गोटन रेलवे स्टेशनों का भी उद्घाटन होगा।

जैसलमेर रेलवे स्टेशन पर स्थानीय स्तर पर उद्घाटन समारोह दोपहर 2:30 बजे आयोजित किया जाएगा, जबकि प्रधानमंत्री दोपहर 3:30 बजे वर्चुअल माध्यम से स्टेशन का लोकार्पण करेंगे। जैसलमेर रेलवे स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। उनके साथ जैसलमेर विधायक छोटू सिंह भाटी, भाजपा जिलाध्यक्ष दलपतराम हिंगड़ा, भाजपा शहर अध्यक्ष अरुण पुरोहित सहित कई जनप्रतिनिधि और रेलवे अधिकारी मौजूद रहेंगे। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक

हितेश यादव ने बताया कि करीब 140 करोड़ रुपए की लागत से जैसलमेर रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास किया गया है। स्टेशन को आधुनिक यात्री सुविधाओं से लैस किया गया है, जिसमें वातानुकूलित प्रतीक्षालय, 16 बेड और सात कमरों वाली डॉर्मिटरी, तीनों प्लेटफॉर्म पर एंड-टू-एंड शेल्टर तथा बेहतर यात्री सुविधाएं शामिल हैं। उन्होंने आगे बताया कि स्टेशन पर पिट लाइन भी तैयार हो चुकी है, जिससे ट्रेनों के रखरखाव का कार्य शुरू हो गया है। पार्किंग और वेटिंग रूम की आउटसोर्सिंग व्यवस्था भी

■ जैसलमेर रेलवे स्टेशन पर होंगी विश्वस्तरीय सुविधाएं

■ करीब 140 करोड़ रुपए से जैसलमेर स्टेशन का किया गया पुनर्विकास

पूरी कर ली गई है। जैसलमेर रेलवे स्टेशन पर पहले यात्रियों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता था। रेलवे के मुताबिक, पिछले एक वर्ष में जोधपुर-दिल्ली के बीच रुणिचा एक्सप्रेस और स्वर्ण नगरी एक्सप्रेस जैसी नई ट्रेनों के संचालन से यात्रियों, विशेषकर रक्षा बलों के अधिकारियों और जवानों को लाभ मिला है।

अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत जैसलमेर स्टेशन का आधुनिकीकरण पर्यटन को नई गति देगा और स्थानीय व्यापार, रोजगार तथा क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा।

भारतीय मतदाता संसद

भारतीय मतदाताओं का अपना संसद

जनसभा

जनसभा ही क्यों ?

जब दो बिभिन्न विचारधारा की राजनीतिक पार्टी गठबन्धन कर सरकार बना सकती हैं।

तो फिर मतदाता भी भी ऐसा क्यों नहीं कर सकता ?

करके देखें ! ऐसा करने से अच्छे जनप्रतिनिधि को भी अवसर मिलेगा ! मुठितन्त्र वाली सरकार से जनप्रतिनिधि आजाद होगा ! जनप्रतिनिधि मुठितन्त्र के लिए नही लोकतंत्र के लिए होगा ! तब बदलेगा भारत

अब भारतीय मतदाता हारेगा नही, कियोंकि अपने जनसभा संसद में बैठकर अपनी और दूसरे का विचारधारा बदलेगा, फिर एक विचारधारा बनाएगा

वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था और जनसभा राजनीतिक व्यवस्था में अंतर

वर्तमान व्यवस्था

- किसी विशेष राजनितिक पार्टी या समर्थक के रूप में मतदाता को संगठित किया जाता है। जिस कारण मतदाता को अपना बेहतर और अनुभवी जन प्रतिनिधि के रूप में चुनने का विकल्प नही रहता इसीलिये लोकतंत्र लोकतंत्र न रहकर मुट्ठितंत्र बन जाता है।
- अधिकतर मतदाता अपना मत का अधिकार किसी विशेष पार्टी या राजनितिक के कार्यकर्ता या समर्थक के रूप में करता है जिस कारण अपने प्रतिनिधि की छवि या अनुभव महत्व नही रखता।
- भारतीय लोकतंत्र में जनता राजा है पर आज जनता नहीं कुछ मुट्ठी भर लोग राज कर रहे हैं।
- मुट्ठी भर लोग राज करने से जनता द्वारा चुने प्रतिनिधि का अधिकार कम हुआ।
- जनप्रतिनधि बनने के इच्छुक चुनाव के समय ही अपनी कुशलता केवल प्रचार के माध्यम से करता है। जिसमें अधिक रुपया खर्चा करना पड़ता है।
- राजनीति में धन-बल का प्रयोग ज्यादा होता है, जिससे विकास और एक समान मूल अधिकार में बाधा उत्पन होती है।

जनसभा व्यवस्था

- मतदाता मतदाता के रूप में संगठित रहेगा इसीलिये मतदाता को अपना बेहतर और अनुभवी जन प्रतिनिधि के रूप में चुनने का विकल्प रहेगा तब लोकतंत्र मुट्ठीतंत्र न बनकर लोकतंत्र रहेगा।
- अधिकतर मतदाता अपना मत का अधिकार अपने प्रतिनिधि की छवि या अनुभव के आधार पर मत का प्रयोग करेगा।
- भारतीय लोकतंत्र का जो सपना है मुट्ठी भर लोग राज नहीं आम जनता राज करे यह सपना साकार होगा।
- आम जनता का राज होने से जनता द्वारा चुने प्रतिनिधि का अधिकार बढ़ेगा।
- जनप्रतिनिधि बनने के इच्छुक को अपनी कुशलता रुपया या प्रचार के माध्यम से नही जनता की अधिक समय सेवा कर दिखाने का अवसर मिलेगा।
- राजनीति में धन-बल का प्रयोग कम होगा जिससे सभी का विकास और एक समान मूल अधिकार सबको मिलेगा।

करके देखें मुठितन्त्र से आजाद होगा हमारा जनप्रतिनिधि फिर भारत बदलेगा

आज ही शब्दवाणी समाचार के स्थाई पाठक बनकर भारतीय मतदाता का अपना संसद जनसभा के सदस्य बनें

शब्दवाणी समाचार विज्ञापन नहीं पाठकों को प्रमुख मानता है इसलिए औरों से अलग है

आज ही शब्दवाणी समाचार (हिंदी दैनिक) के स्थाई पाठक बनें, मात्र 300 रूपये मासिक पर

सम्मान के साथ मिलेगा बहुत कुछ, लेकर देखें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्कर करें

RNI. NO.DELHIN/2003/09049
हिन्दी दैनिक
शब्दवाणी समाचार
Website : Shabdawanisamachar.page
(नई सोच, नई उम्मीद, बेहतर भविष्य, बेहतर भारत)

जिसे कभी गोद में खिलाया, अब उसी के खिलाफ फाइनल खेलेंगे मेसी

19 साल पुरानी तस्वीर फिर वायरल, स्पेन के स्टार लमीन यामाल निकले मेसी की गोद वाले बच्चे

● नई दिल्ली / (एजेंसी)

फुटबॉल की दुनिया में कुछ तस्वीरें समय के साथ इतिहास बन जाती हैं। ऐसी ही एक तस्वीर इन दिनों सोशल मीडिया पर फिर चर्चा में है, जिसमें अर्जेंटीना के महान फुटबॉलर लियोनेल मेसी अपनी गोद में एक मासूम बच्चे को लिए नजर आ रहे हैं।

दिलचस्प बात यह है कि वही बच्चा आज स्पेन का युवा स्टार लमीन यामाल है और अब दोनों विश्व फुटबॉल के सबसे बड़े मंच पर एक-दूसरे के खिलाफ उतरने जा रहे हैं।

फाइनल मुकाबले में अर्जेंटीना और स्पेन आमने-सामने होंगे। एक ओर मेसी अपनी टीम को लगातार दूसरा और कुल चौथा विश्व खिताब दिलाने की कोशिश करेंगे, तो दूसरी ओर स्पेन दूसरी बार विश्व चैंपियन बनने के इरादे से मैदान में उतरेगा। मुकाबले से पहले 2007 की यह तस्वीर सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही है।

यूनिसेफ के फोटोशूट में हुई थी पहली मुलाकात

यह तस्वीर वर्ष 2007 में बार्सिलोना के कैंप नोउ स्टेडियम में यूनिसेफ के चैरिटी कैलेंडर के लिए आयोजित फोटोशूट के दौरान ली गई थी। उस समय 20 वर्षीय मेसी बार्सिलोना के उभरते हुए सितारे थे। फोटोशूट के लिए एक छोटे बच्चे को प्लास्टिक के टब में बैठाया गया और मेसी से उसके साथ तस्वीरें खिंचवाई गईं। यही बच्चा आगे चलकर स्पेन का स्टार फुटबॉलर लमीन यामाल बना।

लॉटरी ने कराई थी मुलाकात

दरअसल, यामाल के माता-पिता ने यूनिसेफ की एक रैफल में हिस्सा लिया था। विजेता बनने पर उन्हें बार्सिलोना के खिलाड़ी के साथ फोटोशूट का अवसर मिला और किस्मत ने उनकी मुलाकात मेसी से करा दी। इस फोटोशूट को एसोसिएटेड प्रेस (एपी) के फोटोग्राफर जोआन मॉनफोर्ट ने कैमरे में कैद किया था। उन्होंने बताया कि मेसी बेहद शर्मीले स्वभाव के थे और शुरुआत में उन्हें यह भी समझ नहीं आ रहा था कि छोटे बच्चे को गोद में कैसे उठाया जाए।

2024 में फिर सामने आई तस्वीर

यह तस्वीर वर्षों तक सार्वजनिक चर्चा से दूर रही। वर्ष 2024 में यामाल के पिता मुनिर नस्राउई ने इसे इंस्टाग्राम पर साझा करते हुए लिखा- The Beginning of Two Legends यानी दो दिग्गजों की शुरुआत। इसके बाद यह तस्वीर पूरी दुनिया में वायरल हो गई। फोटोग्राफर मॉनफोर्ट ने भी स्वीकार किया कि उन्हें लंबे समय तक यह पता ही नहीं था कि तस्वीर में दिख रहा बच्चा आगे चलकर लमीन यामाल बनेगा। जब उन्हें इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने इसे अपने करियर का बेहद खास पल बताया।

अब आमने-सामने होंगे दोनों सितारे

महज 19 साल की उम्र में लमीन यामाल विश्व फुटबॉल के सबसे चर्चित खिलाड़ियों में शामिल हो चुके हैं। वहीं मेसी अपने शानदार करियर में एक और विश्व खिताब जोड़ने के लक्ष्य के साथ मैदान पर उतरेंगे। करीब दो दशक पहले एक तस्वीर में साथ नजर आए मेसी और यामाल अब फुटबॉल के सबसे बड़े मुकाबले में प्रतिद्वंद्वी होंगे। यही वजह है कि 2007 की वह तस्वीर आज सिर्फ एक यादगार फोटो नहीं, बल्कि विश्व फुटबॉल की दो पीढ़ियों को जोड़ने वाली ऐतिहासिक कहानी बन चुकी है।

▶ सुपरस्टार मेसी के दो असिस्ट से आखिरी 7 मिनट में पलटा मैच

इंग्लैंड को रौंदकर अर्जेंटीना फाइनल में, अब स्पेन से होगा फीफा वर्ल्डकप का महामुकाबला

19 जुलाई को ट्रॉफी के लिए होगी कांटे की जंग

● अटलांटा / (एजेंसी)

डिफेंडिंग चैंपियन अर्जेंटीना ने फीफा वर्ल्ड कप 2026 के दूसरे सेमीफाइनल में इंग्लैंड को 2-1 से हराकर लगातार दूसरी बार फाइनल में जगह बना ली। लियोनेल मेसी के दो शानदार असिस्ट की बदौलत अर्जेंटीना ने आखिरी सात मिनट में मैच का रुख पलट दिया। अब 19 जुलाई को उसका मुकाबला स्पेन से होगा।

इंग्लैंड ने 55वें मिनट में एंथनी गॉर्डन के गोल से बढ़त बनाई और 85वें मिनट तक 1-0 से आगे रहा। इसके बाद मेसी ने पहले एंजो फर्नांडीज को गोल का मौका बनाया, जिन्होंने 25 गज से शानदार शॉट लगाकर स्कोर 1-1 कर दिया। इंजरी टाइम के दूसरे मिनट में मेसी के सटीक क्रॉस पर सब्स्टीट्यूट लाउतारो मार्टिनेज ने हेडर से विजयी गोल दाग दिया।

अर्जेंटीना लगातार दूसरी व कुल सातवीं बार फाइनल में

अर्जेंटीना का यह सातवां विश्व कप फाइनल होगा। टीम इससे पहले 1930, 1978, 1986, 1990, 2014 और 2022 में फाइनल खेल चुकी है। उसने 1978, 1986 और 2022 में खिताब जीता था। अब उसके पास लगातार दूसरी बार और कुल चौथा विश्व कप जीतने का अवसर है।

...और मेसी ने पलट दी बाजी

दूसरे हाफ में अर्जेंटीना ने आक्रामक शुरुआत की, लेकिन 55वें मिनट में एंथनी गॉर्डन ने इंग्लैंड को बढ़त दिला दी। इसके बाद अर्जेंटीना ने लगातार दबाव बनाया और मेसी के दो निर्णायक असिस्ट की बदौलत आखिरी सात मिनट में दो गोल कर मुकाबला अपने नाम कर लिया।

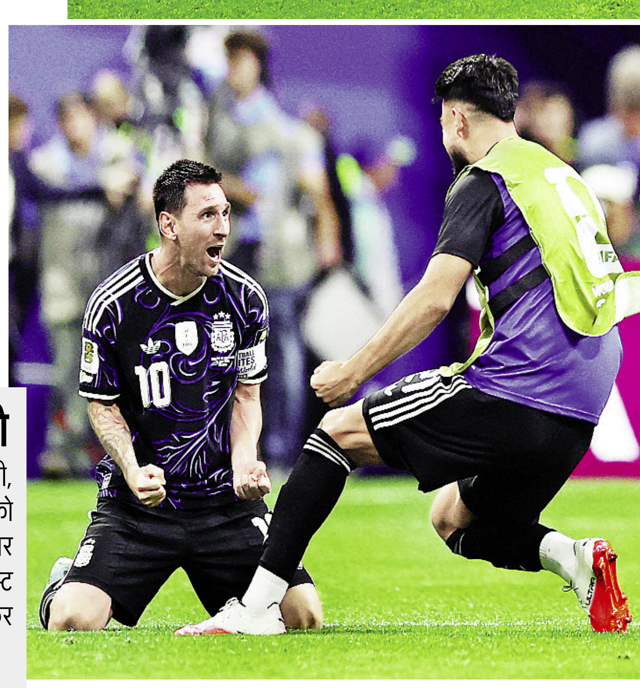

पहले हाफ में फुटबॉल से ज्यादा संघर्ष

मैच की शुरुआत से ही दोनों टीमों के खिलाड़ियों के बीच आक्रामक मुकाबला देखने को मिला। तीसरे मिनट में ही टैकल के बाद खिलाड़ियों के बीच तीखी बहस हुई। पहले हाफ में कई फाउल हुए और रेफरी इस्माइल एलफाथ को बार-बार हस्तक्षेप करना पड़ा। इंग्लैंड को 33वें मिनट में पहला बड़ा मौका मिला, जबकि अर्जेंटीना की ओर से एंजो फर्नांडीज का प्रयास 38वें मिनट में गोलपोस्ट के ऊपर चला गया।

मैच से जुड़े रोचक तथ्य...

- अर्जेंटीना लगातार दूसरी बार और कुल सातवीं बार विश्व कप फाइनल में पहुंचा।
- कोच लियोनेल स्कालोनी लगातार दो विश्व कप फाइनल में पहुंचने वाले इतिहास के सातवें कोच बने।
- अर्जेंटीना ने सभी प्रतियोगिताओं में लगातार 14वीं जीत दर्ज की।
- टीम ने मौजूदा विश्व कप में 19 गोल कर एक संस्करण में सर्वाधिक गोल करने का अपना नया रिकॉर्ड बनाया।
- इंग्लैंड के हैरी केन ने राष्ट्रीय टीम के लिए 121वां मैच खेलकर वेन रूनी को पीछे छोड़ा और इंग्लैंड के सबसे अधिक मैच खेलने वाले आउटफील्ड खिलाड़ी बने।

मैच के बाद दोनों देशों के बीच तनाव

ब्रिटेन ने की अर्जेंटीना में सैन्य घुसपैठ

नई दिल्ली, आरएनएन। 2026 फीफा वर्ल्ड कप सेमीफाइनल में इंग्लैंड को 2-1 से हराने के कुछ घंटों बाद अर्जेंटीना और ब्रिटेन के बीच नया विवाद खड़ा हो गया। अर्जेंटीना ने ब्रिटिश युद्धपोत एचएमएस मेडवे पर अपनी समुद्री सीमा में अवैध घुसपैठ का आरोप लगाया, जबकि ब्रिटेन ने दावा किया कि इस यात्रा की जानकारी पहले ही दे दी गई थी। मैच के बाद अर्जेंटीना के खिलाड़ियों ने फॉकलैंड (माल्विनास) द्वीप पर अपना दावा जताते हुए बैनर भी लहराया, जिस पर ब्रिटेन ने आपत्ति जताई और फीफा से जांच की मांग की। दोनों देशों ने एक-दूसरे के दावों को खारिज करते हुए अपने-अपने रुख पर कायम रहने की बात कही।

जीत के बाद माल्विनास बैनर पर विवाद

जीत के बाद अर्जेंटीना के खिलाड़ियों ने मैदान पर Las Malvinas son Argentinas (माल्विनास/फॉकलैंड अर्जेंटीना का है) लिखा बैनर लहराया। इसके बाद इंग्लैंड और अर्जेंटीना के समर्थकों के बीच विवाद और नोकझोंक की स्थिति बन गई। फॉकलैंड द्वीप (अर्जेंटीना में माल्विनास) दक्षिण अटलांटिक महासागर में स्थित है। इस पर ब्रिटेन और अर्जेंटीना दोनों अपना दावा करते हैं। 1982 में दोनों देशों के बीच 74 दिन तक युद्ध हुआ था, जिसमें अंततः ब्रिटेन ने द्वीप पर दोबारा नियंत्रण स्थापित कर लिया था।

राजधानी (न्यू बॉम्बे)

दिन	रात
467 = 7	379 = 9
177 = 5	136 = 0

शुभांक

दिन	रात
680 = 4	115 = 7
258 = 5	138 = 2

भाग्यांक

1 3 6 8

www.kalyangame.com

इंग्लैंड ने भारत को चार विकेट से हराया, सीरीज में 1-1 की बराबरी

कार्डिफ (एजेंसी)। कार्डिफ में खेले गए दूसरे वनडे में इंग्लैंड ने भारत को 4 विकेट से हराकर तीन मैचों की सीरीज 1-1 से बराबर कर ली। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 44 ओवर में सभी विकेट खोकर 233 रन बनाए।

श्रेयस अय्यर (66) और विराट कोहली (65) ने अर्धशतक जड़े। 234 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए इंग्लैंड की शुरुआत खराब रही, लेकिन जो रूट ने नाबाद 99 रन की शानदार पारी खेलकर टीम को 44.1 ओवर में 235/6 तक पहुंचा दिया। विल जैक्स ने 30 और सैम करन ने 26 रन का योगदान दिया।

भारत की ओर से गुरनूर बरार ने 2 विकेट लिए, जबकि जसप्रीत बुमराह, प्रसिद्ध कृष्णा, शिवम दुबे और अक्षर पटेल को 1-1 विकेट मिला। इंग्लैंड के लिए जोफ्रा आर्चर और गस एटकिंसन ने 3-3 विकेट लेकर भारत को कम स्कोर पर समेटने में अहम भूमिका निभाई।

लॉर्ड्स मैच हो सकता है रोहित शर्मा का अंतिम वनडे

इंग्लैंड के खिलाफ लॉर्ड्स में 19 जुलाई को खेला जाने वाला तीसरा वनडे रोहित शर्मा का आखिरी इंटरनेशनल मैच हो सकता है। रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि बीसीसीआई की चयन समिति 2027 वनडे वर्ल्ड कप के लिए युवा खिलाड़ियों पर भरोसा जताना चाहती है और रोहित अब भविष्य की योजनाओं का हिस्सा नहीं हैं। बताया जा रहा है कि यशस्वी जायसवाल जैसे खिलाड़ियों को लगातार मौके देने की तैयारी है। हालांकि, रोहित के संन्यास का फैसला पूरी तरह उन्हीं पर छोड़ दिया गया है। रोहित हाल ही में टेस्ट और टी20 इंटरनेशनल से संन्यास ले चुके हैं और फिलहाल सिर्फ वनडे खेल रहे हैं। उनकी हालिया फॉर्म भी उम्मीद के मुताबिक नहीं रही है। दूसरी ओर, रिपोर्ट्स के अनुसार टीम मैनेजमेंट विराट कोहली को 2027 वर्ल्ड कप प्लान का हिस्सा मान रहा है। अगर यह दावा सही साबित होता है, तो लॉर्ड्स में भारतीय क्रिकेट एक महान कप्तान और सलामी बल्लेबाज के शानदार करियर को विदाई देता नजर आ सकता है।

537 रन, 51 छक्के टी20 इतिहास का सबसे बड़ा रन चेज

● नई दिल्ली / (एजेंसी)

मेजर लीग क्रिकेट 2026 के एलिमिनेटर में टी20 इतिहास का सबसे बड़ा सफल रन चेज देखने को मिला। ऑकलैंड में दोनों टीमों ने कुल मिलाकर 537 रन बनाए। इस मैच में कुल 51 छक्के और 3 शतक लगे। एमआई न्यूयॉर्क के 266 रन के जवाब में वॉशिंगटन फ्रीडम ने 18.4 ओवर में 4 विकेट पर 270 रन बनाकर 6 विकेट से ऐतिहासिक जीत दर्ज की। निकोलस पूरन ने 33 गेंदों में 106 रन की तूफानी पारी खेली, जबकि कीरोन पोलार्ड ने 64 रन बनाते हुए टी20 में अपने 1000 छक्के पूरे किए। 10 रन पर दो विकेट गिरने के बाद कप्तान स्टीव स्मिथ (110* रन) और एंड्रीस गॉस (132 रन) ने तीसरे विकेट के लिए 241 रन की रिकॉर्ड साझेदारी कर मैच पलट दिया। गॉस एमएलसी में शतक लगाने वाले पहले अमेरिकी बल्लेबाज बने। यह पुरुष टी20 इतिहास का पहला मुकाबला रहा, जिसमें तीन बल्लेबाजों ने शतक लगाए। वहीं, पूरन ने टी20 में 11 हजार रन भी पूरे कर लिए और यह उपलब्धि हासिल करने वाले दुनिया के तीसरे बल्लेबाज बने।

पहली बार मैच में लगे 3 शतक

लॉर्ड्स क्रांति का खेल मंत्री सारंग ने किया सम्मान...

● भोपाल / (एजेंसी)

सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने टीटी नगर स्टेडियम में भारतीय महिला क्रिकेट टीम की तेज गेंदबाज क्रांति गौड़ का सम्मान किया। उन्होंने इंग्लैंड के ऐतिहासिक लॉर्ड्स क्रिकेट ग्राउंड पर शानदार प्रदर्शन के लिए उन्हें बधाई देते हुए कहा कि क्रांति ने मध्यप्रदेश और देश का गौरव बढ़ाया है।

सारंग ने कहा कि क्रांति की उपलब्धि प्रदेश की बेटियों और युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार खेल प्रतिभाओं को बेहतर सुविधाएं और अवसर उपलब्ध करा रही है।

इस मौके पर क्रांति गौड़ ने कहा कि लॉर्ड्स में भारत की जीत का हिस्सा बनना उनके जीवन का सबसे यादगार पल है। लॉर्ड्स के ऑनर्स बोर्ड पर अपना नाम दर्ज होना हर क्रिकेटर का सपना होता है और पहली भारतीय महिला क्रिकेटर के रूप में यह उपलब्धि हासिल करना उनके लिए गर्व की बात है।

अग्निवीर भर्ती रैली की सारंग ने की समीक्षा

● भोपाल / (एजेंसी)

खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने 28 जुलाई से 8 अगस्त तक नाथू बरखेड़ा अंतर्राष्ट्रीय स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में होने वाली अग्निवीर सेना भर्ती रैली की तैयारियों को लेकर उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। उन्होंने सेना भर्ती कार्यालय, जिला प्रशासन और संबंधित विभागों को सभी व्यवस्थाएं समय-सीमा में पूरी करने के निर्देश दिए। सारंग ने कहा भर्ती रैली प्रदेश के हजारों युवाओं के लिए भारतीय सेना में शामिल होकर राष्ट्रसेवा का सुनहरा अवसर है। उन्होंने सुरक्षा, यातायात, पेयजल, चिकित्सा, स्वच्छता, बिजली, आवास और अन्य मूलभूत सुविधाओं की बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बैठक में निर्णय लिया गया कि भर्ती स्थल पर सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी, ताकि अभ्यर्थियों को सुरक्षित व सुविधाजनक वातावरण मिल सके। यह भर्ती रैली मध्यप्रदेश के 15 जिलों के साथ छत्तीसगढ़ के अभ्यर्थियों के लिए भी आयोजित की जाएगी।

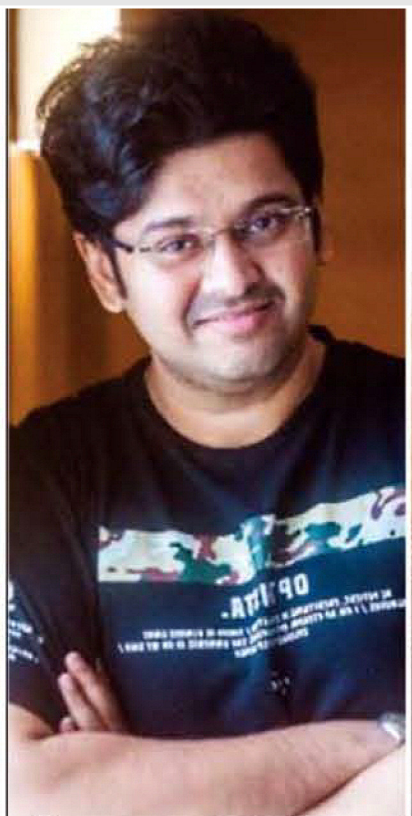

मिलाप जावेरी ने अपनी अगली फिल्म में आदित्य रॉय कपूर को क्यों चुना

मिलाप जावेरी अपनी अगली फिल्म को लेकर सुर्खियों में हैं। इसमें वे आदित्य रॉय कपूर के साथ काम कर रहे हैं। यह एक्शन से भरपूर एक म्यूजिकल रोमांटिक ड्रामा फिल्म होगी। मिलाप की इस फिल्म में आदित्य रॉय कपूर लीड रोल निभाने वाले हैं। फिल्म में आदित्य रॉय कपूर की कास्टिंग पर निर्देशक ने हाल ही में बात की।

इन फिल्मों से प्रेरित होगी अगली फिल्म

'सत्यमेव जयते' और 'मरजावां' जैसी एक्शन-एंटरटेनर फिल्में बनाने के लिए मशहूर मिलाप जावेरी ने बताया कि इस फिल्म के लिए आदित्य रॉय कपूर उनकी पहली पसंद थे। निर्देशक ने बॉम्बे टाइम्स से बात करते हुए कहा कि यह फिल्म 'आशिकी 2' और 'एक दीवाने की दीवानियत' जैसी फिल्मों के इमोशनल स्पेस से प्रेरित है, लेकिन साथ ही इसकी अपनी एक अलग पहचान भी होगी। मिलाप जावेरी का कहना है, 'यह फिल्म अपने आप में खास है। यह 'एक दीवाने की दीवानियत' और 'आशिकी 2' जैसी फिल्मों के जेनर की है, लेकिन इसकी अपनी खासियत है। इस बार मैं आम दर्शकों और खास दर्शकों, दोनों तक पहुंचना चाहता हूं यानी सिंगल स्क्रीन और मल्टीप्लेक्स, दोनों जगह'। आदित्य फिल्म के लिए पहली पसंद क्यों थे, यह बताते हुए मिलाप ने कहा, 'आदि मेरी पसंद इसलिए थे, क्योंकि 'आशिकी 2' और 'मलंग' से साबित हो चुका है कि आम दर्शकों और महिला दर्शकों के साथ उनका जबर्दस्त जुड़ाव है। वह बेहतरीन एक्टर हैं। हैंडसम हैं। एक्शन के लिए उनकी फिजिक शानदार है। म्यूजिकल फिल्मों में वह बहुत अच्छे लगते हैं'।

क्या हर्षवर्धन राणे के साथ नहीं करेंगे काम?

मिलाप ने हर्षवर्धन राणे की 'एक दीवाने की दीवानियत' का निर्देशन किया है। उन्होंने उन अटकलों को भी खारिज कर दिया कि वे और हर्षवर्धन दोबारा साथ काम नहीं करेंगे। मिलाप ने कहा, 'मैं जल्द ही हर्षवर्धन राणे के साथ फिर से काम करूंगा। मैं उन्हें पसंद करता हूं और वे मेरे दोस्त हैं। अच्छी बात यह है कि हर्ष के पास 'फोर्स 3' और 'सिला' जैसे कई अच्छे प्रोजेक्ट्स हैं और हम जल्द ही साथ में एक फिल्म जरूर करेंगे'।

क्वीन 2 में नई सोच के साथ लौटेंगी कंगना रनौत

कंगना रनौत की फिल्म 'क्वीन 2' का शूटिंग शेड्यूल पूरा हो चुका है। फिल्म अब पोस्ट-प्रोडक्शन फेज में एंट्री कर चुकी है। शुरुआती जानकारी के अनुसार यह फिल्म 2014 में आई 'क्वीन' की कहानी को आगे नहीं बढ़ाती, बल्कि उसी विचारधारा को एक नए जीवन परिदृश्य में पेश करती है। इस बार कहानी का केंद्र किसी विदेशी यात्रा या आत्म-खोज की शुरुआत नहीं होगा, बल्कि शादीशुदा जीवन, जिम्मेदारियों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाने के संघर्ष पर होगा। फिल्म से जुड़े सूत्रों के मुताबिक, इस बार कहानी पूरी तरह मुंबई में ही घटित होती है और इसकी लगभग 100 प्रतिशत शूटिंग भी मुंबई के विभिन्न आउटडोर और रियल लोकेशंस पर की गई है।

पहली 'क्वीन' से विचारधारा जुड़ी है, पर कहानी नहीं

सूत्रों का कहना है कि 'क्वीन 2' को सीधे तौर पर पहली फिल्म का सीक्वल नहीं कहा जा सकता। कहानी पहले भाग की घटनाओं को आगे नहीं बढ़ाती और न ही वही किरदार उसी यात्रा पर आगे बढ़ते दिखाई देंगे। हालांकि फिल्म में पहले पार्ट का रेफरेंस या कुछ इमोशनल हिंट देखने को मिल सकते हैं, जिनसे यह समझाया जा सकता है कि एक स्वतंत्र सोच वाली युवती समय के साथ वैवाहिक जीवन में किस तरह प्रवेश करती है और उसके बाद उसके जीवन में क्या बदलाव आते हैं। यानी फिल्म का संबंध कहानी से अधिक उसके मूल विचार व्यक्तिगत आजादी और आत्मसम्मान बताया जा रहा है।
पहली फिल्म में यूरोप की यात्रा कहानी का अहम हिस्सा थी। वहीं 'क्वीन 2' में पूरी कहानी मुंबई की पृष्ठभूमि पर आधारित है। सूत्रों ये भी बताते हैं कि फिल्म का हर प्रमुख शेड्यूल मुंबई में ही शूट किया गया है। निर्माताओं ने स्टूडियो सेट की बजाय रियल लोकेशंस का अधिक उपयोग किया ताकि शहर की जीवनशैली और मध्यवर्गीय फैमिली के माहौल को अधिक रियलिस्टिक तरीके से पेश किया जा सके। फिल्म में आउटडोर लोकेशंस की संख्या भी काफी अधिक बताई जा रही है।

'तनु वेड्स...' से अलग कोशिश

वैवाहिक जीवन पर बेस्ड कंगना पहले आर. माधवन के साथ 'तनु वेड्स मनु' भी कर चुकी हैं। सूत्रों का कहना है कि 'क्वीन 2' का दृष्टिकोण उससे अलग है। जहां कई फिल्में पति-पत्नी के रिश्तों में टकराव या रोमांटिक उतार-चढ़ाव पर केंद्रित रहती हैं, वहीं 'क्वीन 2' एक महिला की शादी के बाद के जीवन को नई तरह से पेश करने वाली है। कंगना का अंदाज भी इसमें कुछ अलग होगा।

'क्वीननेस' का एक नया अर्थ भी समझाएगी फिल्म

फिल्म का सबसे महत्वपूर्ण विचार "क्वीननेस' है। यहां क्वीन होने का अर्थ किसी शाही जीवन से नहीं, बल्कि व्यक्ति की अपनी स्वतंत्र पहचान और आत्मविश्वास से जोड़ा गया है। फिल्म यह संदेश देने की कोशिश करती है कि विवाह जीवन का महत्वपूर्ण पड़ाव है लेकिन उसके बाद किसी व्यक्ति की इच्छाएं, करियर, सपने या व्यक्तित्व खत्म नहीं हो जाते। कहानी इस बात पर भी केंद्रित है कि जिम्मेदारियों के बीच भी व्यक्ति अपने भीतर की स्वतंत्र सोच और आत्मसम्मान को कैसे बनाए रख सकता है।

कंगना के अपोजिट दिखेंगे मराठी एक्टर

फिल्म में कंगना के अपोजिट एक मराठी एक्टर को लिया गया है। एक्टर अपेक्षाकृत वरिष्ठ है और कहानी में पति-पत्नी के बीच उम्र का अंतर भी दिखाया गया है। फिल्म पारंपरिक रोमांटिक जोड़ी के बजाय एक अलग तरह के वैवाहिक समीकरण को सामने लाने की कोशिश करती है।

जॉन अब्राहम ने राकेश मारिया के किरदार को निभाना बताया चुनौतीपूर्ण

पिछले काफी वक्त से जॉन अब्राहम रोहित शेट्टी के निर्देशन में बनने वाली मुंबई के पूर्व कमिश्नर राकेश मारिया की बायोपिक को लेकर चर्चाओं में हैं। हाल ही में जॉन अब्राहम ने राकेश मारिया का किरदार निभाने और असल जिंदगी के लोगों को पर्दे पर उतारने की जिम्मेदारी के बारे में बात की। साथ ही उनका मानना है कि सिनेमा का काम सिर्फ मनोरंजन करना नहीं है। इसे फिल्म खत्म होने के बाद भी दर्शकों के जेहन में बने रहना चाहिए।

फिल्म ऐसी हो जो खत्म होने के बाद भी आपके अंदर रह जाए

टाइम्स ऑफ इंडिया के साथ बातचीत के दौरान जॉन ने कहा कि दमदार कहानी कहने का तरीका ऐसा होना चाहिए, जो मनोरंजन करे, सोचने पर मजबूर करे और फिल्म खत्म होने के बाद भी दर्शकों के मन में बसी रहे। उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि हर कहानी आपको कुछ न कुछ देकर जानी चाहिए। मनोरंजन जरूरी है, सिनेमा को हमेशा आपको जोड़े रखना चाहिए। लेकिन अगर कोई फिल्म थिएटर से निकलने या उसे देखने के बाद भी आपके साथ बनी रहती है, तो यह और भी अच्छी बात है। मैं प्रोजेक्ट्स इसलिए नहीं चुन रहा हूं कि वे कोई खास बात कहना चाहते हैं।
मैं उन्हें इसलिए चुनता हूं क्योंकि मुझे लगता है कि वे ईमानदार हैं, अच्छी तरह से कही गई हैं और भावनात्मक रूप से जोड़ने वाली हैं। अगर उनसे बातचीत शुरू होती है, तो यह एक बोनस है। इतने साल में एक प्रोड्यूसर के तौर पर मुझे एहसास हुआ है कि मैं ऐसी कहानी को सामने लाने में मदद कर सकता हूं जिसे देखा जाना चाहिए। आखिर में, कहानी ही सबसे अहम होती है। अगर वह मुझे प्रभावित करती है, तो मैं उसे सपोर्ट करूंगा।

राकेश मारिया का किरदार निभाने के लिए उत्सुक हूं

मुंबई के पूर्व कमिश्नर राकेश मारिया की बायोपिक को लेकर भी जॉन अब्राहम ने बात की। उन्होंने कहा कि राकेश मारिया का करियर हमारे देश के इतिहास की कुछ अहम घटनाओं से जुड़ा रहा है, इसलिए उन्हें पर्दे पर उतारने में एक बड़ी जिम्मेदारी का एहसास होता है। जब आप किसी असली इंसान का किरदार निभाते हैं, तो मकसद उनकी नकल करना नहीं होता, बल्कि उनकी पब्लिक इमेज के पीछे छिपे असली इंसान को समझना होता है। इसका मतलब है रिसर्च में काफी समय बिताना, उनकी सोच को समझना, उन पर आए दबावों और उनके द्वारा लिए गए फैसलों को जानना। राकेश मारिया का किरदार निभाना एक चुनौती है और मैं इसे पूरी ईमानदारी से निभाने के लिए उत्साहित हूं।

ऋतिक रोशन ने पूरी की 'जेलर 2' में कैमियो की शूटिंग

रजनीकांत इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म 'जेलर 2' को लेकर चर्चा में हैं। इस फिल्म की अभी शूटिंग हो रही है। बताया जाता है कि बॉलीवुड स्टार ऋतिक रोशन इस फिल्म में कैमियो करने वाले हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक ऋतिक रोशन ने फिल्म में अपने कैमियो की शूटिंग पूरी कर ली है। एक्स पर ओम नाम के एक वैरिफाइड यूजर ने एक तस्वीर शेयर की है। इसमें रजनीकांत और ऋतिक रोशन एक साथ नजर आ रहे हैं। नेल्सन दिलीप कुमार ने 'जेलर 2' में ऋतिक रोशन के लिए शानदार किरदार तैयार किया है। उनका एक दमदार सीक्वेंस है। इसके बाद रजनीकांत के साथ एक सीन है। यह एक दमदार कैमियो है, जिसे दर्शकों से तारीफ बटोरने के लिए डिजाइन किया गया है। उनका कैमियो फिल्म के एक अहम मोड़ पर आता है और कहानी को आगे बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाता है। 'जेलर 2', रजनीकांत की ब्लॉकबस्टर एक्शन एंटरटेनर फिल्म 'जेलर' का सीक्वल है।

टॉक्सिक की ट्रोलिंग पर बोलीं हुमा

यश स्टारर फिल्म 'टॉक्सिक' का टीजर रिलीज होने के बाद सोशल मीडिया पर इसकी काफी चर्चा हो रही है। टीजर में दिखाए गए इंटीमेट सीन्स को लेकर कई यूजर्स ने फिल्म की आलोचना की और इसे जरूरत से ज्यादा बोल्ड बताया। कुछ लोगों ने सेंसर बोर्ड को लेकर भी अटकलें लगाई कि फिल्म के कई सीन काटे जा सकते हैं। इन प्रतिक्रियाओं के बीच फिल्म से जुड़ी एक्ट्रेस हुमा कुरैशी ने पहली बार अपनी चुप्पी तोड़ी है। एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा कि दर्शकों ने अभी फिल्म देखी ही नहीं है, इसलिए किसी निष्कर्ष पर पहुंचना जल्दबाजी होगी। हुमा कहती हैं... 'टॉक्सिक में जितनी भी लीड एक्ट्रेसेस हैं, सभी ने शानदार काम किया है। गीतू मोहनदास एक बेहतरीन फिल्ममेकर हैं।

इतनी बड़ी कास्ट बिना मजबूत कहानी के साथ नहीं आती...

उन्होंने नेशनल अवॉर्ड जीता है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उनके काम को पहचान मिली है। जब उन्होंने मुझे यह फिल्म ऑफर की, तो मैं इस बात को लेकर उत्साहित थी कि एक महिला निर्देशक इतनी बड़े स्तर की फिल्म कैसे पेश करेंगी। इतनी बड़ी स्टार कास्ट किसी मजबूत कहानी के बिना एक साथ नहीं आती। दर्शकों को थोड़ा धैर्य रखना चाहिए क्योंकि पूरी फिल्म देखने के बाद ही सही तस्वीर सामने आएगी। यह सभी को शॉक्ड कर देगी। यह फिल्म 26 अगस्त को दुनियाभर के थिएटर्स में रिलीज होगी।

जोखिम भरे स्टंट सीन क्यों नहीं करते पृथ्वीराज सुकुमारन? एक्टर ने बताई वजह

पृथ्वीराज सुकुमारन अपने एक्शन सीन खुद करने के लिए मशहूर हैं। मगर, अब वे हैरतअंगेज स्टंट करने के मामले में बेहद सावधानी बरतते हैं और इससे दूरी बनाकर रखते हैं। इसकी वजह साल 2023 का एक हादसा है। एक्टर ने हाल ही में इस बारे में बात की।

अभिनेता पृथ्वीराज सुकुमारन इन दिनों फिल्म 'आई, नोबडी' को लेकर सुर्खियों में हैं, जो 09 जुलाई को रिलीज हुई है। पृथ्वीराज ने हाल ही में एक्शन स्टंट को लेकर कहा कि साल 2023 में स्टंट के दौरान लगी चोट ने उन्हें फिल्म 'आई, नोबडी' में एक्शन सीन करने के उनके नजरिए को बदल दिया। उन्होंने बताया कि उस हादसे और सेट पर लगी एक और चोट ने उन्हें इसमें शामिल जोखिमों और जिम्मेदारियों की याद दिलाई।

हादसे ने बदल दिया पूरा तरीका

पृथ्वीराज सुकुमारन ने साल 2023 में हुए उस स्टंट हादसे के बारे में बात की है, जिसने एक्शन सीन करने के उनके तरीके को बदल दिया। एक्टर ने बताया कि उनके बाएं पैर में टाइटेनियम के तीन स्क्रू लगे हैं। एक्टर ने कहा कि इस चोट ने उन्हें एहसास कराया कि पल भर की एक दुर्घटना न सिर्फ उन पर, बल्कि पूरे फिल्म प्रोडक्शन पर असर डाल सकती है।

बाएं घुटने में लगी थी गंभीर चोट

अभिनेता ने अपनी क्राइम थ्रिलर 'आई, नोबडी' के प्रमोशन के दौरान हाल ही में 'द इंडियन एक्सप्रेस' से बात करते हुए कहा कि वे अपने एक्शन सीन खुद करने के लिए जाने जाते हैं, लेकिन अब वे खतरनाक स्टंट करने को लेकर बहुत ज्यादा सावधान हो गए हैं।
उस हादसे के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, 'मैं साल 2023 में एक और फिल्म की शूटिंग कर रहा था। मेरी पहचान है कि मैं अपने एक्शन सीन खुद करता हूं। एक स्टंट सीन करते समय मेरा एक्सीडेंट हो गया और मेरे बाएं घुटने में काफी गंभीर चोट आई। मुझे तीन सर्जरी करवानी पड़ीं और अब मेरे बाएं पैर में टाइटेनियम के तीन स्क्रू लगे हैं'।

सालभर के लिए रोकनी पड़ी फिल्म की शूटिंग

अभिनेता ने आगे कहा कि हादसे का असर सिर्फ उनकी सेहत पर नहीं पड़ा, बल्कि फिल्म पर भी हुआ। उन्होंने कहा, 'उस फिल्म का काम एक साल के लिए रोकना पड़ा था। बहुत सारा पैसा बर्बाद हुआ और कई लोगों को एक साल तक इंतजार करना पड़ा, इसलिए अब यह जिम्मेदारी मेरे दिमाग में रहती है'। पृथ्वीराज ने 'आई, नोबडी' की शूटिंग के दौरान हुए एक और हादसे को भी याद किया और कहा कि इससे एक्शन फिल्म बनाने में शामिल जोखिमों का पता चलता है। उनके मुताबिक, एक स्टंट करने वाले को गंभीर चोट लगी थी और उसकी गर्दन के पीछे 37 टांके लगाने पड़े थे।

'आई, नोबडी' पर भी हुआ हादसा

एक्टर ने कहा, 'सेट पर हमारे एक फाइटर को चोट लग गई और उनकी गर्दन के पीछे 37 टांके लगाने पड़े। ऐसी चीजें हो जाती हैं। इसीलिए मैं कह रहा हूं, सोचिए अगर वह शॉट मैं कर रहा होता और मेरे साथ ऐसा होता, तो मुझे छह महीने के लिए घर बैठना पड़ता'। इतनी गंभीर चोट के बावजूद पृथ्वीराज ने कहा कि उन्हें अभी भी एक्शन सीन की शूटिंग करना पसंद है। उन्होंने स्टंट कोऑर्डिनेटर यानिक बेन और उनकी टीम को असल लगने वाले एक्शन सीन डिजाइन करने का श्रेय दिया, जिसमें कलाकारों से काफी मेहनत करवाई गई और हर सीन को असली जैसा दिखाया गया।

मोहम्मद जोशी के लिय टाइम्स मास कम्युनिकेशन प्राइवेट लिमिटेड द्वारा पंजीकृत कार्यालय जे 85 सीमापुरी, दिल्ली से प्रकाशित इंकलाब भारत प्रेस जे एण्ड के दिलशाद गार्डन दिल्ली से मुद्रित संपादकीय कार्यालय समाचार भवन एफ-126 शाहिद नगर, चिकम्बरपुर, साहिबाबाद, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201006 ईमेल : shabdwanisamchaarw2003gmail.com www. shabdawanisamachar.page संपादक मोहम्मद जोशी ,सलाहकार संपादक : अशोक लालवानी

refresh MATTRESS
SLEEP HEALTHY. Wake beautiful.
HDFC BANK
We understand your world
Mega Exchange Offer
Limited time only
Zero Down Payment &
EMI Available on Selected Models
• Get Value upto ₹12000/- for Old Mattress
• Assured Gifts upto ₹12448/-
• Total Exchange Benifits ₹24448/-
BLOSSOM
refresh
Premium
PRISTINE
PRISTINE
PRISTINE
PRISTINE
Offer available on
1pc of 72" x 60" or 2pcs of 72" x 30"
and above
Hurry !!! Rush to your nearest dealer
Customer care no. : 18001209630